RNI No.: MPHIN/2018/77137

अज़ीम प्रेमजी यूनिवर्सिटी का प्रकाशन

पाठशाला

भीतर और बाहर

Azim Premji University

ISSN 2582-483X

अंक 23 | मार्च 2025 | तिमाही

पाठशाला
भीतर और बाहर
मार्च 2025 | अंक 23

सम्पादकीय टीम

- **प्रतिभा कटियार (मुख्य सम्पादक)**
  अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन
  आमवाला तरला, सहस्त्रधारा रोड
  देहरादून, उत्तराखण्ड – 248001
  pratibha.katiyar@azimpremjifoundation.org

- **शेफ़ाली त्रिपाठी मेहता (सह सम्पादक)**
  अज़ीम प्रेमजी यूनिवर्सिटी
  सर्वे नंबर 66, बुरुगुंटे विलेज
  बिक्कनाहल्ली मेन रोड, सरजापुरा
  बेंगलूरु, कर्नाटक – 562125
  shefali.mehta@apu.edu.in

- **प्रकाशन कार्यालय**
  अज़ीम प्रेमजी यूनिवर्सिटी
  सर्वे नंबर 66, बुरुगुंटे विलेज
  बिक्कनाहल्ली मेन रोड, सरजापुरा
  बेंगलूरु, कर्नाटक – 562125
  publications@apu.edu.in

- **गौतम पाण्डेय**
  अज़ीम प्रेमजी यूनिवर्सिटी
  भोपाल, मध्य प्रदेश
  gautam@azimpremjifoundation.org

- **सुनील कुमार साह**
  अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन
  रायपुर, छत्तीसगढ़
  sunil@azimpremjifoundation.org

- **जगमोहन सिंह कठैत**
  अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन
  देहरादून, उत्तराखण्ड
  jagmohan@azimpremjifoundation.org

- **दीपक कुमार राय**
  अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन
  जयपुर, राजस्थान
  deepak.rai@azimpremjifoundation.org

- **सिद्धार्थ कुमार जैन**
  अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन
  भोपाल, मध्य प्रदेश
  siddharth.jain@azimpremjifoundation.org

- **रजनी द्विवेदी**
  असम वैली स्कूल
  तेजपुर, असम
  rajni.dwivedi@azimpremjifoundation.org

- **कमलेश जोशी**
  अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन
  ऊधम सिंह नगर, उत्तराखण्ड
  kamlesh@azimpremjifoundation.org

- **राघवेंद्र हेर्ले**
  अज़ीम प्रेमजी यूनिवर्सिटी
  बेंगलूरु, कर्नाटक
  Raghavendra.herle@azimpremjifoundation.org

- **अनुवाद सम्पादक**
  मधुकर एस पुट्टी (कन्नड़)
  राजेश उत्साही (हिन्दी)
  शेफ़ाली त्रिपाठी मेहता (अँग्रेज़ी)
  अज़ीम प्रेमजी यूनिवर्सिटी, बेंगलूरु, कर्नाटक

- **प्रकाशन टीम**
  मीरा प्रभु
  शाहनाज़ बेगम
  लोकराम वी जी
  संबित महापात्र
  अज़ीम प्रेमजी यूनिवर्सिटी
  बेंगलूरु, कर्नाटक

- **डिज़ाइन**
  लेआउट – गणेश ग्राफिक्स
  भोपाल, मध्यप्रदेश

- **प्रिंटिंग**
  लक्ष्मी मुद्रणालय
  बेंगलूरु, कर्नाटक

पाठशाला भीतर और बाहर अज़ीम प्रेमजी यूनिवर्सिटी द्वारा स्कूली शिक्षा को केन्द्र में रखकर प्रकाशित होने वाली त्रैमासिक पत्रिका है। पत्रिका का उद्देश्य देश भर के पूर्व प्राथमिक, प्राथमिक व उच्च प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों तक अभ्यास-आधारित सामग्री पहुँचाकर उनका सहयोग करना है। यह एक मंच है *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, एनसीएफ़ एसई* और *एनसीएफ़ एफ़एस* के आलोक में शिक्षकों के अनुभवों, प्रभावी शिक्षण प्रक्रियाओं की साझेदारी का। *पाठशाला* मूलतः हिन्दी में, फिर अँग्रेज़ी और कन्नड़ में अनुवादित होकर प्रकाशित होती है।

सम्पादकीय

शिक्षा को प्रक्रिया और प्रतिफल के तौर पर देखने में कोई हर्ज़ नहीं है, लेकिन जब हम शिक्षा में उपलब्धि को देखते हैं तब इसे महज़ अंक या ग्रेड से नहीं आँका जा सकता है। इसमें शामिल है– बच्चों का उनकी क्षमताओं व रुचि के मुताबिक़ सीखना। ऐसा सीखना, जिसमें सामाजिक व मानवीय मूल्य पिरोए हुए हों, जिसके तरीक़े उत्कृष्ट हों, और जो सिखाया जा रहा है वह भी उत्कृष्ट हो। इस बात को शिक्षकों, अभिभावकों व समाज को भी समझना है कि शिक्षा में सफल होने के क्या मायने हैं। और यह तय होता है शिक्षा के उन उद्देश्यों से जो संवैधानिक मूल्यों के साँचे में ढले हैं।

जाने-अनजाने आकलन की संवेदनशील और रचनात्मक प्रक्रिया परीक्षा, परिणाम, भय और होड़ में बदलने लगी है, यह चिन्ता का सबब है। आमतौर पर, मार्च में होने वाली वार्षिक परीक्षाओं के चलते इस बात पर विमर्श करने का यह सही समय है जब शिक्षक, विद्यार्थी और अभिभावक सभी इम्तिहानों और नतीजों के चक्रव्यूह में उलझ जाते हैं।

आकलन का उद्देश्य यह जानना है कि पूरे बरस में बच्चों ने उनकी दक्षता स्तर और सीखने के प्रतिफलों के सापेक्ष कितना कुछ सीखा, समझा, और कितना बाक़ी रह गया। होना तो यूँ था कि जो सीखा और समझा उसका उत्सव मनाया जाता, और जो सीखना बाक़ी रह गया उसकी तैयारी होती। हालाँकि कई स्कूलों में शिक्षकों के स्वैच्छिक प्रयासों के चलते ऐसा हो भी रहा है।

काफ़ी शिक्षक स्वप्रेरणा और बच्चों के प्रति अपने दायित्व बोध के चलते हमेशा कुछ नवाचार करते रहते हैं। उनके ज़ेहन में हर बच्चे की, सामाजिक, आर्थिक और भावनात्मक स्थितियों को समझते हुए, प्रगति का पत्र दर्ज रहता है जो हर दिन अपडेट होता रहता है। इसके आधार पर वह अपनी शिक्षण विधियाँ बनाते हैं, और उनमें बदलाव करते रहते हैं। कई राज्यों में, शिक्षा विभाग भी शिक्षकों की इस जिजीविषा को समझ रहे हैं, और उनके प्रयासों में शामिल होने लगे हैं। इन प्रयासों को, इस समझ को एक गहरी सामाजिक सोच के तौर पर विस्तार देने की ज़रूरत है ताकि सीखना आकलन के भय से बाधित न हो, और सीखने के आनन्द एवं रचनाशीलता पर आँच न आने पाए।

पाठशाला भीतर और बाहर के इस अंक में ऐसे ही कुछ ज़रूरी विमर्श और प्रक्रियाएँ शामिल की गई हैं। आप जानते ही हैं कि *पाठशाला* ज़मीनी अनुभवों से जुड़े आलेखों को शामिल करने वाली स्कूली शिक्षा पर केन्द्रित पत्रिका है, इसमें आपको शिक्षकों के अनुभव, कुछ शिक्षण योजनाएँ व प्रक्रियाएँ आदि पढ़ने को मिलेंगी। इसके अतिरिक्त, 'शिक्षकों की डायरी से', 'किताबों से दोस्ती', 'इनसे मिलिए', और 'आइए, करके देखें' जैसे स्थाई स्तम्भ भी मिलेंगे जिन्हें हमने पिछले अंक से शुरू किया है। और आपके पत्रों का विशेष स्तम्भ 'सम्पादक के नाम' तो है ही।

पिछले 22वें अंक, जो कि 'समावेशी शिक्षा विशेषांक' था, को आपने जिस अपनेपन से अपनाया, और अंक में समावेशित सामग्री की उपयोगिता का समर्थन किया उसके लिए हम आपके बहुत आभारी हैं। उम्मीद है, पत्रिका के आलेख और स्तम्भ कक्षा शिक्षण में, स्कूली प्रक्रियाओं में और शिक्षा को लेकर समझ को और बेहतर कर पाने में मदद कर रहे होंगे। आपके तमाम पत्र और मिलने वाली प्रतिक्रियाओं ने हमारा सम्बल बढ़ाया है। आपकी ज़रूरतों के मुताबिक़, उपयोगी सामग्री देने और शिक्षक साथियों के अनुभवों की साझेदारी के मंच के रूप में इस पत्रिका को निखारने में आप सबका सहयोग हमेशा रहा है, और आगे भी अपेक्षित है।

इस 23वें अंक को भी मार्च, अप्रैल और मई के दौरान स्कूलों की ज़रूरतों को ध्यान में रखकर सँजोने का प्रयास किया है। इस अंक में आपको कुछ लेख मिलेंगे जिनसे आकलन को कैसे देखा जाए, इसकी स्पष्टता मिलेगी। आकलन का उपयोग किस तरह शिक्षण प्रक्रियाओं में किया जाए, समर कैम्प किस तरह आनन्ददायक तरीक़े से बच्चों के सीखने के रूप में आयोजित हों, बच्चे जो वार्षिक परीक्षाओं के दौरान तय किए गए सीखने के प्रतिफलों से थोड़ा दूर रह गए हैं किस तरह उनके साथ अप्रैल और मई के महीनों में काम हो, क्या दृष्टिकोण हो, क्या योजना हो, आदि के बारे में कुछ अनुभव-आधारित आलेख भी इसमें शामिल हैं।

इसके अलावा, गणित, हिन्दी, विज्ञान, ईसीई पर भी अनुभव-आधारित लेख इस अंक में हैं। 'इनसे मिलिए' स्तम्भ के अन्तर्गत इस बार आप पढ़ेंगे कर्नाटक के एक शिक्षक विश्वनाथ गुंडीगेरे के कुछ अनुभव कि किस तरह उनके नवाचारों ने बच्चों के सीखने को सुगम बनाया। 'शिक्षकों की डायरी से' स्तम्भ में इस बार उत्तर प्रदेश, बिहार, राजस्थान और उत्तराखण्ड के कुछ शिक्षकों के कक्षा-कक्षीय अनुभव आपको ज़रूरी और उपयोगी लगेंगे। 'किताबों से दोस्ती' में इस बार दोस्ती करिएगा *गाँव का लड़का* और *कला से सीखना* से। *गाँव का लड़का* जहाँ एक कहानी की किताब है, वहीं *कला से सीखना* शिक्षण के दौरान अपनाई जाने वाली गतिविधियों के बारे में है। 'आइए, करके देखें' स्तम्भ में गतिविधियाँ इस बार भी ऐसी हैं जिन्हें आप अपनी कक्षा में कराएँगे तो आपको और बच्चों, दोनों को आनन्द आएगा, सीखना तो होगा ही। 'सम्पादक के नाम' स्तम्भ को आपकी चिट्ठियों के ज़रिए जो प्यार मिल रहा है उसके लिए हम आपके बहुत आभारी हैं।

आप जानते ही हैं कि बदले हुए स्वरूप में *पाठशाला भीतर और बाहर* अब अँग्रेज़ी और कन्नड़ भाषा में भी अनुवादित होकर प्रकाशित हो रही है। अब हम ग़ैर-हिन्दीभाषी साथियों के पास भी पहुँच पा रहे हैं। यानी, शिक्षकों के अनुभवों की साझेदारी का कैनवास बड़ा हो रहा है।

शिक्षा के क्षेत्र में ज़मीनी अनुभवों को सँजोने और साझा करने के प्रयास के लिए प्रतिबद्ध इस पत्रिका के लिए आपसे अनुरोध है कि अपने शिक्षण से जुड़े ज़मीनी अनुभवों पर आधारित आलेख, अंक के बारे में अपनी राय व सुझाव हमसे ज़रूर साझा करिए।

पढ़ते रहिए, जुड़े रहिए।

शुभकामनाओं सहित

प्रतिभा कटियार
मुख्य सम्पादक

अनुक्रम

सम्पादकीय

1. बेहतर सीखने की तैयारी के रूप में आकलन 5
   कैलाश चन्द्र काण्डपाल
2. उत्तर पुस्तिकाओं के अध्ययन से नए शैक्षिक सत्र की तैयारी 8
   जगमोहन सिंह कठैत
3. पिछली कक्षा की सीख से नई कक्षा की तैयारी 12
   शोभन सिंह नेगी
4. समर कैम्प का विद्यार्थियों के सीखने पर प्रभाव 16
   मुनीर
5. शिक्षक का नज़रिया : विद्यार्थी का मनोबल और सीखना 21
   राजू पटेल
6. कक्षा में रोल प्ले के माध्यम से सीखना 24
   आशा सिंह
7. विज्ञान में बच्चों की जिज्ञासा को बढ़ावा देना 28
   अमृता मसीह
8. गणित के प्रति बहु–संवेदी दृष्टिकोण 32
   सोनिया कुंडू

अनुक्रम

9. शुरुआती वर्षों में माता–पिता की भूमिका 36
अमृता मुरली

10. सभी बच्चों को मिलें सीखने के समान अवसर 40
छोटे लाल तँवर

स्थाई स्तम्भ

11. शिक्षकों की डायरी से 43
जय शेखर
मीनाक्षी गौड़
नंदिनी कुमारी
उपमा रानी

12. इनसे मिलिए – विश्वनाथ गुंडीगेरे 48
राघवेंद्र हेर्लें

13. किताबों से दोस्ती 51
अनीता ध्यानी
विजय रविकुमार

14. आइए, करके देखें 54

15. सम्पादक के नाम 56

* लेखों में व्यक्त विचार और दृष्टिकोण लेखकों के अपने हैं, उनसे अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन का सहमत होना आवश्यक नहीं है।
* पत्रिका में प्रकाशित सामग्री का उपयोग शैक्षणिक और ग़ैर-व्यावसायिक कार्यों के लिए किया जा सकता है। लेकिन इसके लिए लेखक एवं प्रकाशक से अनुमति लेना एवं स्रोत का उल्लेख अनिवार्य है।
* बच्चों की पहचान सुरक्षित रखने के लिए पत्रिका में उनके नाम बदल दिए गए हैं।

बेहतर सीखने की तैयारी के रूप में आकलन

कैलाश चन्द्र काण्डपाल

यह आम समझ है कि आकलन सीखने की प्रक्रिया में बाधा नहीं, बल्कि एक सहयोगी प्रक्रिया है जिसमें बच्चों के निरन्तर व नियमित आकलन से उनकी रोज़मर्रा की अधिगम प्रगति का जायज़ा लिया जाता है। आज के सन्दर्भ में आकलन की पूरी प्रक्रिया व समझ और शिक्षकों की चुनौतियों को कक्षा के स्तर पर गहनता से समझते हुए इसे क्रियान्वित करने की ज़रूरत है जिससे विद्यार्थियों के सीखने-सिखाने को बेहतर बनाने के अपेक्षित परिणाम हासिल किए जा सकें।

स्कूली शिक्षा के परिप्रेक्ष्य में आकलन पाठ्यचर्या का अभिन्न अंग है। इसका उद्देश्य यह समझना है कि सीखने के जिन प्रतिफलों के अनुरूप कक्षा की प्रक्रियाएँ चलीं, वह कितनी सुचारु रूप से चलीं, और उनका क्या प्रभाव रहा। असल में, आकलन का उद्देश्य बच्चों को फ़ेल या पास करने से काफ़ी आगे का है। मक़सद यह समझना है कि सीखने के जिन उद्देश्यों तक पहुँचने के लिए पाठ्यक्रम और पाठ्यचर्या का हाथ थामकर चले थे, वहाँ तक पहुँचे या नहीं। कितने बच्चे वहाँ पहुँचे, कितने बच्चे कितनी दूरी पर रुककर रह गए, और उनके गन्तव्य तक न पहुँच पाने के क्या कारण हैं, इन कारणों को समझना और उन्हें ध्यान में रखते हुए शिक्षण योजना में परिवर्तन करना ही आकलन का उद्देश्य है। आकलन की इस प्रक्रिया के भीतर जो रचनात्मकता और सकारात्मकता है, उसे समझना बेहद ज़रूरी है।

अब जबकि कक्षा 5 और 8 के लिए 'नो डिटेंशन पॉलिसी' को ख़त्म करने की बात हुई है, इसका मतलब यह समझना कि अब बच्चों को फ़ेल किया जा सकेगा, ठीक नहीं है। असल में, उसका उद्देश्य भी वही है जिसके चलते जो बच्चे सीखने के प्रतिफलों से तनिक दूर रह गए हैं, उनके साथ थोड़ा और समय लगाकर उन्हें नए सत्र की शुरुआत से पहले और बेहतर सिखा पाना है। नो डिटेंशन पॉलिसी के पक्ष और विपक्ष में तर्क हो सकते हैं, लेकिन यह ध्यान रखना ज़्यादा ज़रूरी है कि हर बच्चा सीख सकता है, और सीखना हर बच्चे का अधिकार है। पास-फ़ेल, कम या ज़्यादा नम्बर का मामला बिल्कुल अलग है। हालाँकि ज़मीनी तौर पर काम कर रहे शिक्षकों के सामने ढेर सारी चुनौतियाँ होती हैं जिन्हें समझे बग़ैर बात पूरी स्पष्ट नहीं हो सकती। शिक्षकों के सामने, आयु के आधार पर बच्चों को कक्षा में दाख़िला देना, विविध दक्षता स्तर व पृष्ठभूमि के बच्चों को सिखाना, और पुरानी छूट गई कक्षाओं का पाठ्यक्रम पूरा कराते हुए उन्हें नई कक्षा की दक्षताओं तक लाने जैसी चुनौतियाँ रहती हैं। इन चुनौतियों पर शिक्षक साल भर काम करते रहते हैं। वार्षिक परीक्षा के बाद रिपोर्ट कार्ड में दर्ज नम्बरों से इतर एक शिक्षक अपने बच्चों की अकादमिक प्रगति को ठीक-ठीक जानता है जिसमें सतत् व व्यापक मूल्यांकन की समझ निहित रहती है।

> शिक्षकों की आकलन को लेकर समझ, बच्चे की सीखने की प्रगति को लेकर समझ के बीच ही कहीं शिक्षा की वह दृष्टि रहती है जिससे बच्चों का सीखना सुनिश्चित होता है, न कि प्रतियोगिता का बोझ या फ़ेल होने का भय होता है।

ऐसा नहीं है कि इस बारे में विचार नहीं किया गया है। स्कूली शिक्षा व्यवस्था में आकलन की अवधारणा में रचनात्मक आकलन (फ़ॉर्मेटिव एसेसमेंट) और योगात्मक आकलन (समेटिव एसेसमेंट) जैसे शब्द प्रचलित हैं, और उन्हें धरातल पर उतारने की मंशा भी सम्मिलित है। अब सवाल यह उठता है कि आकलन को लेकर वास्तविक समझ, संवेदना आख़िर छूट कहाँ जाती है। स्कूली शिक्षा व्यवस्था क्या करे कि पाठ्यचर्या के महत्त्वपूर्ण अवयव, आकलन से शिक्षा के उद्देश्यों को प्राप्त करने के प्रयास रचनात्मक बन सकें, परीक्षा का भय और नम्बरों की दौड़ से इतर सही अर्थों में सीखना इनके केन्द्र में हो। इसके साथ ही, यह समझना भी कि क्या-क्या सीखना अभी बाक़ी है, और उस बाक़ी तक कैसे पहुँचा जाए।

इसके लिए आज के परिप्रेक्ष्य में आकलन की सम्पूर्ण प्रक्रिया और समझ को कक्षा के स्तर पर जानना-समझना होगा।

चित्र 1: अपने सीखे और जाने गए को लिखते विद्यार्थी

रचनात्मक आकलन का उद्देश्य बच्चे की कक्षा से सम्बन्धित विषयों की अवधारणा पर दक्षता और सीखने के परिणाम (लर्निंग आउटकम) पर हो रही प्रगति या उसमें आ रही बाधा को समग्रता से समझना है। लेकिन धरातल पर रचनात्मक आकलन में ऐसा होता नहीं दिखता है।

फ़िलहाल रचनात्मक आकलन से प्राप्त अंकों को नोट कर सत्र के अन्त में परीक्षा की अंक तालिका में लिखने तक की ही प्रक्रिया दिखती है। बच्चों द्वारा रचनात्मक आकलन में दिए गए उत्तरों का न तो विश्लेषण किया जाता है न ही इनसे बनी समझ का उपयोग पठन-पाठन में किया जाता है।

अब योगात्मक आकलन की बात कर लें। विद्यालयी शिक्षा के विषयों में निहित अवधारणाएँ पृथक या एकाकी नहीं होती हैं, बल्कि उनमें एक तारतम्यता होती है। एक तरफ़ यह अन्य अवधारणाओं से जुड़ी होती हैं, वहीं दूसरी ओर स्कूली शिक्षाक्रम में आगे आने वाली कक्षाओं में उत्तरोतर जटिलता के साथ निरन्तरता में होती हैं। इसी प्रकार, विषय भी बाड़े में बँधे नहीं होते हैं, उनमें एक अन्तर्सम्बन्ध होता है। ऐसी परिस्थिति में सत्र के अन्त में प्रत्येक कक्षा में किया जाने वाला आकलन भी मात्र योगात्मक आकलन नहीं रह जाता, बल्कि अगली कक्षा के अध्यापक के लिए बच्चे के सीखने के स्तर को समझने में यह एक प्रभावी उपक्रम हो सकता है। अपने विद्यार्थियों की गुणवत्तापरक शिक्षा के लिए सजग अध्यापक को इसके प्रति सचेत रहने की आवश्यकता है।

रचनात्मक आकलन को इसके वास्तविक स्वरूप में स्थापित किए जाने की प्रबल आवश्यकता है। विद्यालय में इसे दो स्तरों पर किया जा सकता है– पहला, प्रश्न पत्र निर्माण की प्रक्रिया के दौरान; और दूसरा, परीक्षा के उपरान्त प्राप्त बच्चों के उत्तरों की जाँच से। रचनात्मक आकलन के प्रश्न पत्र निर्माण के दौरान अध्यापक को इस बात के लिए सचेत रहना होगा कि किस प्रश्न से किस दक्षता और किस सीखने के परिणाम की जाँच करना चाहते हैं, और वह भी किस संज्ञानात्मक स्तर पर। इसी प्रकार, विद्यार्थियों के उत्तरों की जाँच करते समय इस पर सचेत रहते हुए उन दक्षताओं और सीखने के परिणामों में हो रही प्रगति या आ रही बाधाओं का विश्लेषण करने की आवश्यकता है। बच्चे के उत्तरों के सूक्ष्म विश्लेषण से ही यह बात स्पष्ट हो जाएगी कि विभिन्न दक्षताओं और किसी अवधारणा पर आधारित सीखने के परिणामों पर उसकी प्रगति क्या है, और उसे किसी दक्षता को प्राप्त करने में कहाँ समस्या आ रही है। अगर ऐसा करते हैं तो हम बच्चे के सीखने में उसकी वांछित मदद कर पाएँगे। इस तरह के विश्लेषण से बनी समझ का पठन-पाठन की प्रक्रिया में उपयोग करने से बच्चे के बेहतर सीखने के अवसर बनेंगे, और स्कूली शिक्षा गुणवत्तापूर्ण, समावेशी व समतामूलक बन सकेगी।

आकलन पर होने वाला आज तक का समूचा विमर्श यह स्थापित करता है कि आकलन सीखने के लिए होना चाहिए न कि सीखे गए को मापने के लिए किए गए मूल्यांकन के तौर पर। *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* ने स्कूल-आधारित आकलन के आधार पर तैयार होने वाले व अभिभावकों को दिए जाने वाले प्रगति कार्ड को नए स्वरूप में देने की अनुशंसा की है। इस प्रगति

चित्र 2 : सीखने का आनन्द लेते विद्यार्थी

कार्ड की 360-डिग्री व बहुआयामी कार्ड के रूप में संकल्पना की गई है जिसमें प्रत्येक विद्यार्थी के संज्ञानात्मक, भावात्मक एवं साइकोमोटर विकास के बारीक़ी से किए गए विश्लेषण और विशिष्टता का विवेचन होगा। आकलन के इस प्रारूप का उद्देश्य शिक्षा को सर्वांगीण विकास के तौर पर देखने का है, जैसा कि शिक्षा की परिभाषा में कहा जाता है। सतत् और व्यापक मूल्यांकन इसी ओर एक प्रयास था। आज के परिप्रेक्ष्य में इस स्तर की तैयारी हमारी स्कूली शिक्षा में नहीं के बराबर दिखती है, लेकिन हमें अभी से इस ओर मज़बूती से क़दम बढ़ाने की ज़रूरत है, और इसकी शुरुआत परीक्षा के इस मौसम से ही की जा सकती है।

पहले क़दम के तौर पर आकलन की प्रक्रिया को कक्षा की प्रक्रिया से जोड़ना होगा। अध्यापक को अपने विषय से सम्बन्धित अवधारणाओं, दक्षताओं और सीखने के परिणामों के संज्ञानात्मक स्तर को समझते हुए आकलन की प्रक्रिया करनी होगी। आकलन के लिए योजना बनाते समय अध्यापक का प्रयास इस बात पर होना चाहिए कि बच्चा सम्बन्धित दक्षता का अनुप्रयोग, विश्लेषण और उस पर तार्किक चिन्तन कर सके। यह तभी सम्भव होगा जब आकलन के बारे में हम अध्यापकों में सुस्पष्ट समझ व दृष्टि हो। प्रारम्भिक स्तर पर आकलन मौखिक व लिखित, दोनों रूपों में हो तो बेहतर होता है, क्योंकि इससे किसी अवधारणा को सीखने में हो रही प्रगति या इसमें आने वाली समस्या का सही-सही आकलन सम्भव है।

> **यह ध्यान रखना ज़्यादा ज़रूरी है कि हर बच्चा सीख सकता है, और सीखना हर बच्चे का अधिकार है।**

स्कूली शिक्षा में आकलन के नए नज़रिए को स्थापित करना बहुत आवश्यक है। आकलन जब सीखने में मदद करने के औज़ार के रूप में स्थापित होगा तब परीक्षा के भय से बच्चों को निजात मिल सकेगी, और स्कूली व्यवस्था में आनन्ददायक शिक्षा का सूत्रपात हो पाएगा। इसके वाहक अध्यापकों से यह बड़ी अपेक्षा है कि वह अपनी कक्षा में किए जा रहे आकलन पर पुनर्विचार करें, और आकलन को उसकी मूल भावना के रूप में स्थापित करने का प्रयास करें। एक बेहतर आकलन प्रक्रिया से ही बेहतर सीखना और सिखाना सम्भव है।

कैलाश चन्द्र काण्डपाल शिक्षा में लम्बे समय से सक्रिय हैं। उन्होंने अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन मध्य प्रदेश में काम किया। बिहार, उत्तराखण्ड में बतौर राज्य प्रमुख कार्य किया। इन दिनों, आप झारखण्ड में भी राज्य प्रमुख की भूमिका में हैं। लिखने-पढ़ने और हमेशा कुछ नया सीखने की उनकी रुचि उन्हें लगातार सक्रिय रखती है। आप उत्तराखण्ड से प्रकाशित होने वाली पत्रिकाओं, *शैक्षिक प्रवाह* व *उम्मीद जगाते शिक्षक* के सम्पादक भी रहे हैं।

सम्पर्क : kandpal@azimpremjifoundation.org

सन्दर्भ : वार्षिक परीक्षाएँ

उत्तर पुस्तिकाओं के अध्ययन से नए शैक्षिक सत्र की तैयारी

जगमोहन सिंह कठैत

परीक्षाएँ उत्तीर्ण कर नई कक्षाओं में आने वाले विद्यार्थियों के शैक्षणिक स्तर और ज़रूरतों की ऐसी कोई पुख़्ता समझ शिक्षकों के पास नहीं होती है जिसके आधार पर वह नए विद्यार्थियों को पढ़ाने की असरदार योजना बना सकें। उत्तीर्ण विद्यार्थियों की उत्तर पुस्तिकाओं के विश्लेषण से हासिल समझ द्वारा शिक्षक, शिक्षण-अधिगम प्रक्रियाओं और गृहकार्य की व्यावहारिक, प्रभावकारी व रचनाशील योजनाएँ बनाकर अपना सकते हैं।

अधिकांश राज्यों में, शैक्षिक सत्र का समापन मार्च में होता है, और अप्रैल के आस-पास नए सत्र का आरम्भ होता है। ऐसे दौर में, विद्यार्थी नियमित कक्षाओं की पढ़ाई से ख़ुद को मुक्त महसूस करते हैं, और उनमें नई कक्षाओं में प्रवेश का उत्साह होता है। बच्चों द्वारा नई पाठ्यपुस्तकों से परिचय चल रहा होता है, नए-नए चित्रों को देखा जा रहा होता है, और नई पुस्तकें जिल्द चढ़ाकर सजाई-सँवारी जा रही होती हैं। वहीं दूसरी ओर, शिक्षक-शिक्षिकाएँ भी बच्चों के प्रवेश और नई कक्षाओं में नामांकित करने की औपचारिकताओं में व्यस्त रहते हैं। इस समय न तो विद्यार्थी और न ही शिक्षक-शिक्षिकाएँ पाठ्यक्रम को पूरा करने का कोई दबाव महसूस करते हैं।

> **यदि शिक्षक को प्रत्येक विषय में अपने विद्यार्थियों के क्षमता स्तर की स्पष्ट समझ हो जाए, वह शिक्षण-अधिगम प्रक्रियाओं को उनके स्तर के अनुरूप बेहतर ढंग से तैयार कर सकते हैं।**

यह समय अच्छा अवसर होता है जब शिक्षक-शिक्षिकाएँ बच्चों की वर्तमान कक्षा की अपेक्षित विषयवस्तु पर काम के दबाव से मुक्त रहकर उनके साथ पिछली कक्षाओं की अपेक्षित दक्षताओं

चित्र 1 : नई कक्षा में मिल-जुलकर कुछ नया सीख रहे हैं

पर काम करते हैं। इस तरह, वह बच्चों को वर्तमान कक्षा के अनुरूप तैयार करने की कोशिश करते हैं। विभिन्न राज्यों के शिक्षा विभाग भी इस उद्देश्य के लिए इस दौरान कई तरह की योजनाओं को लागू करते हैं। उदाहरण के लिए, उत्तराखण्ड में शिक्षा विभाग 'मिशन कोशिश' योजना का संचालन करता है। यह अप्रैल-जून में संचालित होती है। इसका मक़सद नवीन कक्षा हेतु निर्धारित न्यूनतम दक्षताओं को अर्जित करने के लिए विविध दैनिक प्रयासों से हटकर रचनात्मक प्रयास करना होता है। यह दक्षताएँ नींव के रूप में काम करती हैं।

उपर्युक्त पृष्ठभूमि को दृष्टिगत रखते हुए, लेख में कुछ कार्ययोजनाएँ सुझाई गई हैं। इनमें बताया गया है कि इस दौरान शिक्षक-शिक्षिकाएँ ऐसा क्या करें जिससे बच्चों को नई कक्षाओं के लिए तैयार किया जा सके, और शिक्षण प्रक्रिया को प्रभावी बनाया जा सके।

1. उत्तर पुस्तिकाओं का विश्लेषण और शिक्षण में उपयोग

अकसर विद्यार्थियों की वार्षिक परीक्षाओं का उपयोग उन्हें उत्तीर्ण या अनुत्तीर्ण कर एक कक्षा से आगे की कक्षा में भेजने या उसी कक्षा में बनाए रखने के उद्देश्य से किया जाता है। जिन बच्चों ने 33-40 प्रतिशत से अधिक अंक अर्जित कर लिए हों, उन्हें अगली कक्षा में दर्ज कर लिया जाता है। इससे अधिक न तो इन वार्षिक परीक्षाओं का कोई उपयोग किया जाता है न ही उन उत्तर पुस्तिकाओं का, जो विद्यार्थियों द्वारा वार्षिक परीक्षा में इस्तेमाल की जाती हैं। यदि शिक्षक को प्रत्येक विषय में अपने विद्यार्थियों की क्षमता स्तर की स्पष्ट समझ हो जाए, वह शिक्षण-अधिगम प्रक्रियाओं को उनके स्तर के अनुरूप बेहतर ढंग से तैयार कर सकते हैं। इसलिए यह एक अच्छा अवसर होता है जब बच्चों की उत्तर पुस्तिकाओं का विश्लेषण कर बच्चों के अधिगम स्तर को बेहतर तरीक़े से समझा जाए, और उसके अनुरूप शिक्षण के लिए प्रभावी रचनात्मक तरीक़ों का इस्तेमाल किया जाए। उत्तर पुस्तिकाओं का विश्लेषण कुछ इस प्रकार हो सकता है :

1.1 सबसे पहले उन प्रश्नों की पहचान की जाए जिन्हें अधिकांश बच्चों ने हल नहीं किया है। इससे शिक्षक को यह अन्दाज़ा हो जाता है कि कौन-सी अवधारणाएँ ज़्यादातर बच्चों को नहीं आती हैं। इन अवधारणाओं के लिए विशेष योजना बनाई जा सकती है। हालाँकि प्रश्न छोड़ने का एक कारण यह होता है कि बच्चों को सवाल से सम्बन्धित अवधारणा आती ही नहीं है, लेकिन यह भी हो सकता है कि बच्चों को सवाल की भाषा ही समझ न आई हो, या दूसरे भी कोई कारण हो सकते हैं।

यह बात तब और अधिक समझ आएगी जब बच्चों से इस पर बातचीत होगी। कारण समझकर अधिक सटीक और प्रभावी योजना बनाई जा सकती है।

1.2 फिर इस बात का विश्लेषण किया जाए कि कौन-से ऐसे सवाल हैं जिन्हें बच्चों ने हल करने का प्रयास तो किया है, लेकिन अधिकांश बच्चों ने ग़लत किया है। हालाँकि इतने विश्लेषण से ऐसी समझ नहीं बनेगी जिससे आगे की कार्ययोजना बनाई जा सके। इसके लिए थोड़ा ज़्यादा विश्लेषण किया जाना ज़रूरी है। यानी, जो सवाल ग़लत किए हैं उनमें अकसर किस तरह की ग़लतियाँ हुई हैं। इससे अन्दाज़ा लगता है कि कौन-सी जगह है जहाँ पर बच्चों की समझ या तो ग़लत बनी या अधूरी बनी है। यह विश्लेषण बच्चे का शैक्षणिक स्तर, वह कहाँ फँस रहा है, और बच्चे किस प्रकार सीखते हैं, यह समझने में मददगार होता है। इससे शिक्षक को प्रत्येक बच्चे के लिए योजना बनाने और अपने पढ़ाने के तरीक़ों में बदलाव करने के अनुभव-आधारित रास्ते खोजने का अवसर मिलता है।

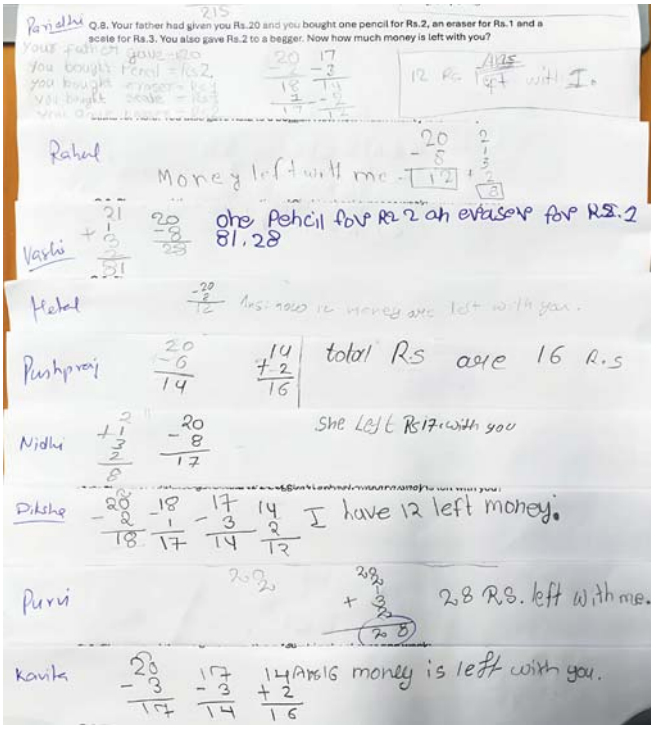

चित्र 2 : एक सवाल को विद्यार्थियों ने अलग-अलग तरीक़े से हल किया

शिक्षकों को बच्चों की ग़लतियों को उदाहरण बनाकर विषयवस्तु पढ़ाने की योजना बनानी चाहिए। उदाहरण में बच्चों के नामों का ख़ुलासा न हो, इस बात का ध्यान रखने की ज़रूरत है। इस तरह, बच्चों की ग़लतियाँ उन्हें समझने का एक सशक्त माध्यम बन जाती हैं। यह ग़लतियाँ सीखने के पड़ाव हैं, न कि बच्चों को पीछे धकेलने या नीचे गिराने की सूचक। हमें इस बात का विश्लेषण भी करना चाहिए कि जो सवाल ज़्यादातर बच्चों ने ग़लत किए हैं, क्या उन्हें कुछ बच्चों ने सही भी किया है। ऐसे बच्चों की पहचान आगे की कार्ययोजना बनाने में मददगार होगी।

उदाहरण के लिए, चित्र 2 में एक सवाल पूछा गया, "पिता ने 20 रुपए दिए। आपने 2 रुपए की पेंसिल, 1 रुपए की रबर, 3 रुपए का स्केल ख़रीदा, और 2 रुपए भिखारी को दिए। बताओ, आपके पास कितने रुपए शेष हैं?" इस सवाल के उत्तरों के विश्लेषण से समझ आता है कि परिधि और दिशा नाम की दो बच्चियों को अवधारणा की समझ है, और समस्या के समाधान की प्रक्रिया भी आती है क्योंकि उन्होंने जैसे-जैसे रुपए ख़र्च किए, कुल रुपए

Q: Write the fractional forms of the decimal numbers given below:

Ans:

Sl. No.	Decimal	Fractional form
a.	0.4	$\frac{10}{4}$
b.	0.8	$\frac{10}{8}$
c.	0.9	$\frac{10}{9}$

चित्र 3 : विद्यार्थियों के काम का नमूना

Q : What is the sum of 3, 047 and 30,152?

Ans :

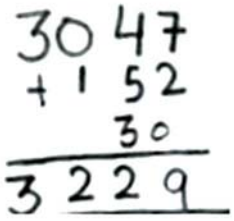

चित्र 4 : एक विद्यार्थी की जोड़ की समझ का एक नमूना

में से उतने रुपए क़दम-दर-क़दम घटाती चली गईं। लेकिन अब उन्हें अगले पायदान पर जाने के लिए सीखना यह है कि सारे ख़र्चों को एक साथ कैसे समेकित कर कुल राशि में से घटा दें। इन बच्चियों की वह समझ नहीं बनी है जो कि राहुल के प्रयास में दिखती है। वाशी को अवधारणा की समझ ही नहीं बनी है। पुष्पराज और कविता का उदाहरण मज़ेदार दिखता है। वह सामान ख़रीदने को तो ख़र्च मान रहे हैं, लेकिन भिखारी को दिए गए रुपयों को शायद ख़र्च ही नहीं मान रहे हैं। वह दुविधा में हैं कि भिखारी को दिए रुपयों का क्या करें। अन्ततः, उस राशि को वह शेष में जोड़ देते हैं। शायद बच्चों को लग रहा हो कि बाक़ी रुपयों के बदले कुछ सामान मिला, लेकिन इन रुपयों से कुछ नहीं मिला। इन बच्चों से बात करके समझा जा सकता है कि उन्होंने ऐसा क्यों किया। इस विश्लेषण से समझ आता है कि किस बच्चे को क्या समझ आया, क्या नहीं, और उनके साथ क्या काम करने की ज़रूरत है? बच्चे कैसे सोचते-विचारते हैं, यह समझने और अध्यापन के तौर-तरीक़े तय करने में भी हमें इस विश्लेषण से मदद मिलती है। साथ ही, यह भी समझ आता है कि परिधि और दिशा ऐसी विद्यार्थी हैं जिनकी मदद एक स्तर तक बच्चों को पढ़ाने में ले सकते हैं।

तीसरे चित्र से समझ आ रहा है कि बच्चे को दशमलव और भिन्न की अवधारणा तो नहीं समझ आई, लेकिन शिक्षक का सूत्र वाक्य याद रहा जो वह अकसर दशमलव की संख्या को भिन्न में बदलने के लिए कक्षाओं में बोलते हैं। यानी, ऐसे सवालों में भिन्न की संख्या को दशमलव हटाकर लकीर के ऊपर लिखते हैं, और नीचे 1 लिख देते हैं। फिर दशमलव के बाद जितनी संख्याएँ होती हैं उतने शून्य 1 के बाद लगा देते हैं। जैसे, यदि दशमलव के बाद एक अंक है तब 10, दो अंक हैं तब 100, तीन हैं तो 1000, और इसी प्रकार आगे शून्य लगा देते हैं। लेकिन इस उदाहरण से ऐसा लगता है कि अन्तिम समय में विद्यार्थी शायद भूल गया है कि ऊपर क्या लिखा जाए और नीचे क्या।

> **यदि गृहकार्य ऐसा हो जिसमें विद्यालय में पढ़ाई गई अवधारणाओं का दैनिक जीवन में उपयोग देखने-समझने को मिले तब विद्यालय और घर एक दूसरे के पूरक हो जाते हैं।**

इससे समझ आता है कि ऐसे बच्चों के साथ क्या और कैसे काम करना है। इस प्रकार की अवधारणा के लिए अलग-अलग तरीक़ों से काम करने की ज़रूरत है।

चौथे चित्र में समझ आ रहा है कि बच्चे को सामान्य और हासिल का जोड़ आता है, लेकिन संख्याओं में जो कोमा लगाया जाता है उसकी समझ शायद उसे नहीं है। हालाँकि यह भी निश्चित नहीं है क्योंकि उसने पहली संख्या को सही लिखा है। इससे समझ आता है कि बच्चे के साथ जोड़ की अवधारणा पर काम करने की ज़रूरत नहीं है, बल्कि संख्याओं को कैसे लिखते है, कोमा का उपयोग कैसे किया जाता है, इस समझ पर बात करने की ज़रूरत है। यह उत्तर शिक्षक को कई बातें बताता है। मसलन, बच्चे अकसर कोमा नहीं समझते हैं, अध्यापन के दौरान उन्हें किन बारीक़ियों का ध्यान रखना है, प्रश्न पत्र बनाते समय क्या सावधानियाँ रखने की ज़रूरत है, आदि।

2. बच्चों द्वारा बच्चों की उत्तर पुस्तिकाओं का विश्लेषण

इस दौरान ज़रूरी और महत्त्वपूर्ण है कि बच्चों की वार्षिक परीक्षाओं की उत्तर पुस्तिकाओं का विश्लेषण बच्चों द्वारा भी किया जाए। पहले बच्चे अपनी ही उत्तर पुस्तिका का विश्लेषण करें कि उन्होंने कौन-से सवाल सही किए हैं और कौन-से ग़लत। जो सवाल ग़लत किए हैं उनमें क्या ग़लती की है। यह प्रक्रिया बच्चों को चिन्तन-मनन करने और सीखने में मददगार होती है। फिर छोटे-छोटे समूहों में एक दूसरे की उत्तर पुस्तिकाओं का अवलोकन करने दें। इसमें वह देखें कि दूसरे ने जो सही किया है वह कैसे किया है, और जो ग़लत किया है वह कहाँ पर हुआ है, आदि। एक दूसरे की पुस्तिकाएँ देखना बच्चों को बहुत पसन्द आता है। जब वह उन सवालों को देखते हैं जो उन्होंने ख़ुद ने ग़लत किए थे और दूसरे ने सही, तब सीखना और भी सहज व सरल हो जाता है। यह पूरी प्रक्रिया बड़ी मज़ेदार होती है।

3. समूहों में बच्चों को सिखाने में बच्चों से सहयोग

यह ऐसा समय है जब बच्चों को कक्षाओं की पारम्परिक बैठक व्यवस्था से हटकर बैठाने के प्रयोग करने चाहिए। यहाँ उत्तर पुस्तिकाओं का विश्लेषण बहुत काम आता है। जिन अवधारणाओं में बच्चों ने ग़लती की थी उन्हें उनकी ग़लतियों के अनुरूप

अस्थाई प्रकृति के समूहों में बैठाया जाए। इसमें आवश्यकतानुसार एक ही या दो-तीन कक्षाओं के बच्चे एक साथ बैठ सकते हैं। बच्चों में यह सन्देश न जाए कि उन्हें कुछ बातें नहीं आती हैं। इसलिए जिन बच्चों ने उस अवधारणा से जुड़े सवाल को ठीक से हल किया है, उनमें से एक या दो बच्चों को उस समूह के बच्चों को अवधारणा समझाने की ज़िम्मेदारी दी जा सकती है। बच्चों के समझाने के तरीक़े बहुत बार बच्चों के सीखने में प्रभावी होते हैं। इस दौरान शिक्षक अलग-अलग समूहों या कक्षा का अवलोकन करें। इससे सीखने और बच्चों को समझने के अच्छे अवसर बनते हैं।

4. ज़रूरी अवधारणाओं पर विशेष कार्ययोजना

बच्चों की उत्तर पुस्तिकाओं को देखने से यह बात काफ़ी हद तक स्पष्ट हो जाती है कि कौन-सी अवधारणाएँ बच्चों को बिल्कुल समझ नहीं आईं, और वह कौन-सी अवधारणाएँ हैं जो बच्चों ने ग़लत समझ लीं या अधूरी समझी हैं। जो अवधारणाएँ अधूरी या ग़लत समझी गईं, उनमें ग़लती कहाँ हो रही है। उन हिस्सों या प्रक्रियाओं पर ध्यान देने की ज़रूरत होती है जहाँ समझने में बच्चे ग़लती कर रहे हैं। यह ग़लतियाँ कभी ऐसे शब्दों के इस्तेमाल से भी होती हैं जो बच्चों को समझ में नहीं आते, या उन शब्दों के अर्थ बच्चों के लिए अलग होते हैं। ऐसी अवधारणाओं पर उनके द्वारा की गई ग़लतियों के आधार पर योजना बनाई जाए। जिन सवालों को बच्चों ने हल करने का प्रयास ही नहीं किया है, उनके विश्लेषण से यह तो समझ आता है कि बच्चों को वह अवधारणाएँ नहीं आतीं। लेकिन क्या समझ नहीं आया और कहाँ मुश्किल है, यह समझ नहीं आता। इन सभी अवधारणाओं को समझाने के लिए विभिन्न प्रकार की गतिविधियाँ, खेल, अभ्यास और टीएलएम-आधारित रचनात्मक शिक्षण योजनाओं की ज़रूरत होती है। उदाहरण के लिए, एक कक्षा में बच्चों को मीटर, सेंटीमीटर और फुट की अवधारणा स्पष्ट नहीं हो पा रही थी। शिक्षक ने दर्ज़ी वाला इंची टेप लेकर विभिन्न कमरों और क्यारियों की माप करवाकर उसे एक तालिका में लिखवाया, और कक्षा में उस पर बातचीत हुई। इससे बच्चों को सहजता से समझ आ गया कि मापन की बड़ी और छोटी इकाइयाँ क्या हैं, और इनका आपस में क्या रिश्ता है।

5. गृहकार्य

अकसर बच्चों को ऐसे गृहकार्य दिए जाते हैं जिनका घर से कोई सम्बन्ध नहीं होता है। बच्चों के जो काम विद्यालय में नहीं हो पाते, या अधूरे रह गए, या जिनके दोहराव की ज़रूरत होती है, वही घर के लिए दिए जाते हैं। इस प्रकार, गृहकार्य के नाम पर घर भी विद्यालय का ही विस्तारित रूप हो जाता है। बच्चों में ऐसे गृहकार्य को लेकर अकसर बेरुख़ी देखी जाती है। यदि गृहकार्य ऐसा हो जिसमें विद्यालय में पढ़ाई गई अवधारणाओं का दैनिक जीवन में उपयोग देखने-समझने को मिले तब विद्यालय और घर एक दूसरे के पूरक हो जाते हैं।

इसलिए ज़रूरी है कि ऐसी अवधारणाएँ जिन पर बच्चों की समझ अधूरी या ग़लत बनी है, या नहीं बन पाई है, उन पर ऐसे गृहकार्य दिए जाएँ जिनसे वह अवधारणाएँ मूर्त रूप में देखने-करने के अवसर बन सकें। उदाहरण के लिए, अकसर बच्चे सारणी या तालिका को पढ़ने में कठिनाई महसूस करते हैं। वह उसे समझ नहीं पाते हैं। यदि बच्चों को परिवार या आस-पास के लोगों के बारे में, या गाँव में पशुओं, आदि का सर्वे करके उन्हें एक तालिका में लिखने को दें तब बहुत मदद मिलती है। जब ऐसी सारणियों पर बातचीत होती है तब वह सहजता से समझ जाते हैं। इस तरह के चुनौतीपूर्ण और रचनाशील कामों में बच्चों को आनन्द आता है, और उनका आत्मविश्वास भी बढ़ता है।

इस प्रकार देखें तो वार्षिक परीक्षाओं के बाद का समय ऐसा अवसर है जब हम बने-बनाए ढर्रे से हटकर बच्चों की उत्तर पुस्तिकाओं से उनके वास्तविक शैक्षणिक स्तर और ज़रूरतों को समझ सकते हैं, और उनके मुताबिक़ प्रभावी शिक्षण योजना बनाकर बच्चों की मदद कर सकते हैं। इस तरह, परीक्षाओं को महज़ कक्षा उन्नति का इकलौता ज़रिया न बनाकर पूरी शिक्षण प्रक्रिया को प्रभावी बनाने का माध्यम बनाया जा सकता है। यह प्रयास शिक्षक-शिक्षिकाओं को बच्चों के बारे में व शिक्षण प्रक्रियाओं पर अपनी समझ को पुख़्ता करने में भी मददगार साबित हो सकते हैं।

चित्र 5 : पढ़ने के कोने में अपनी पसन्द की किताबें तलाशते विद्यार्थी

जगमोहन सिंह कठैत तक़रीबन 30 वर्षों से शिक्षा और सामाजिक क्षेत्र में कार्यरत हैं। आप विगत 15 वर्षों से अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन में काम कर रहे हैं। वर्तमान में, अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन द्वारा संवैधानिक मूल्यों पर युवाओं के लिए किए जा रहे कार्यों का नेतृत्व कर रहे हैं।

सम्पर्क : jagmohan@azimpremjifoundation.org

पिछली कक्षा की सीख से नई कक्षा की तैयारी

शोभन सिंह नेगी

नई कक्षाओं में प्रवेश से पहले बच्चों को दुबारा से पिछली कक्षाओं के अनुभव मिलना महत्त्वपूर्ण है। इस तरह के अनुभव नई कक्षा की नींव को पक्का करते हैं। ग्रीष्मावकाश ऐसा अवसर होता है जब बच्चों की नई कक्षा की चुनौतियों को समझते हुए ख़ुशनुमा माहौल में सीखने-सिखाने के रोचक व रचनात्मक तरीक़े अपनाए जाएँ।

बच्चों के जीवन में नई, या कहें अगली कक्षा में प्रवेश करना एक महत्त्वपूर्ण घटना होती है। यह अनुभव की बात है कि अधिकांश बच्चे पास होकर अगली कक्षा में पहुँच तो जाते हैं, लेकिन पिछली कक्षा की उनकी चुनौतियाँ बनी रहती हैं। अकसर देखा गया है कि सरकारी विद्यालयों में बच्चों को नई किताबें जुलाई में ही उपलब्ध हो पाती हैं। इसलिए अप्रैल-मई और ग्रीष्मावकाश एक ऐसा मौक़ा होता है जब शिक्षक बच्चों को ऐसे अनुभव दे सकते हैं जिन्हें देने से वह कई कारणों से वंचित रह जाते हैं। इस लेख में, ऐसे ही अनुभवों व अवलोकनों का उल्लेख है।

ग्रीष्मावकाश : सीखने–सिखाने के अनुभव

सत्र के शुरुआती महीनों, यानी अप्रैल-मई में यहाँ पिछली कक्षाओं की पढ़ाई को दोहराने पर समय लगाना अच्छा होता है। दोहराने, यानी रिवीज़न का ठोस आधार शिक्षकों के पास होता ही है, क्योंकि बच्चों की वार्षिक परीक्षाएँ उन्होंने ही ली होती हैं। सभी शिक्षकों को प्रत्येक बच्चे के शैक्षिक स्तर की ठोस जानकारी होती है। उन्हें मालूम होता है कि किस कक्षा का कौन-सा बच्चा किस स्तर पर है। बेहतर होता है जब शिक्षक बच्चों की दक्षता स्तर के आधार पर उनके समूह बनाते हैं। फिर बच्चों के शैक्षिक स्तर के हिसाब से शिक्षण योजना बनाई जाती है।

चित्र 1: समर कैम्प में प्रतिभाग करते विद्यार्थी

अवलोकनों में मैंने पाया कि चित्र अथवा चित्र कहानियों पर बातचीत करना बच्चों के साथ अच्छी व सहज शुरुआत हो सकती है। बच्चों की अभिव्यक्ति, कल्पनाशीलता और मौखिक भाषा विकास के लिए यह गतिविधि प्रभावशाली लगी। कक्षा 5 तक के बच्चों के लिखित व मौखिक भाषा विकास में चित्र व चित्र कहानियाँ असरदार माध्यम होती हैं। मैंने अनेक शिक्षकों को चित्र कहानियों पर बच्चों से संवाद करते देखा और बच्चों को चित्रों पर कहानियाँ बनाते व कल्पना करते सुना। साथ ही, उन्हें चित्रों पर रची गई कहानियों को प्राथमिक कक्षाओं में सुनाते हुए देखा।

छोटी कक्षाओं के बच्चों में भाषा के मौखिक विकास में यह रोचक व कमाल की गतिविधि है। इकतारा, एकलव्य, रूम टू रीड, नेशनल बुक ट्रस्ट, आदि संस्थाओं द्वारा चित्र कहानियों सहित ऐसा ढेर सारा अच्छा साहित्य प्रकाशित किया जा रहा है। इन सभी संस्थाओं ने बच्चों के लिए कई अच्छी चित्र कहानियाँ भी प्रकाशित की हैं। कुल मिलाकर, इस दौरान बच्चों के मन और उनकी भाषाई पृष्ठभूमि को समझने, उनमें पढ़ने की रुचि पैदा करने और कल्पनाओं को पंख देने का काम किया जा सकता है।

एक और बात जो मुझे समझ आई कि अभी कक्षा 8 तक के बच्चे भी बुनियादी भाषा व संख्या-ज्ञान सीखने की समस्या से जूझ रहे हैं। कोविड काल ने इसे और बढ़ाया है। ऐसे में, बच्चों में बुनियादी भाषा व गणित के कौशलों के विकास के लिए प्रयासों को आगे बढ़ाना ज़रूरी है। हम यह भी जानते हैं कि अधिकांश बच्चे पिछली कक्षा के स्तर पर आ जाएँ, इसके लिए लाइब्रेरी का इस्तेमाल बेहतर ढंग से किया जा सकता है। बच्चों को उनके स्तरानुसार किताबें पढ़ने के अवसर देना काफ़ी फ़ायदेमन्द होता है। प्रत्येक बच्चे के लिए रोज़ाना उनके स्तर के हिसाब से पठन सामग्री से चयन हो और पढ़ी हुई सामग्री पर उनसे बातचीत हो। ख़ासतौर पर यह जानना कि बच्चों की कहानी के पात्रों और कहानी में पात्रों के आपसी सम्बन्धों के बारे में समझ क्या है। इस तरह की बातचीत से बच्चों में पढ़ने की रुचि और आदत का विकास भी होता है।

महत्त्वपूर्ण बात यह है कि बच्चों को पठन सामग्री देना ही पर्याप्त नहीं है। शिक्षकों को भी बाल साहित्य पढ़ना ज़रूरी है। यहाँ एक घटना का ज़िक्र प्रासंगिक होगा। कुछ साल पहले फ़ाउण्डेशन की बाड़मेर टीम ने निर्णय लिया कि पुस्तकालय आन्दोलन के जनक स्व पी एन पणिक्कर की पुण्यतिथि 20 जून 'राष्ट्रीय पठन दिवस' पर पठन को लेकर कुछ स्कूलों के साथ व्यापक स्तर पर काम करना चाहिए। एक प्राथमिक पाठशाला में फ़ाउण्डेशन के तीन साथी व स्कूल के चार शिक्षक शामिल थे। बच्चों की संख्या तक़रीबन 70 होगी। हम बच्चों की आयु, कक्षा व रुचि के अनुसार किताबें लेकर स्कूल गए थे। बच्चों ने अपने-अपने समूहों में उस दिन 2 घण्टे में तीन-चार कहानियाँ पढ़ीं। हमने पाया कि बच्चों ने सबसे अधिक जंगल व जानवरों से जुड़ी हुई कहानियाँ पसन्द कीं। जब बच्चों से सवाल पूछा गया कि कहानी के पात्र कौवे और कछुए की जगह आप होते तो क्या करते। बच्चों के जवाब बेहद रोचक व मौलिक थे। इस सवाल ने बच्चों के अलावा शिक्षकों में भी काफ़ी उत्साह पैदा किया था। यहाँ रेखांकित करने वाली बात है कि एक शिक्षक साथी ऐसे थे जो अलग-अलग कक्षाओं में घूम तो रहे थे, लेकिन उनकी पढ़ने में बिल्कुल रुचि नहीं थी। हम भी उनमें रुचि पैदा करने में असफल रहे। हालाँकि जब वह एक समूह में खड़े होकर बच्चों के जवाब ध्यान से सुनने लगे तब हमें बहुत अच्छा लगा। एक बच्चे ने उनसे सवाल भी पूछा, "सर, अगर इस कहानी में कछुए की जगह आप होते तो क्या करते?" उन्होंने कहा, "मैंने तो कहानी पढ़ी ही नहीं।" यहाँ उनके चेहरे के हाव-भाव बदले हुए दिखे। उन्हें इस बात का एहसास हुआ कि जब बच्चे शिक्षक को कहानी पढ़ते हुए देखते हैं तब उनका उत्साह दुगना हो जाता है। जहाँ भी मैंने बच्चों को कहानियाँ पढ़ते हुए देखा या सुना, वहाँ एक बात सामान्य थी कि जिस स्कूल में शिक्षक बच्चों के साथ कहानियाँ पढ़ते हैं, वहाँ पढ़ने-लिखने का माहौल बनता है।

ख़ासतौर पर, अप्रैल-मई में एक स्कूल में शिक्षकों का पढ़ाई को दोहराने, यानी रिवीज़न का तरीक़ा बेहद कमाल का दिखा। वह प्रत्येक बच्चे से सवाल पूछ रहे थे कि उनको पिछली हिन्दी की पाठ्यपुस्तक का सबसे पसन्द का पाठ और सबसे कठिन पाठ कौन-सा लगा। शिक्षक सभी बच्चों को सोचने के लिए पर्याप्त समय दे रहे थे।

किसी एक सप्ताह के दौरान वह बच्चों के साथ इस तरह के कक्षा कार्य कर रहे थे–

प्रत्येक बच्चा सरल पाठ व कठिन पाठ के बारे में सोचे और बच्चों को समूह में बताए। दूसरा कक्षा कार्य था कि उसी बात को

चित्र 2 : समर कैम्प में चित्रकारी करती एक विद्यार्थी

लिखकर साझा करे। यह काम हर बच्चा बारी-बारी से कर रहा था। यह उनकी कुछ दिनों की शिक्षण योजना थी। यह योजना सिर्फ़ भाषा तक सीमित नहीं थी, बल्कि गणित व पर्यावरण अध्ययन पर भी लागू थी। इतना ही नहीं, वह पिछली कक्षा से जुड़ा एक अच्छा और एक बुरा अनुभव भी सुनाने को कह रहे थे। कुछ समय बाद उस स्कूल में जब दुबारा गया, मैंने देखा कि शिक्षक ने बच्चों के इन अनुभवों को दीवार पत्रिका पर चस्पा भी किया था। थी तो यह साधारण गतिविधि, लेकिन बच्चों को पीछे की कक्षा का पुनराभ्यास कराने का यह प्रभावी तरीक़ा था। इस गतिविधि में–

1. प्रत्येक बच्चे ने पिछली कक्षा की पुनरावृत्ति की।
2. कोई पाठ सरल या कठिन क्यों लगा, इस बारे में बच्चों ने सहजता से बताया।
3. हर बच्चे को प्रोत्साहन मिला, और बड़े समूह में बोलने का मौक़ा दिया गया।

> **यहाँ बच्चों के साथ शिक्षक भी कुछ सीखते मिलते हैं। शिक्षक भी बच्चों को ऐसे अनुभव देना चाहते हैं जो वह स्कूल में या कक्षा में नहीं दे पाते हैं।**

4. बच्चों को पाठ सरल या कठिन क्यों लगा, के बारे में लिखने के मौक़े दिए गए।
5. कठिन अवधारणाओं पर शिक्षक ने भी अपनी समझ और काम करने की योजना बनाई।
6. इतना ही नहीं, बच्चों के द्वारा बताए गए अनुभव, कि क्या बुरा लगा और क्या अच्छा, सही अर्थ में विद्यालय के लिए भी एक फ़ीडबैक था।

पिछली कक्षा से नई कक्षा के बीच सेतु बनाने की यह पद्धति कमाल की थी। इस प्रक्रिया ने नई कक्षा की चुनौतियों को बहुत सहज बना दिया, क्योंकि शिक्षक उन क्षेत्रों और अवधारणाओं पर बच्चों के साथ काम कर रहे थे जिनमें बच्चों को कठिनाई महसूस हो रही थी।

समर कैम्प : सीखने–सिखाने के अनुभव

मैंने पिछले दस साल में राजस्थान व उत्तराखण्ड में ग्रीष्मकालीन छुट्टियों में जितने भी कैम्प देखे, उनमें जो बात एक जैसी दिखी वह थी– बच्चों में अपार ख़ुशी, जोश और उत्साह का भाव। यहाँ बच्चे बोर नहीं होते। बच्चे जो कुछ सीखते हैं, मन से सीखते हुए मिलते हैं। शिक्षक भी तनावमुक्त दिखते हैं। शिक्षकों के मन में बच्चों के लिए कुछ नया, रचनाशील करने की इच्छा को मुखर रूप से देखा जा सकता है। समर कैम्प में अभिभावकों

चित्र 3 : समर कैम्प में खेल गतिविधि में प्रतिभाग करते विद्यार्थी

व प्रतिनिधियों की उत्साहजनक भागीदारी दिखाई देती है। इसमें अधिकारियों की सकारात्मक प्रतिक्रिया से शिक्षकों को प्रबल समर्थन मिलता है। कमाल की बात यह है कि स्कूल व गाँव के पढ़े-लिखे युवा भी इस समर कैम्प में अपनी कलाओं व कौशलों को बच्चों के साथ साझा करते दिखाई देते हैं। समर कैम्प का वातावरण रंग-बिरंगा व उत्सव जैसा दिखता है। ऐसा प्रतीत होता है कि बच्चे बहुत कुछ सीखना चाहते हैं। वह सीखने में इतने आनन्दित होते हैं कि परिसर से घर जाना ही नहीं चाहते। शिक्षकों को ही उन्हें कहना पड़ता है, "बच्चो, अब घर जाओ!" जिस दिन कैम्प का समापन होता है, बच्चे बताते हुए नहीं थकते कि उन्होंने क्या-क्या सीखा।

मन में सवाल आता है कि आख़िर ऐसा क्या है इन समर कैम्प में! मैंने कुछ ऐसी अच्छी चीज़ें देखीं जो सभी कैम्पों में समान थीं।

यहाँ बच्चों और शिक्षकों दोनों में उत्साह और ख़ुशी दिखती है जो आम दिनों में स्कूल में कम ही दिखाई देती है। इसके पीछे इन समर कैम्प की डिज़ाइन का कमाल है। कोर्स की चिन्ता से मुक्त होकर शिक्षक जो कुछ मन से करना चाहते हैं, यहाँ करने की आज़ादी है। सिर्फ़ पढ़ने-लिखने व अनेक जीवन कौशलों पर भी ध्यान रहता है। गतिविधियों से रुचिपूर्ण सीखना ही कक्षा होती है। यहाँ बच्चों के साथ शिक्षक भी कुछ सीखते मिलते हैं। शिक्षक भी बच्चों को ऐसे अनुभव देना चाहते हैं जो वह स्कूल में या कक्षा में नहीं दे पाते हैं। यह चाह ही शिक्षकों में ख़ुशी पैदा करती है। अभिभावकों से मिलने वाला प्रोत्साहन भी उनमें ख़ुशी पैदा करता है। इससे सकारात्मक ऊर्जा का प्रवाह होता है। बच्चों के लिए भी यहाँ कोई रोक-टोक नहीं होती। उनके पास कहानी पढ़ने से लेकर पेंटिंग करने या फिर खेलने तक सीखने के कई विकल्प होते हैं।

> **बच्चों को बाल साहित्य देना ही पर्याप्त नहीं है, शिक्षकों को भी बाल साहित्य पढ़ना ज़रूरी है।**

इन कैम्पों के अनुभव कहते हैं कि ऐसे कैम्प ज़रूर और बड़ी संख्या में होने चाहिए। पहला काम जो इनमें होता है, वह है शिक्षकों और बच्चों का एक दूसरे को जानने-समझने का एक अच्छा अवसर। बच्चों की घर-परिवार की परिस्थिति, उनकी रुचियों, अच्छी-बुरी आदतों के कारणों को समझना, उनसे दोस्ताना सम्बन्ध बनाना। अकसर स्कूल में हमारे पास ऐसे मौक़े कम होते हैं। चूँकि यहाँ अनौपचारिक माहौल होता है, बच्चे अपनी बातें कहने में काफ़ी सहज हो जाते हैं।

दूसरा, बच्चों के लिए सीखने के अधिक-से-अधिक अवसर हों। खेलों की गतिविधियाँ हों, आर्ट व पेंटिंग के लिए पर्याप्त सामग्री

चित्र 4 : अपने बनाए हुए मॉडल के बारे में बताते विद्यार्थी

हो। बच्चों के लिए पढ़ने की रोचक सामग्री हो। उनको कलाओं की अभिव्यक्ति के कई सारे मौक़े देने चाहिए। मैंने यह भी पाया कि बच्चों की नाटक और कठपुतली में बहुत रुचि होती है। कैम्प के मूल में है कि बच्चों को गतिविधियों में भाग लेने और सीखने की आज़ादी रहे। शिक्षक अकसर यह करते हुए मिलते हैं।

तीसरा, समर कैम्प में बच्चों में पढ़ने की रुचि पैदा करने का एक अच्छा अवसर होता है। ऐसे समय, जब बच्चे अपनी नई कक्षाओं में प्रवेश कर चुके होते हैं, यह दौर उनके लिए नई कक्षा, नई पाठ्यपुस्तकों से रू-ब-रू होने का होता है। कोविड के बाद प्राथमिक व उच्च प्राथमिक कक्षाओं के अधिकांश बच्चे अभी भी बुनियादी साक्षरता व संख्या ज्ञान से जूझ रहे हैं। इसलिए इस तरह के समर कैम्प में बच्चों में पढ़ने-पढ़ाने की रुचि पैदा करने के लिए उनके साथ कहानियों की किताबों पर रोचक चर्चा से उन्हें स्वतंत्र लेखन और अभिव्यक्ति के अवसर मिलना चाहिए। बच्चों को अपनी स्वाभाविक गति व स्थिति से एक क़दम आगे ले जाने के प्रयास होने चाहिए। बच्चों में सीखने का उत्साह बनाना, उन्हें प्रोत्साहन देना, हमारे प्रयासों के मूल में होना चाहिए।

चौथी महत्त्वपूर्ण बात यह कि समर कैम्प में, पहले की कक्षाओं, कक्षा परिवर्तन व बच्चों की स्थिति जानने के लिए किन चीज़ों पर ध्यान हो, इस पर ग़ौर करना हमेशा उपयोगी साबित होता है।

कुल मिलाकर, बात यही है कि यह जो अप्रैल, मई और जून का समय है, इसका जितना ज़्यादा उपयोग हम आनन्ददायक और रचनात्मक तरीक़े से बच्चों के सीखने-सिखाने में कर पाएँगे उनका अगली कक्षाओं के पाठ्यक्रम से क़दम-से-क़दम मिलाकर चलना उतना ही आसान होगा। यह समय बच्चों के लिए बिना किसी तनाव के मन लगाकर सीखने का है, और शिक्षकों के लिए अपनी शिक्षण प्रक्रियाओं को तय करते समय क्या ध्यान रखना है, कौन-से तरीक़े कारगर होते हैं, इसकी समझ विकसित करने का है।

शोभन सिंह नेगी 33 वर्षों से शिक्षा और समाज की बेहतरी से जुड़े कार्यों में संलग्न हैं। आप साल 2010 से अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन में कार्यरत हैं। आपने इस संगठन में 8 साल बाड़मेर, राजस्थान में कार्य किया है। वर्तमान में, उत्तराखण्ड राज्य में अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन के कार्यों को नेतृत्व प्रदान कर रहे हैं।

सम्पर्क : shobhan@azimpremjifoundation.org

समर कैम्प का विद्यार्थियों के सीखने पर प्रभाव

मुनीर

बच्चे हमेशा समर कैम्प यानी ग्रीष्मकालीन शिविर में भाग लेने के लिए उत्साहित और उत्सुक रहते हैं। हम यहाँ उन समर कैम्पों के बारे में बात कर रहे हैं जो वार्षिक परीक्षाओं के ठीक बाद या गर्मी की छुट्टियों में बच्चों को शाला से जोड़े रखने, खेल-खेल में सीखने का अवसर देने के उद्देश्य से किए गए थे। इस लेख में, विभिन्न राज्यों में आयोजित समर कैम्पों के अनुभवों के आधार पर उनकी उपयोगिता को समझने, उन्हें आयोजित करने का तरीक़ा जानने, और उनके माध्यम से बच्चों के सीखने के प्रतिफलों का आकलन करने का प्रयास किया गया है।

समर कैम्प का ज़िक्र आते ही मन में अनेक चित्र उभरते हैं। पिछले कुछ सालों में सरकारी स्कूलों के शिक्षक समर कैम्प के आयोजन के लिए विशेष प्रयास कर रहे हैं। कई राज्यों में शिक्षकों ने गर्मी की छुट्टियों से ठीक पहले बच्चों के लिए समर कैम्प लगाना शुरू किया है जिसके नतीजे काफ़ी सकारात्मक रहे हैं। इनमें से कई जगहों पर शिक्षकों ने इन समर कैम्पों का आयोजन स्वैच्छिक रूप से किया जिनके सकारात्मक प्रभावों को देखते हुए शिक्षा विभाग ने इसे एक बड़े पैमाने पर उचित तैयारियों के साथ करना सुनिश्चित किया। आँकड़ों की मानें तो समर कैम्प में हिस्सा लेने वाले बच्चों की संख्या लगातार बढ़ रही है। अगर सिर्फ़ छत्तीसगढ़ की बात करें तो राज्य के 9 ज़िलों में जहाँ अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन शिक्षा के क्षेत्र में काम कर रहा है, वहाँ पिछले दो सालों में कम-से-कम 4,500 शिक्षकों ने स्वैच्छिक तौर पर 2,484 स्कूलों के 39,000 विद्यार्थियों के लिए 2,125 समर कैम्प आयोजित किए।

चित्र 1: ख़ुद की हथेलियों की छाप को अपनी कल्पना का आकार देता विद्यार्थी

मेरे विचार से, शिक्षकों की इस स्वैच्छिक भागीदारी के पीछे सबसे पहला कारण यह था कि यह विचार आकर्षक और प्रभावी था तथा अभिभावकों सहित सभी हितधारक समर कैम्प के दौरान स्कूलों में ठोस परिणाम देख सकते थे। दूसरे, शिक्षक अपनी शिक्षण प्रक्रियाओं का आत्मनिरीक्षण करने को लेकर काफ़ी आत्मविश्वासी थे और उन्हें अपने विद्यार्थियों की ज़रूरतों के आधार पर यह चयन करने की स्वतंत्रता थी कि क्या और कैसे पढ़ाना है, चाहे विद्यार्थी किसी भी कक्षा या आयु के हों।

समर कैम्प इसलिए भी ख़ास होते हैं क्योंकि शिक्षक अपने विद्यार्थियों को बेहतर तरीक़े से सीखने में मदद करने के लिए नए और रोमांचक तरीक़े आज़माते हैं। वह उन तरीक़ों को चुनते हैं जो उन्हें लगता है कि उनके विद्यार्थियों की ज़रूरतों के लिए सबसे उपयुक्त हैं। हमने जिन शिक्षकों के साथ मिलकर ग्रीष्मकालीन शिविर आयोजित किए थे, उनके साथ हमने तीन मूलभूत प्रश्नों पर चर्चा की :

1. कक्षाओं के स्तर पर बँधे-बँधाए तयशुदा खाँचों से इतर समर कैम्प में शामिल होने वाले बच्चों के सीखने का वर्तमान स्तर क्या है?
2. समर कैम्प के लिए कौन-सी विषयवस्तु, शिक्षण-अधिगम सामग्री (टीएलएम) और गतिविधियों का चयन करें जो उनकी कक्षा के बच्चों के सीखने के स्तर के लिए उपयुक्त हों एवं उनके बच्चों की आवश्यकताओं / चुनौतियों पर कार्य करने और उनके सीखने को बेहतर करने में मददगार हों।
3. अवकाश के बाद स्कूल खुलने पर शिविर के किन पहलुओं को उनके शिक्षण अभ्यास के अभिन्न अंग के रूप में आगे बढ़ाया जा सकता है?

चित्र 2 : अपने बनाए हुए चित्र दिखाते हुए विद्यार्थी

शिक्षकों के लिए फ़ायदेमन्द

समर कैम्प का आयोजन शिक्षकों के लिए किया जाता है ताकि वह अपने अभ्यासों पर विचार कर सकें, और ऐसी रणनीतियाँ तलाश सकें जो बच्चों की शिक्षा पर बेहतर प्रभाव डाल सकें। चूँकि यह जुड़ाव स्वैच्छिक है और पाठ्यक्रम पूरा करने की बजाय सीखने पर केन्द्रित है, इसलिए इसमें आत्मनिरीक्षण और सुधार की ज़्यादा गुंजाइश है।

शिक्षकों को आकलन की बेहतर समझ प्राप्त हुई

बच्चों के आकलन और सुझाई गई गतिविधियों को अपनाने के बारे में शिक्षकों के विचार अलग-अलग थे। लेकिन अधिकांश शिक्षक इस बात पर सहमत थे कि सीखने के स्तर में सुधार के लिए बच्चों की वर्तमान क्षमताओं का आकलन करना, और एससीईआरटी / एनसीईआरटी के सीखने के प्रतिफलों और अनुशंसित शिक्षण पद्धति के आधार पर शिक्षण प्रथाओं का मूल्यांकन करना ज़रूरी है। हालाँकि शिक्षक अभी भी सीखने के प्रतिफलों को पूरी तरह से नहीं समझ पाए हैं, लेकिन हाल के प्रशिक्षण कार्यक्रमों ने उन्हें इस अवधारणा से भली-भाँति परिचित करा दिया है, और वह अब इसे अपने शब्दों में व्यक्त करने का प्रयास कर रहे हैं। कई कैम्पों में शिक्षकों ने इस ढाँचे के आधार पर मानसिक मानचित्र (माइंड मैप) या क्रियान्वयन की योजनाएँ बनाईं। शिक्षक शिक्षण केन्द्रों (टीएलसी) और क्लस्टर एवं ब्लॉक संसाधन केन्द्रों में उन्मुखीकरण सत्र हुए। इन सत्रों में शिविर के उद्देश्य, रूपरेखा एवं चरणबद्ध दिनवार योजना पर चर्चा हुई। इस चर्चा में क्लस्टर, ब्लॉक और ज़िला पदाधिकारी शामिल हुए और उन्होंने शिविर की परिकल्पना में अपने विचार भी रखे और सहयोग भी किया।

तालिका 1 : आकलन के लिए संकेतक और दिशा-निर्देश

क्रम सं.	बच्चों से क्या सीखने की अपेक्षा की जाती है?	कौन-सी गतिविधियाँ इसे प्राप्त करने में मदद कर सकती हैं?	मुझे कौन-से अभ्यास करने चाहिए?

ऊपर दी गई तालिका शिक्षण पद्धतियों के लिए एक स्व-आकलन उपकरण के रूप में कार्य करती है, और बच्चों के सीखने के स्तर को दर्शाती है। इससे शिक्षकों को केवल पाठ्यक्रम पूरा

करने की बजाय बच्चों के स्तर से ही शुरू करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। मुझे याद है कि एक व्हाट्सएप समूह में दो शिक्षकों ने एक वरिष्ठ शिक्षक की इस बात के लिए प्रशंसा की थी कि उन्होंने कैम्प में सर्कल टाइम के दौरान बालगीत को पहली बार अभिनय और हाव-भाव के साथ सुनाने का प्रयास किया। इससे न केवल उन शिक्षकों की शिक्षण प्रक्रिया में बदलाव आया, बल्कि बालगीत करवाने को लेकर उनकी स्वयं की धारणाओं में भी परिवर्तन हुए।

शिक्षकों ने बेहतर अभ्यासों को अपनाया

कई शिक्षक अब अपनी कक्षाओं में कविताएँ, अभिनय और पोस्टर शामिल कर रहे हैं, और इन उपकरणों के साथ पढ़ने और लिखने की ओर प्रगति कर रहे हैं। अकेले बेमेतरा ज़िले के बेरला ब्लॉक में, 43 से अधिक शिक्षक हर हफ़्ते कम-से-कम एक कहानी सुनाने के लिए कठपुतलियों का इस्तेमाल करते हैं।

समर कैम्प को आयोजित करने वाले अधिकांश शिक्षकों का उद्देश्य था कि इस कैम्प में विद्यार्थियों को भरपूर आनन्द आए और वह यहाँ होने वाली रोचक गतिविधियों के ज़रिए भाषा, गणित और अन्य विषयों के बुनियादी कौशल को सीख सकें। ज़्यादातर शिक्षकों को इस तरह के निःशुल्क शिविर लगाने में गर्व का अनुभव हुआ। आमतौर पर इन शिविरों पर आने वाली लागत कम-से-कम 5,000 रुपए होती है। यह अवसर अकसर निजी स्कूलों में ही उपलब्ध होता है। लेकिन जब शिक्षकों के प्रयासों से सरकारी स्कूलों में ये शिविर आयोजित हुए तो माता-पिता और बच्चों में अलग तरह की ख़ुशी और सन्तुष्टि दिखी।

चित्र 3 : समर कैम्प में समूह गतिविधि के दौरान चार्ट पर डिज़ाइन बनाते विद्यार्थी

चित्र 4 : समर कैम्प में अलग-अलग आकार की आकृतियों को जोड़कर मॉडल बनाने का आनन्द

कई शिक्षकों ने बच्चों को बातचीत और लेखन के ज़रिए अपने विचार साझा करने के लिए प्रोत्साहित किया। उन्होंने बच्चों के द्वारा लिखी रचनाओं, बनाए हुए चित्रों को दीवार पत्रिका में, प्रातःकालीन सभा की सामग्री के रूप में संकलित किया। इसके अलावा, शिक्षकों ने अपने विद्यार्थियों को ग़लतियों की चिन्ता किए बिना निडर होकर लिखने के लिए प्रोत्साहित किया। उन्होंने वह रचनाएँ कुछ पत्रिकाओं और समाचार पत्रों के साथ साझा कीं, और काफ़ी बच्चों की रचनाएँ अख़बारों, बाल पत्रिकाओं में प्रकाशित भी हुईं। ज़्यादातर शिक्षकों ने बच्चों को पढ़ने और लिखने के लिए प्रेरित करने के लिए कविताओं और बालगीत का इस्तेमाल करना शुरू कर दिया। शिक्षकों ने अपने कार्यकलापों और विद्यार्थियों के सीखने के प्रतिफलों में सुधार को ध्यान से देखना और उसे नोट करना भी शुरू किया।

समर कैम्पों का विस्तार

हम अवकाश के दौरान उन शिक्षकों के साथ समर कैम्प जारी रख सकते हैं जो अपने विद्यार्थियों को कक्षा-स्तरीय दक्षताएँ और कुछ दूसरे उच्च-स्तरीय कौशल सिखाना चाहते हैं। वैसे देखा जाए तो असली चुनौती कुछ और ही है। आँकड़ों से पता चलता है कि परीक्षाओं के बाद और गर्मियों की छुट्टी से पहले बहुत सारे बच्चे स्कूल नहीं आते। मैंने जिन स्कूलों का दौरा किया है, उनमें देखा है कि इस दौरान केवल 25-40 प्रतिशत विद्यार्थी ही स्कूल आते हैं। दूसरी ओर, कई बच्चे छुट्टियों के बावजूद समर कैम्प में शामिल होने के लिए उत्साहित थे। उपस्थिति में कमी का एक मुख्य कारण कक्षा में नियोजित गतिविधियों की कमी है। परीक्षा के बाद शिक्षक अकसर उत्तर-पुस्तिकाओं को जाँचने / ग्रेड करने पर ध्यान देने लगते हैं। इससे बच्चों को लगता है कि स्कूल का सत्र समाप्त हो गया है। लेकिन यह अनुभव किया गया है कि अगर पाठ और शिक्षण की गतिविधियाँ दिलचस्प और मज़ेदार हैं तो बच्चे स्कूल आने और सीखने के लिए उत्साहित होंगे। वह जीवन्त, रुचिकर और सार्थक सीखने के माहौल का बेसब्री से इन्तज़ार करते हैं।

समर कैम्पों से हमें जो भी अनुभव मिले हैं, वह बताते हैं कि आकलन से शिक्षण विधियों में सुधार होता है और अन्ततः यह सीखने को प्रभावित करता है। वार्षिक परीक्षाओं के बाद और गर्मियों की छुट्टी से पहले स्कूलों में मिलने वाले 15–25 दिनों का लाभ उठाना अच्छा होता है। इस विचार को क्रियान्वित करने के लिए, हमें बच्चों की वार्षिक परीक्षाओं में उनके उत्तरों का विश्लेषण करना ज़रूरी है। बच्चों को जहाँ परेशानी हो रही है ऐसी जगहों (अवधारणाओं) की पहचान करना और दक्षताओं में अन्तर को पाटने के लिए वांछित शिक्षण पद्धतियों की सूची बनाना एक अच्छा प्रयास हो सकता है। यदि हम ऐसा करने में सफल होते हैं तो हम विशिष्ट प्रतिफल और पद्धतियों को प्राप्त करने के लिए समयबद्ध अभियान चला सकते हैं। शिक्षकों के रूप में, आइए, हम ख़ुद से दो सवाल पूछें।

1. वार्षिक परीक्षा के तुरन्त बाद और स्कूल बन्द होने से पहले जो 15–20 दिन का समय है उसका बेहतर उपयोग बच्चों के सीखने के लिए कैसे करना चाहिए एवं इसकी एक ठोस योजना कैसे बनाई जानी चाहिए।
2. बच्चों द्वारा वार्षिक परीक्षा में दिए गए उत्तरों से मैं कौन-सी 'समस्याग्रस्त' दक्षताओं का पता लगा सकता / सकती हूँ जिन पर मैं इस दौरान काम कर सकूँ?

वार्षिक परीक्षाओं से प्राप्त जानकारी का इस्तेमाल करना

मेरे विचार में, बुनियादी साक्षरता और संख्या-ज्ञान (एफ़एलएन) और ग्रेड स्तर की दक्षताओं को बड़े पैमाने पर प्राप्त करने तथा अपने ख़ुद के अभ्यासों में सुधार करने के लिए हमें नियमित रूप से आकलन करना चाहिए। आकलन करने के लिए तालिका 2 में दिखाए गए ढाँचे का इस्तेमाल कर सकते हैं, और कार्य करने के लिए समयबद्ध कार्ययोजना बना सकते हैं।

तालिका 2

क्र. सं.	विद्यार्थी	प्रश्न 1	प्रश्न 2	प्रश्न 3	प्रश्न 4	प्रश्न 5
1	अमल	हाँ	हाँ	हाँ	नहीं	हाँ
2	अनामिका	हाँ	हाँ	नहीं	नहीं	हाँ
3	हफ़ीफ़ा	नहीं	हाँ	नहीं	हाँ	नहीं
4	जोसेफ़	नहीं	हाँ	नहीं	हाँ	नहीं
5	निकिता	नहीं	हाँ	नहीं	हाँ	नहीं

आइए, इस समस्या को समझने के लिए ज़मीनी स्तर से कुछ उदाहरण लें। इससे हमें इस मुद्दे के समाधान के लिए उपयुक्त तरीक़े, सामग्री और गतिविधियाँ विकसित करने में मदद मिलेगी। अर्ध-वार्षिक परीक्षा में, कक्षा V के हिन्दी पेपर में एक सवाल था जिसमें मैसूर के दशहरा उत्सव का वर्णन करना था। इस उत्सव के बारे में विद्यार्थियों ने एक अध्याय में पढ़ा था। यूँ तो यह सवाल आंशिक रूप से स्मृति-आधारित है, लेकिन यह विद्यार्थियों की पाठ को समझने की क्षमता का भी आकलन करता है। वह केवल वही पाठ याद रख सकते हैं जिसे उन्होंने असल में समझा हो। यदि कक्षा V के बच्चों को समझने में काफ़ी कठिनाई हो रही है तो हमें उनकी पढ़ने और समझने की क्षमता को सुधारने में मदद के लिए विशिष्ट गतिविधियों की योजना बनानी होगी।

एक सरल तरीक़ा यह हो सकता है कि जब शिक्षक अपनी कक्षाओं में पेपर को जाँचने / ग्रेड करने में जुटे हों तो बच्चे अपनी पसन्द की कोई भी पाठ्यपुस्तक या रीडिंग कॉर्नर से कोई किताब लेकर पढ़ सकते हैं। इसकी शुरुआत स्वयं के उदाहरण से हो सकती है। यानी, शिक्षक स्वयं किताब पढ़ते हैं, कहानी को अपने शब्दों में दोहराते हैं और उसे लिखते भी हैं। शिक्षक विषयवस्तु से 3–5 वस्तुनिष्ठ प्रकार के प्रश्न बना सकते हैं जो कक्षा के या उसके आस-पास के स्तर के विद्यार्थियों के लिए तैयार किए गए हों। कई शिक्षक ऐसे भी होते हैं जिनकी पढ़ने की आदत को बढ़ावा देने में रुचि नहीं होती है। ऐसा इसलिए, क्योंकि या तो उनकी पढ़ने की आदत छूट चुकी होती है या उन्होंने अपने स्कूली जीवन के दौरान इस आदत को विकसित ही नहीं किया होता। शिक्षक अपने-आप को पढ़ने की चुनौती दे सकते हैं जिसमें वह प्रतिदिन रीडिंग कॉर्नर से एक किताब लेकर पढ़ें, और 20 दिनों में 20 किताबें पढ़ने का लक्ष्य रखें। यह शिक्षक और रीडिंग कॉर्नर, दोनों के बारे में बच्चों की धारणा को सकारात्मक रूप से प्रभावित करेगा। प्रारम्भिक कक्षाओं के लिए तरीक़ा थोड़ा अलग हो सकता है, जहाँ हम 90 प्रतिशत बच्चों के लिए 15 दिनों के भीतर सरल वाक्य पढ़ने और लिखने का लक्ष्य रख सकते हैं। वह चित्रों और पाठ वाले थीम कार्ड पर ध्यान देते हुए राज्य द्वारा एफ़एलएन किट में प्रदान किए गए 100 से अधिक फ़्लैशकार्ड से पढ़ना और लिखना शुरू कर सकते हैं। जब विद्यार्थी शब्दों को लेकर सहज हो जाएँ तो हम उन शब्दों का इस्तेमाल करते हुए सरल वाक्य बना सकते हैं।

चित्र 5 : बिन्दियों वाला खेल और गिनना

जैसे– *यह एक आम है,* और फिर इस वाक्य में दूसरे फलों के नामों का प्रयोग कर सकते हैं।

> **समर कैम्पों से हमें जो भी अनुभव मिले हैं, वह बताते हैं कि आकलन से शिक्षण विधियों में सुधार होता है और अन्ततः, यह सीखने को प्रभावित करता है।**

जब शिक्षक इस प्रक्रिया का मार्गदर्शन करते हैं तो यह तरीक़ा पढ़ने और लिखने, दोनों को बढ़ावा देता है। इसी प्रकार, गणित में हम कक्षा के स्तर के आधार पर 2 से 4 अंकों तक की संख्याओं को विस्तारित करने पर ध्यान दे सकते हैं। इसके बाद स्थानीय मान, बुनियादी संक्रियाओं और इबारती सवालों की समझ विकसित कर सकते हैं। प्रत्येक बच्चे को बुनियादी संक्रियाओं में कम-से-कम 25 'इबारती सवाल' पूरे करने चाहिए, यानी कुल 100 सवाल। कल्पना कीजिए कि एक पुस्तिका में कक्षा 5 के 15 बच्चों द्वारा 15 से 20 दिनों में बनाए गए 1,500 'इबारती सवाल' हैं। किसी दूसरे प्रोजेक्ट में मापन और डेटा प्रबन्धन भी करवाया जा सकता है।

प्रत्येक कार्य वार्षिक परीक्षा से प्राप्त जानकारी से संचालित होना चाहिए। हमें प्रतिबद्धता के साथ आत्मनिरीक्षण करना चाहिए। हमने जिन कमियों की पहचान की है उन्हें पाटने के लिए हमें अपनी प्रक्रियाओं को बेहतर बनाने पर ध्यान देना चाहिए, न कि यह कि हम बच्चों को उन दक्षताओं के लिए दोषी मानें जिन्हें उन्होंने अभी हासिल ही नहीं किया है।

मुनीर पिछले 9 सालों से अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन में कार्यरत हैं। उन्होंने अज़ीम प्रेमजी यूनिवर्सिटी से एमए की शिक्षा प्राप्त की है। उन्हें सार्वजनिक शिक्षा प्रणाली की गहरी समझ है और इसे बेहतर बनाने के लिए वह कटिबद्ध हैं।

सम्पर्क : muneer.c@azimpremjifoundation.org

शिक्षक का नज़रिया : विद्यार्थी का मनोबल और सीखना

राजू पटेल

कभी-कभी विद्यालयों में यह देखने को मिलता है कि कुछ बच्चों का स्वभाव बिल्कुल अलग होता है। यह अनुभव एक ऐसी बच्ची के बारे में है जो कक्षा में चुप रहती थी। बतौर शिक्षक जब ऐसे बच्चे हमारे सामने आते हैं तो ज़ेहन में यह सवाल आता ही है कि क्या यह बच्चा या बच्ची बचपन से ही ऐसी है। और यदि ऐसा नहीं है तो वे कौन-से कारण हैं जिनकी वजह से बच्चे में ऐसा बदलाव आया?

विद्यालय में प्रवेश

मेरे लिए यह एक सुखद एहसास था जब मैंने पहली बार बतौर एक शिक्षक विद्यालय में प्रवेश किया। प्रथम दृष्टया विद्यालय का वातावरण मुझे अच्छा लगा। इस विद्यालय में लगभग 200 बच्चे और 7 शिक्षकों के अलावा कई बीएड इंटर्नशिप के साथी अपनी सेवाएँ दे रहे थे। विद्यालय के पहले दिन ही शिक्षक साथियों ने साझा किया कि पाँचवीं से आठवीं कक्षाओं में 30 बच्चे ऐसे हैं जिन्हें अभी हिन्दी पढ़ना और लिखना नहीं आता है। इस वजह से वह दूसरे विषयों को भी ठीक से नहीं समझ पाते हैं। शिक्षकों की बातों को समझते हुए मैंने दो स्तरों पर बच्चों के साथ काम करने की योजना बनाई। पहला, कक्षा के समय विषय से सम्बन्धित बातें होंगी, और दूसरा, अतिरिक्त समय में ज़रूरतमन्द बच्चों के साथ भाषा पर अलग से काम किया जाएगा।

बच्चों से पहचान

वह पाँचवीं कक्षा में मेरा पहला दिन था। मैंने अपना परिचय दिया और बच्चों से उनका परिचय बताने को कहा। सभी बच्चों ने अपना परिचय बड़ी सहजता के साथ दिया, लेकिन एक लड़की, जिसका नाम प्राची था, वह परिचय देते हुए कुछ असहज थी। दुबली, पतली और बिल्कुल मौन प्राची दूसरे लड़के और लड़कियों से बिल्कुल अलग दिखती थी। यह भी देखा कि जैसे ही मैंने प्राची को उसका परिचय बताने के लिए कहा, सारे बच्चे अचानक ज़ोर-ज़ोर से हँसने लगे। मैं आश्चर्यचकित था कि आख़िर यह हँस क्यों रहे हैं। प्राची उदास चेहरे के साथ मुँह नीचे करके खड़ी थी। थोड़ा ठहरकर, दुबारा उससे उसका परिचय जानना चाहा, मगर अब भी वह बिल्कुल चुप थी। जितनी

> **मेरी नज़र में सभी बच्चे समान महत्त्व के थे, और सभी में सीखने-समझने की क्षमता का निर्माण करना मेरा पहला लक्ष्य था।**

चित्र 1 : पढ़ने का आनन्द और एक दूसरे का साथ

भी बार प्राची से उसका नाम जानने का प्रयास किया, उतनी ही बार दूसरे बच्चे हँसे। आख़िरकार, मैंने दूसरे बच्चों से पूछा, "क्या बात है, यह बोल क्यों नहीं रही और तुम सब क्यों हँस रहे हो?" जैसे ही बच्चों ने यह सुना, वे और ज़ोर से हँसने लगे। मैं भौचक होकर बच्चों को देख रहा था, और मन ही मन सोच रहा था कि कहीं मैंने कुछ ग़लत तो नहीं बोल दिया। इतने में अपनी हँसी रोकते हुए एक छात्रा ने कहा, "सर, यह बोलती है।" अब मैंने एक बार फिर प्राची की तरफ़ नज़रें कीं। मैंने देखा कि वह अभी भी उदास चेहरे के साथ मुँह नीचे किए खड़ी थी। मेरे विद्यालय के पहले दिन की पहली कक्षा ऐसी होगी, मैंने कल्पना भी नहीं की थी। पहले दिन की इस पहली कक्षा ने मुझे यह सोचने पर विवश किया कि आख़िर और क्या बेहतर किया जा सकता था। इस उधेड़बुन ने मुझे कुछ नया और रचनात्मक करने के लिए प्रेरित किया। दूसरे दिन मैंने बच्चों को पर्यावरण विषय का एक

पाठ पढ़ाना शुरू किया। पाठ पढ़ाते हुए कक्षा के हर बच्चे की गतिविधि व उनके स्तर को समझने का प्रयास किया। बच्चों से पाठ से सम्बन्धित सवाल भी किए ताकि यह जान सकूँ कि जो बता रहा हूँ उसे वह समझ भी पा रहे हैं या नहीं; या कहाँ तक समझ पा रहे हैं? लगभग सभी बच्चे बातचीत में शामिल हुए। लेकिन आज भी प्राची चुपचाप मुँह नीचे किए खड़ी रही, और बाक़ी के बच्चे उसे देखकर हँस रहे थे।

मैं पता नहीं कर पाया था कि प्राची को पढ़ना-लिखना आता है या नहीं। अगले दिन मैंने विशेष ज़रूरत वाले बच्चों की अलग से कक्षा लगाई। प्राची भी इन बच्चों में शामिल थी। मुझे लगा कि प्राची किताब नहीं पढ़ पाती है, लिख नहीं पाती है, शायद इस कारण दूसरे बच्चे उस पर हँसते हैं। लेकिन मैं यह भी सोच रहा था कि बच्चों में इस बात को लेकर हँसने की प्रवृत्ति यूँ ही नहीं बनी होगी, कोई विशेष कारण अवश्य रहा होगा। इसकी पड़ताल हेतु मैंने प्राची व दूसरे बच्चों के व्यवहार और क्रियाकलापों को गहराई से समझना शुरू किया। मैंने ध्यान दिया कि लंच के समय, कक्षा के सभी बच्चों के बाहर जाने के बाद अन्त में, प्राची कक्षा से बाहर निकलती थी। अकेली। कुछ दिनों के बाद भी मुझे यह स्पष्ट नहीं हो पा रहा था कि दूसरे बच्चों ने प्राची को अकेले छोड़ दिया है या प्राची ने ख़ुद उन्हें।

प्राची, मैं और बाक़ी शिक्षक

प्राची की विद्यालय में बनी इस छवि के लिए प्राची ख़ुद ज़िम्मेदार थी या दूसरे बच्चे या कार्यरत शिक्षक साथी; या इसके पीछे सभी की सामूहिक भूमिका थी? यह एक विचारणीय प्रश्न था। मैंने प्राची के प्रति दूसरे बच्चों और शिक्षकों के दृष्टिकोण को भी समझने का प्रयास किया। बातचीत में सभी शिक्षकों ने कहा कि प्राची को न तो पढ़ना-लिखना आता है न ही वह कुछ समझती है, इसलिए पूछने पर कुछ बता भी नहीं पाती है। शिक्षकों की अनुमति से उनकी कक्षाओं का अवलोकन करके उनकी कक्षागत प्रक्रियाओं को भी समझने का प्रयास किया।

> मैंने पाया कि कक्षा में अध्यापन के दौरान शिक्षकों का ध्यान केवल उन्हीं विद्यार्थियों पर केन्द्रित होता था जो तुरन्त ही किसी प्रश्न का उत्तर दे देते थे या किताब पढ़ना अथवा लिखना जानते थे। प्राची शिक्षकों की नज़रों से औझल ही रहती थी। इसके परिणामस्वरूप प्राची ख़ुद को शिक्षक की नज़रों में उपेक्षित महसूस करने लगी थी।

यह भी महसूस किया कि जब कभी भी शिक्षकों द्वारा बच्चों से सवाल किया जाता था तब प्राची और उसके जैसी दूसरी छात्राओं का जवाब देना और न देना, दोनों ही शिक्षकों के लिए हँसी या क्रोध का कारण बनते थे, क्योंकि इनका जवाब शिक्षकों की अपेक्षाओं के अनुरूप नहीं होता था। शिक्षक और बच्चे ऐसा व्यवहार करने के आदी हो गए थे। उन्हें इसमें कुछ भी ग़लत नहीं लगता था। शिक्षकों के ऐसे व्यवहार ने धीरे-धीरे प्राची को चुप्पी की ओर धकेल दिया था।

> प्राची के सन्दर्भ में शिक्षकों की तरफ़ से जान-बूझकर किसी नकारात्मक चीज़ को बढ़ावा देने का प्रयास नहीं किया गया था, लेकिन अप्रत्यक्ष रूप से ऐसा कुछ हो रहा था जिसकी अपेक्षा नहीं थी। एक शिक्षक के रूप में इन चीज़ों पर बारीक़ी से ध्यान न देने पर ऐसी समस्याएँ किसी के भी सामने आ सकती हैं, और हमें इस बात का भान तक भी नहीं हो ऐसा काफ़ी सम्भव है।

समय के साथ-साथ हम ऐसी प्रक्रियाओं के इतने अभ्यस्त हो जाते हैं कि हमें इनमें कोई ख़ामियाँ ही नज़र नहीं आती हैं।

की गई पहल

इन सारी बातों को जानने-समझने के पश्चात्, प्राची को अलग से समय देने और उसके साथ निरन्तर बातचीत करने का प्रयास शुरू किया। उसका विश्वास हासिल करने में मुझे लम्बे समय तक संघर्ष करना पड़ा। लंच के समय जब सभी बच्चे बाहर गेंद खेलते, प्राची कमरे के अन्दर अकेले गेंद से खेलती थी। मैंने उसके साथ गेंद खेलना शुरू किया। जब मैं उससे गेंद माँगता, वह मुझे दे देती और ख़ुद बैठ जाती। मैं जान-बूझकर गेंद उसके हाथ में न फेंककर इधर-उधर फेंक देता, और उससे गेंद लाने के लिए कहता ताकि इसी बहाने वह मुझसे बात करे। एक-दो दिनों तक वह शान्तिपूर्वक गेंद लाकर मुझे देती रही, लेकिन कुछ समय के बाद कहने लगी, "सर, आप तो गेंद सही से नहीं फेंक रहे हो!" यह सुनकर मुझे काफ़ी ख़ुशी हुई कि चलो, इसने कुछ बोला तो सही। धीरे-धीरे वह मुझसे बोलने लगी थी। कुछ और समय बीत जाने के बाद, वह मुझसे ज़्यादा सहज महसूस करने लगी। वह मेरी बातों और प्रश्नों को सुनकर उनका उत्तर देने का प्रयास करती थी। मैं किताब के प्रश्नों को उसके व्यावहारिक अनुभव और सन्दर्भ के साथ जोड़कर पूछता ताकि वह सहज महसूस कर सके, और कुछ बोल पाए। लेकिन दूसरे बच्चों के बीच में उससे कुछ पूछने पर वह चुप हो जाती थी। शायद उसे तब भी अपने-आप पर यक़ीन नहीं था कि वह सही उत्तर बता पाएगी। उसे लगता था कि अगर उत्तर ग़लत हुआ तो दूसरे बच्चे उस पर हँसेंगे। उसे उत्तर के ग़लत होने का उतना डर नहीं था जितना बच्चों के हँसने का था। मेरी बातचीत उसके साथ जारी रही। धीरे-धीरे वह बाक़ी बच्चों के हँसने के बाद भी अपनी बातों को रखने का प्रयास करती, और उसका यही विश्वास अब उसे हौसला देने लगा था। दूसरी तरफ़, अन्य बच्चों के साथ भी इस दिशा में निरन्तर बातचीत जारी रही। इसका परिणाम यह रहा कि समय के साथ दूसरे बच्चों ने भी प्राची की बातों को सुनना और उन्हें स्वीकार करना शुरू कर दिया। अब प्राची मौखिकतौर पर प्रश्नों का उत्तर देने लगी थी। कभी-कभी कोई ऐसा प्रश्न आता था जिसका उत्तर कक्षा के बाक़ी बच्चे नहीं दे पाते थे, प्राची उसका उत्तर दे पाती थी। कभी-कभी उसे चुप रहने के लिए भी कहना पड़ता ताकि दूसरे बच्चे भी जवाब दे पाएँ। उसका उदास चेहरा अब खिलने लगा था, और झुकी गर्दन ऊपर उठने लगी थी।

चित्र 2 : साथ मिलकर सीखते विद्यार्थी

चित्र 3 : खेल-खेल में सीखने को प्रोत्साहित करती शिक्षिका

चुनौती

इस पूरे प्रयास में एक नकारात्मक पक्ष भी था। जब मैंने प्राची और उस जैसी दूसरी छात्राओं को विशेष सहयोग देना शुरू किया तो कक्षा के बाक़ी बच्चों का व्यवहार मेरे और इन बच्चों के प्रति नकारात्मक होने लगा। उनकी शिकायत रहती कि मैं हमेशा प्राची को ही आगे रखता हूँ। कुछ बच्चों ने मुझसे बोलना और मेरे सवालों का जवाब देना भी बन्द कर दिया था। यह मेरे लिए एक और बड़ी समस्या थी। हालाँकि यह स्थिति बहुत लम्बे समय तक नहीं रही, लेकिन जब तक रही मेरे लिए एक बड़ी समस्या थी। इसका एक कारण शायद यह था कि मेरा ध्यान भी अन्य शिक्षकों की तरह कुछ विशेष बच्चों पर न रहकर बच्चों की ज़रूरत के अनुसार हो गया था जिसके कारण इन बच्चों को लगा होगा कि शायद उनकी प्राथमिकता समाप्त हो रही

> **मैं किताब से जुड़े सवालों को उसके व्यावहारिक अनुभव और सन्दर्भ के साथ जोड़कर पूछता हूँ ताकि वह सहज महसूस कर सके, और कुछ बोल पाए।**

है। हालाँकि मैंने बच्चों की समस्याओं और ज़रूरतों के अनुसार अपने ध्यान का प्रसार करने का प्रयास किया था। अर्थात्, मेरी नज़र में सभी बच्चे समान महत्त्व के थे, और सभी में सीखने-समझने की क्षमता का निर्माण करना मेरा पहला लक्ष्य था। ख़ैर, यह एक लम्बा प्रयास था, और जब तक मैं विद्यालय में रहा तब तक यह जारी रहा।

राजू पटेल जुलाई 2018 से अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन, प्रतापगढ़ (राजस्थान) में बतौर ब्लॉक कॉर्डिनेटर कार्यरत हैं। शैक्षिक विमर्श में प्रतिभाग करने और बाल साहित्य पढ़ने में उनकी विशेष रुचि है।

सम्पर्क : rajoo.patel@azimpremjifoundation.org

कक्षा में रोल प्ले के माध्यम से सीखना

आशा सिंह

कलाओं की प्रकृति कुछ ऐसी होती है कि इन पर आधारित सामूहिक गतिविधियों में बच्चे ज़्यादा रुचि लेते हैं। इनमें सभी बच्चे भागीदारी कर सकते हैं। कला गतिविधियों के उपयोग से बच्चों को कठिन अवधारणाएँ सरलता से समझाने में मदद मिलती है। यह लेख शिक्षक द्वारा योजना बनाकर रोल प्ले और रचनात्मक नाटक कला के माध्यम से किए गए कुछ ऐसे ही प्रयासों के उदाहरण प्रस्तुत करता है।

एक कक्षा में बच्चे इस अवधारणा से जूझ रहे थे कि पृथ्वी की गति से दिन और रात कैसे बनते हैं। घूर्णन और परिक्रमण की दोहरी गति की वजह से बच्चों को यह बात समझने में मुश्किल हो रही थी। इसलिए शिक्षिका ने कहा, ''चलो, एक खेल खेलते हैं।'' उन्होंने तीन बच्चों को सूर्य, चन्द्रमा और पृथ्वी की भूमिकाएँ दीं। सूर्य स्थिर होने के कारण एक स्थान पर खड़ा था। जो बच्चा पृथ्वी बना था। वह अपनी जगह पर घुमा और साथ ही उस बच्चे का भी गोलाकर में चक्कर लगाया और साथ ही उस बच्चे का भी चक्कर लगाया जो सूर्य बना हुआ था। तुरन्त एक बच्चे ने बेहद उत्साह के साथ बताया, ''जब वह पृथ्वी बना बच्चा एक स्थान पर घूम रहा होता है तो दिन और रात बनते हैं, और जब वह सूर्य के चारों ओर एक चक्कर पूरा करता है तो एक पूरा वर्ष होता है।'' सभी बच्चे ख़ुशी से ताली बजाने लगे क्योंकि उन्होंने बड़ी आसानी से इस घटना को समझ लिया था।

इस तरह के खेल खेलने के अनुभवों से बच्चों के मन में भावनात्मक सुरक्षा आती है जिसके चलते वह अपनी कठिनाइयों को दूसरों से साझा करने के लिए सहज रहते हैं। बच्चों को ऐसे समूह में शामिल होकर सीखने में सन्तोष व ख़ुशी मिलती है जिसमें किसी समस्या का हल मिल-जुलकर खोजने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। भावनात्मक सुकून व्यक्ति को मुश्किल चीज़ों को समझने और उनके हल खोजने के लिए और अधिक प्रेरित करता है।

चित्र 1: रोल प्ले के दौरान साथियों को उनकी भूमिकाओं के बारे में बताता एक विद्यार्थी

> **बच्चों द्वारा समूह में निर्णय लेना उनके लिए प्रभावशाली सीख बन जाती है। इससे उनका आत्मविश्वास बढ़ता है।**

रचनात्मक नाटक पाठों के लाभ

हमारे देश में हुए कई अध्ययनों ने बताया है कि कला के माध्यम से सिखाए जाने के उत्साहवर्धक परिणाम मिले हैं। इससे बच्चों में सीखने की जिज्ञासा बढ़ जाती है और वे मज़े से सीखते हैं। विशेष योग्यता वाले बच्चों के साथ किए गए एक अध्ययन में बताया गया है कि संगीत और गति का प्रयोग करने से इन बच्चों में शारीरिक अंगों के बारे में जागरूकता बढ़ाने और दिशाओं की समझ बनाने में मदद मिलती है। इनके इस्तेमाल से नियमित बातचीत में शारीरिक दूरी के लिए सामाजिक मानदण्डों को भी बेहतर बनाने के अच्छे परिणाम मिले हैं। ऐसी ही एक विधा नाटक है। नाटक बहुत आसानी से पारिवारिक सम्बन्धों और रिश्तों को जोड़ने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। जब बच्चे पाठ्यपुस्तक पर आधारित पाठों के उत्तर देने की चिन्ता किए बिना सरल कामों को पूरा करके सीखते हैं तब वह अधिक आत्मविश्वासी बनते हैं। इससे सीखने और कक्षा की गतिविधियों में शामिल होने की उनकी इच्छा व उत्सुकता बढ़ती है।

नाटक का उपयोग दृष्टिबाधित बच्चों को स्थान की अवधारणा समझाने के लिए भी किया गया है। जिन बच्चों में सामाजिक कौशल की कमी होती है उनके लिए ये नाटक विभिन्न स्थितियों में सामाजिक व्यवहार पर विचार करने में मदद करते हैं। इसके लिए बच्चों को नाटक का दृश्य दिखाकर उस पर आपस में चर्चा करने को कहा जाता है। उदाहरण के लिए, चौथी कक्षा में बच्चों को एक ऐसा दृश्य दिखाया गया जिसमें एक बच्चा डबलरोटी का पैकेट ख़रीदने के लिए दूसरे कामों में व्यस्त दुकानदार का हाथ खींच रहा है। सभी बच्चे इस हास्यपूर्ण दृश्य को देखकर हँस पड़े क्योंकि उन्होंने इस तरीक़े से किसी बच्चे को दुकानदार का ध्यान खींचकर सामान ख़रीदते नहीं देखा था। इस पर हुई चर्चा में बच्चे अपनी राय देने लगे और सबने मिलकर निष्कर्ष निकाला कि ''हम उन लोगों के साथ निकटता का व्यवहार नहीं करते हैं जिनसे हमारी अच्छी जान-पहचान न हो।''

इस प्रक्रिया के बहुत अधिक सहयोगी होने से बच्चों में त्वरित सोच, समस्या-समाधान और एकाग्रता जैसे गुण विकसित होते हैं। इसके साथ ही, यह प्रक्रिया बच्चों में सोचने, विचारने और विश्लेषण करने के कौशल विकसित करती है। विद्यार्थियों के साथ नाटक तैयार करने से अवधारणा-निर्माण, सहयोग और प्रतिबद्धता के गुणों में वृद्धि होती है। यह सभी कौशल जीवन के लिए ज़रूरी हैं।

इम्प्रोवाइज़ेशन की तकनीकें बच्चों के दिमाग़ को जीवन्त बनाती हैं

कक्षा में मिल-जुलकर लिखी गई कहानी को पाठ्यपुस्तक के किसी भी पाठ या बच्चों की रुचि वाले किसी विषय से जोड़ा जा सकता है। जैसे-जैसे विद्यार्थी लिखते हैं, वैसे-वैसे वह नाटक में आने वाले चरित्रों को गढ़ते जाते हैं। इस दौरान वह नाटक के परिदृश्य (सेटिंग), कथानक और समाधान के बारे में सोचते हैं। बातचीत के द्वारा कहानी लिखने की प्रक्रिया विद्यार्थियों को ज़्यादा आसान, ज़्यादा मज़ेदार और ज़्यादा दिलचस्प लगती है। बनिस्बत इसके कि विद्यार्थियों को काग़ज़ पर कहानी लिखने को कहा जाए और वह यह सुनिश्चित करें कि उसमें कहानी के सभी तत्त्व शामिल हों। काग़ज़ और पेंसिल से काम करना उन विद्यार्थियों के लिए ज़रा मुश्किल होता है जिन्हें भाषा और लेखन में कठिनाई होती है। हालाँकि, जब एक बार कहानी बन जाती है तब बच्चे अभिनय करने से पहले इसे ख़ुद ही लिख लेना चाहते हैं। आमतौर पर बच्चे स्वाभाविक रूप से अपने विचारों को काग़ज़ पर लिखना चाहते है, इसे प्रोत्साहित करना चाहिए, इससे उनमें लिखने-पढ़ने के कौशल का विकास होता है।

> **जब बच्चे पाठ्यपुस्तक पर आधारित पाठों के उत्तर देने की चिन्ता किए बिना सरल कामों को पूरा करके सीखते हैं तब वह अधिक आत्मविश्वासी बनते हैं।**

इम्प्रोवाइज़ेशन एक ऐसी महत्त्वपूर्ण प्रक्रिया है जो बच्चों के दिमाग़ को सक्रिय करती है क्योंकि इसके लिए गहन सोच की आवश्यकता होती है जिससे बच्चों के दिमाग़ को चुनौती मिलती है। इस तरह के अभ्यास, पाठ को समझने, थीम की पहचान करने और भाषा को प्रभावी बनाने के लिए उपयोगी होते हैं।

जब किसी स्थिति को बच्चों के सामने प्रस्तुत किया जाता है तो वह उसके अर्थ को समझ लेते हैं, उसे अपने अनुभवों से जोड़ लेते हैं और उसे अपनी आज की वास्तविकता में समायोजित कर लेते हैं। हालाँकि, एक टीम का हिस्सा होने के नाते, वह मिल-जुलकर कार्य करने के लिए सहयोग करते हैं। इस सामूहिक प्रयास में, उनकी प्रस्तुति की गुणवत्ता, सहयोग की सीमा पर निर्भर करती है। सभी बच्चों की भागीदारी की ख़ातिर प्रयास करने के लिए तरह-तरह के सन्दर्भों और विषयों को खोजने की आवश्यकता होगी जो हर प्रकार के बच्चों को आकर्षित करें तथा विविध वास्तविकताओं पर आधारित हों।

तालिका 1: इम्प्रोवाइज़ेशन के लिए सुझाव के रूप में कुछ प्रस्तावित थीम

विषयवस्तु	उदाहरण
अकादमिक	कक्षा में अन्तःक्रिया, भाषाओं की विविधता, अभिभावक-शिक्षक सम्बन्ध
परिस्थिति-आधारित	रेलवे स्टेशन, बाज़ार, मेला आदि के दृश्यों का चित्रण
रिश्ते पर आधारित	शिशु के साथ एक दम्पति, स्कूल जाने वाले बच्चों का परिवार, किशोर बच्चों वाला परिवार
चरित्र पर आधारित	विशेष शिक्षक, जादूगर, भूत, भिखारी, आदि
कहानियाँ	6-7 के समूह में, बच्चे कहानियाँ साझा करते हैं। इनमें से अभिनय के लिए कोई एक कहानी चुनते हैं। वह कहानी के पात्रों की भूमिका निभाते हैं। इससे उन्हें सामाजिक, सांस्कृतिक और पौराणिक पात्रों से जुड़ने का अवसर मिलता है।
व्यक्तिगत अनुभव	बच्चे समूह में अपनी उन यादों पर चर्चा करते हैं जो उन्हें सबसे महत्त्वपूर्ण लगती हैं। इनमें से एक याद को इम्प्रोवाइज़ेशन के लिए चुनते हैं। इस तरह के व्यक्तिगत क़िस्से साझा करने से समूह को एक दूसरे के सामाजिक-भावनात्मक सन्दर्भों से परिचित होने का अवसर मिलता है।
रंगमंच की सामग्री का उपयोग	बच्चों को छड़ी, बोतल, थैला और किताब जैसी कुछ रंगमंच की सामग्री दी जा सकती है। इस सामग्री से उन्हें एक कहानी का अभिनय करने को कहा जाता है। इससे बच्चे अपनी कल्पना को ख़ुद की सामाजिक और भौतिक दुनिया से जोड़ पाते हैं।

केस स्टडी

मैं एक केस स्टडी का उपयोग यह दिखाने के लिए कर रही हूँ कि नियमित कक्षाओं में कला गतिविधियों का उपयोग करने से कक्षा में कोई रुकावट नहीं आती और न ही ज़्यादा समय लगता है। दिल्ली निवासी, बाल विकास विषय के एक स्नातकोत्तर विद्यार्थी ने कक्षा तीन के हिन्दी पाठ्यक्रम से एक पाठ को अभिनय के ज़रिए पढ़ाने का प्रयास किया। परिणामस्वरूप बच्चों द्वारा पाठ को याद रखने के तरीक़े में गुणात्मक अन्तर नज़र आया। यह बात उनके उत्तरों और प्रदर्शन से पता चली। यही नहीं, पारम्परिक चॉक-एंड-टॉक शिक्षण विधि की तुलना में नाटक गतिविधियों में शामिल होने वाले बच्चों को कुछ अधिक अंक भी मिले।

तरीक़े और प्रक्रियाएँ

पहला दिन

किसी मनोरंजक और दिलचस्प चीज़ से शुरुआत करना सबसे अच्छा होता है। नए सत्र की शुरुआत में, शिक्षक ने बच्चों से परिचित होने के लिए नाम के खेल से शुरुआत की। इससे आपसी तालमेल बनाने और बच्चों को अपनी झिझक मिटाने में भी मदद मिलती है।

इस खेल में बच्चे एक घेरे में खड़े हो गए और सबने एक-एक कर किसी एक मनोभाव के साथ अपना नाम पुकारा। उदाहरण के लिए, पवना ने अपने हाथ ऊपर उठाए और उछलकर तेज़ आवाज़ में कहा, ''पवना!'' शिक्षक पीछे हट गए और बोले, "हे भगवान, पवना!''

सभी बच्चे ऐसा करने में सहज नहीं होंगे। मौक़े पर देखने, जल्दी से सोचने और तत्काल फ़ीडबैक देने से कक्षा में उत्साह बढ़ेगा। इसके बाद शिक्षक ने विद्यार्थियों से यह सोचने के लिए कहा कि वह अपने रिश्तेदारों के घर कैसे जाते हैं और वह फिर इसे करके दिखाएँ। कक्षा में तो जैसे भगदड़ मच गई। कुछ ने दोपहिया वाहन चलाए तो कुछ ने कार चलाने या ऑटो-रिक्शा में बैठने का नाटक किया। उत्साहित विद्यार्थी एक दूसरे से टकराए और हंगामा करने लगे। हमें इस अव्यवस्था को ठीक करने के तरीक़े खोजने होंगे। जैसे– गेंद को ड्रिबल करना या हाथ ऊपर करके 'तारे-तारे' जैसा मंत्रोच्चार करना। यह आज़माया हुआ तरीक़ा है, और कक्षा में अनुशासन के लिए जादू जैसा काम करता है।

पहले सत्र को समाप्त करने के लिए शिक्षक ने बच्चों से पाठ्यपुस्तक का एक विशेष पृष्ठ खोलने के लिए कहा। शिक्षक ने पंक्तियों के अनुसार पाठ के भाग निर्धारित किए (एक या दो पंक्तियाँ, आप पाठ को कैसे विभाजित करते हैं, यह इस पर निर्भर करता है)। उस पाठ में यातायात / ट्रैफ़िक, महत्त्वपूर्ण स्थानों और शहर में नए विकास के बारे में बताया गया था। बच्चों को नीचे दिए गए विषयों के आधार पर समूहों में बाँटा गया और उनसे सम्बन्धित भाग को पढ़ने को कहा गया। फिर पढ़े हुए को चित्र, नाटक या अन्य क्रियाओं के माध्यम से कहानी के रूप में बताने के लिए कहा गया।

- यातायात / ट्रैफ़िक
- ऐतिहासिक और महत्त्वपूर्ण पर्यटन स्थल; और
- शहर में विकास

दूसरा दिन

बच्चों को उनके समूहों में बैठाया गया और उनसे कहा गया कि उन्हें पाठ का जो भाग दिया गया है उसके बारे में अपनी समझ को व्यक्त करने के लिए अभिनय की योजना बनाएँ। शिक्षक ने चारों ओर घूमकर चर्चा की, विषयवस्तु को कहानी के रूप में कैसे व्यक्त किया जाए और प्रत्येक समूह से संवाद लिखने के लिए कहा।

'यातायात समूह' ने फ़्लाईओवर वाली सड़कें बनाईं, और इन्हें 'महत्त्वपूर्ण पर्यटन स्थल समूह' के विचारों से जोड़ा। जल्द ही तीनों टीमों को एहसास हुआ कि पाठ के विभिन्न भागों को जोड़ने के लिए पूरी कक्षा को सहयोग करना होगा। जब चित्रों में जगह की कमी महसूस हुई तो उन्हें इम्प्रोवाइज़ेशन वाली तकनीक का उपयोग करके चिड़ियाघर या बाज़ार जैसे स्थानों के बारे में बताने के लिए कहा गया।

कुछ बच्चों ने संवाद लिखे; यह ज़रूरी नहीं था कि वह पूरी तरह से पाठ से सम्बन्धित संवाद ही लिखें, बल्कि उन्हें जो समझ में आया उसका ध्यान रखना था। कुछ समूहों ने इस विषय पर काम किया कि सेट डिज़ाइन और फ़्लाईओवर या ट्रैफ़िक लाइट आदि को कैसे सुधारा जाए। बच्चों ने अपनी तरह-तरह की प्रतिभाओं का इस्तेमाल किया और वह बेहद ख़ुश हुए।

चित्र 2 : रोल प्ले के दौरान सीखना भी और मज़ेदारी भी

चित्र 3 : एक दूसरे से सीखते हुए ख़ुश होते विद्यार्थी

चित्र 4 : संवाद अदायगी के दौरान अपने सीखे हुए की साझेदारी

तीसरा दिन

बच्चे प्रस्तुति का बेसब्री से इन्तज़ार कर रहे थे और अपनी बारी के अनुसार अभिनय करने के लिए रंगमंच की सामग्री के साथ तैयार थे। अभिनय करते समय भी उन्होंने पाठ के वाक्यों को याद किया और तथ्यों के बारे में एक दूसरे को ठीक किया। इस तरह बच्चों पर पाठ याद करने का दबाव भी नहीं पड़ा और पाठ का दोहराव भी हो गया।

वास्तविक अभिनय 15 मिनट से अधिक समय का नहीं था, लेकिन उत्साह, बहस और चर्चा से बच्चे बहुत ज़्यादा रोमांचित थे। पाठ में उनका उत्साह और रुचि बनी रही। जैसे ही मंचन समाप्त हुआ, शिक्षक ने उन्हें बताया कि एक छोटी-सी प्रश्नोत्तरी होगी ('टेस्ट' शब्द का उपयोग नहीं किया)। इसका उद्देश्य इस बात का आकलन करना और जानना था कि बच्चों ने पाठ को कितना समझा और याद रखा है।

परिणाम और निष्कर्ष

दो सप्ताह बाद बच्चों की विषयवस्तु की समझ को जाँचा गया। उनके उत्तरों से किसी ख़ास जानकारी को याद रखने के एक विशेष गुण का पता चला। उदाहरण के लिए, 'मन्दिर कमल के आकार का था' न कि यह कहना कि 'मन्दिर फूल के आकार का था' (सामान्य 'फूल' के स्थान पर 'कमल' का प्रयोग करना)। बाद वाला उत्तर तब मिलता है जब बच्चे मुख्य रूप से केवल सुनते हैं। लेकिन जब वह भाग लेते हैं और गतिविधि करते हैं तो उन्हें पाठ के विशेष पहलू याद रहते हैं।

> **खेल खेलने के अनुभवों से बच्चों के मन में भावनात्मक सुरक्षा आती है जिसके चलते वह अपनी कठिनाइयों को दूसरों से साझा करने के लिए सहज रहते हैं।**

थोड़ा हँसना या सक्रिय भागीदारी कक्षाओं में रुचि पैदा करती है। बच्चों में तथ्यों को गहराई से जानने की ऊर्जा और इच्छा होती है। उनमें लगातार सीखने और टीम में काम करने की लालसा होती है। बच्चे सामाजिक क्षमता विकसित करते हैं। वह अपने आस-पास के माहौल को देखने का रचनात्मक तरीक़ा ईजाद कर लेते हैं और उनमें सकारात्मकता की भावना का विकास होता है।

अँग्रेज़ी से नलिनी रावल द्वारा अनुवादित।

आशा सिंह अज़ीम प्रेमजी यूनिवर्सिटी में स्कूल ऑफ़ एजुकेशन की विज़िटिंग फ़ैकल्टी की सदस्य हैं। वह प्रारम्भिक बाल्यावस्था शिक्षण की विशेषज्ञ हैं। वह बच्चों के बारे में पढ़ाती रही हैं और उनके साथ काम भी करती रही हैं। उनकी रुचि शिक्षकों के लिए शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में कला का उपयोग करने और पाठ्यक्रम विकसित करने में रही है।

सम्पर्क : asha.singh@apu.edu.in

विज्ञान में बच्चों की जिज्ञासा को बढ़ावा देना

अमृता मसीह

जिज्ञासा बच्चे में अपने आस-पास की दुनिया को जानने, सीखने और समझने की इच्छा को जगाती है। यदि विज्ञान के क्षेत्र में कम उम्र से ही इस जिज्ञासा को बढ़ावा दिया जाए तो बच्चों के मन में सीखने और आलोचनात्मक सोच के प्रति प्रेम की ऐसी भावना विकसित हो सकती है जो जीवन भर उनके साथ रहे। माता-पिता, शिक्षक और सलाहकार के रूप में हमारी यह ज़िम्मेदारी है कि हम बच्चे के सवाल पूछने, खोज करने और प्रयोग करने की स्वाभाविक प्रवृत्ति को बढ़ावा दें और उसका समर्थन करें।

जिज्ञासा एक मौलिक मानवीय गुण है जो खोज करने और पूछताछ करने की प्रवृत्ति को बढ़ावा देती है। विज्ञान के सन्दर्भ में देखा जाए तो जिज्ञासा प्राकृतिक दुनिया के अन्तर्निहित सिद्धान्तों को समझने की इच्छा को बढ़ाती है।

बच्चों में एक विशेष प्रकार की जिज्ञासा, स्वाभाविक उत्सुकता और यह जानने की इच्छा होती है कि चीज़ें 'क्यों' व 'कैसे' घटित होती हैं। इस जिज्ञासा को बढ़ावा देने से वह वैज्ञानिक अवधारणाओं को बेहतर तरीक़े से समझ सकते हैं, और अपनी आलोचनात्मक सोच और समस्या-समाधान कौशल में सुधार कर सकते हैं।

केवल सैद्धान्तिक स्पष्टीकरण पर निर्भर रहने की बजाय एक सक्रिय और आकर्षक विज्ञान कक्षा में व्यावहारिक गतिविधियों के माध्यम से बच्चों की विज्ञान में रुचि का अनुमान लगाना सरल है। अनुप्रयोग-आधारित शिक्षण विद्यार्थियों को स्कूल में सीखी गई बातों को घर पर लागू करने के लिए भी प्रोत्साहित करता है। इस लेख में, विज्ञान में बच्चों की जिज्ञासा को बढ़ाने और उनमें वैज्ञानिक खोज करने की प्रवृत्ति को प्रोत्साहित करने के लिए व्यावहारिक तरीक़े बताए गए हैं।

सक्षम वातावरण बनाना

1. संसाधन प्रदान करना : बच्चों को उनकी उम्र के अनुसार उपयुक्त पुस्तकें, वीडियो, वृत्तचित्र और इंटरैक्टिव उपकरण प्रदान करना जो उन्हें विभिन्न वैज्ञानिक विषयों से परिचित कराएँ। ऐसा करने से न केवल उनका ज्ञान व्यापक होता है, बल्कि यह प्रश्नों और चर्चाओं को भी प्रोत्साहित करता है।

इसे लागू करने के लिए, हमने पाठ्यपुस्तकों के अलावा अन्य पुस्तकों में रुचि पैदा करने के लिए विज्ञान के पीरियड में सप्ताह में एक बार लाइब्रेरी क्लास शुरू की। कक्षा के शुरू होने से पहले, हमने बच्चों के साथ मिलकर भाषा विकास के साथ-साथ विषयवस्तु के ज्ञान के लिए गतिविधियों की योजना बनाई।

पहली गतिविधि थी– विज्ञान की पुस्तकों को व्यक्तिगत रूप से पढ़ना और पढ़े गए भाग की समीक्षा साझा करना। इसे वह या तो अपने शब्दों में व्यक्त कर सकते थे या पुस्तक से पढ़कर। दूसरी गतिविधि में, शिक्षक ने समूह बनाए और प्रत्येक समूह को पढ़ने के लिए एक पुस्तक दी। बच्चों ने इसे समूहों में पढ़ा और पुस्तकों से सम्बन्धित अपनी सीखी हुई बातों व अनुभवों को एक दूसरे के साथ साझा किया। इस गतिविधि से उन्हें समूहों में एक दूसरे से सीखने और प्रस्तुतियाँ देने का अवसर मिला।

चित्र 1, 2 और 3 : किताबों को पढ़ते और विज्ञान के प्रयोग करते विद्यार्थी

2. व्यावहारिक रूप से खोजबीन करने का समर्थन करना : बच्चों को ऐसे व्यावहारिक प्रयोगों और गतिविधियों में शामिल करें जो उन्हें अपने विचारों का अवलोकन, परिकल्पना और परीक्षण करने का अवसर दें। घरेलू वस्तुओं का इस्तेमाल करके सरल प्रयोग करने से उनकी जिज्ञासा को बढ़ावा मिलता है, और विज्ञान को मूर्त रूप मिलता है। उदाहरण के लिए, सातवीं कक्षा में हमने बच्चों को अपने आस-पास से विभिन्न प्रकार के फूल लाने, और पदार्थों के अम्लीय या क्षारीय होने का परीक्षण करने के लिए संकेतक बनाने को कहा। बच्चे विभिन्न फूलों की पट्टियों के बदलते रंग देखकर बेहद उत्साहित हुए। वैज्ञानिक परीक्षण में उनकी रुचि बढ़ गई।

इसी तरह, छठवीं कक्षा में पदार्थ के गुणों का अध्ययन करते समय, हमने विद्यार्थियों को उनके आस-पास की काग़ज़, नमक, पॉलीथीन, चुम्बक, लोहे की कील, चॉक का चूरा, चीनी, तेल, दूध, ताँबे का तार, बैटरी, बल्ब, अगरबत्ती, पानी, आदि सामग्रियाँ दीं ताकि घुलनशीलता, पारदर्शिता, चुम्बकत्व, चालकता और विसरण के गुणों का परीक्षण किया जा सके। सरल प्रयोग करके उन्होंने इन अवधारणाओं को और अधिक स्पष्ट रूप से समझा।

3. प्रश्नों को प्रोत्साहित करना : ऐसा माहौल बनाएँ जहाँ प्रश्नों का स्वागत हो। बच्चों के प्रश्नों के उत्तर देने के लिए समय लें, और अगर आपको उत्तर नहीं पता है तो पता लगाने के लिए उनके साथ मिलकर खोजें। ऐसा करने से उन्हें पता चलेगा कि जिज्ञासा आजीवन चलने वाली कोशिश है। साथ ही, इससे कक्षा में ऐसी संस्कृति का निर्माण भी होता है जो विद्यार्थियों को स्वतंत्र रूप से बोलने की अनुमति देती है, क्योंकि वहाँ एक समावेशी माहौल होता है। जब सभी प्रश्नों और उत्तरों का सम्मान किया जाता है, और बच्चों को अपनेपन की भावना महसूस होती है तो यह बात उन्हें कक्षा में सक्रिय रूप से भाग लेने का अवसर देती है।

> **बच्चे की जिज्ञासा से प्रेरित उपलब्धियों को मान्यता दें और उनका उत्सव मनाएँ। चाहे वह कोई सफल प्रयोग हो, कोई नया सवाल या कोई ऐसी अवधारणा हो जिसे उन्होंने समझ लिया हो; सकारात्मक सुदृढ़ीकरण विज्ञान में उनकी रुचि को मज़बूत करता है।**

शिक्षक विभिन्न प्रकार के ऐसे प्रश्नों का भी उपयोग करते हैं जो विद्यार्थियों के अलग-अलग स्तरों के अनुकूल होते हैं। ऐसा करने से हर किसी को यह लगता है कि वह भी गतिविधि में शामिल हो रहा है। इसके साथ ही कुछ चुनौतीपूर्ण प्रश्न भी होने चाहिए। जब बच्चे प्रश्न पूछते हैं तो शिक्षक भी कुछ जाँच-पड़ताल वाले प्रश्न पूछते हैं, ताकि बच्चे गम्भीरता से सोचें, ख़ुद उत्तर पाने का प्रयास करें और अपना समस्या-समाधान कौशल विकसित करें। इससे विद्यार्थियों में प्रश्न या सन्देह पूछने की इच्छा बढ़ जाती है क्योंकि वह अपने साथियों और शिक्षक के साथ अपनी समझ व जिज्ञासाओं का निवारण करते हैं।

चित्र 4 : विज्ञान की प्रयोगशाला में करके सीखती छात्रा

4. तर्क-वितर्क को विकसित करना : विज्ञान का अभ्यास करने के लिए तर्क-वितर्क करने और उन्हें परखने में सक्षम होना आवश्यक है। कक्षा में तर्क-वितर्क और परीक्षण करने से विद्यार्थियों को पता चलता है कि विज्ञान एक ऐसा क्षेत्र है जिसमें रचनात्मकता और जाँच-पड़ताल की ज़रूरत होती है।

उच्च प्राथमिक विद्यालय में प्रवेश करते समय, विद्यार्थी अपने आस-पास की दुनिया के बारे में कई सवाल और अवधारणाएँ लेकर आते हैं। लेकिन उनके ज्ञान के स्तर के हिसाब से उनके तर्क-वितर्क पर थोड़ी रोक लग सकती है। मसलन, छठवीं कक्षा के विद्यार्थियों से यह अपेक्षा करना उपयुक्त नहीं है कि उन्हें यह पता हो कि सूर्य परमाणु संलयन द्वारा ऊर्जा देता है।

छठवीं कक्षा के कुछ विद्यार्थियों की यह धारणा थी कि सूर्य पारिस्थितिकी तंत्र का एक जैविक घटक है। जैविक और अजैविक शब्द को समझने के लिए, विद्यार्थियों को जीवित जीवों की विशेषताओं (गति, श्वसन, संवेदनशीलता, वृद्धि, प्रजनन, उत्सर्जन और पोषण) की जानकारी होना ज़रूरी है। और चूँकि वह यह सब सीख चुके थे, इसलिए इन शब्दों का इस्तेमाल करके यह पता लगाया जा सकता था कि सूर्य जीवित है या निर्जीव। ऐसा करते समय, विद्यार्थियों की ऐसी दूसरी धारणाओं और विश्वासों पर भी फिर से विचार किया गया जो उनके मन में सूर्य के बारे में थीं। इस प्रकार, उनकी सांस्कृतिक मान्यताओं को विज्ञान के विरुद्ध खड़ा होने से भी बचाया जा सकेगा।

ग़लतियों और असफलताओं को स्वीकार करना

वैज्ञानिक समझ विकसित करने में ग़लतियाँ होना और असफलताएँ मिलना स्वाभाविक है, लेकिन इनसे हमें सीखने के नए-नए अवसर मिलते हैं। हमें बच्चों को इस बात के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए कि वह असफलताओं को ऐसे अवसर मानें जिनसे वे अपनी परिकल्पनाओं को सुधार सकते हैं, और समस्याओं को विभिन्न नज़रियों से देख सकते हैं। विकास की मानसिकता को बढ़ावा देने से बच्चे यह सीखते हैं कि विज्ञान का मतलब हमेशा सही होना नहीं है, बल्कि यह तो खोज की एक प्रक्रिया है।

उदाहरण के लिए, विज्ञान की कक्षा में गतिविधियों और प्रयोगों का प्रदर्शन किया गया तो उन्हें पूरी प्रक्रिया को दिखाया गया। इससे छात्रों को कुछ ऐसी बारीक़ियों को समझने का मौक़ा मिला जो अन्यथा अनदेखी रह जातीं। मसलन, जब हम नल के पानी की तुलना में आसुत जल में विद्युत चालकता देखने की कोशिश कर रहे थे तो आसुत जल में कुछ चालकता देखी गई, जबकि ऐसा नहीं होना चाहिए था। इसके बाद, शिक्षक ने कई तरीक़ों का इस्तेमाल करके फिर से वह प्रयोग किया। इससे विद्यार्थियों को लचीलेपन और दृढ़ संकल्प के महत्त्व का पता चला।

यह सुनिश्चित करना भी बेहद महत्त्वपूर्ण है कि हम शिक्षक कक्षा में प्रयोग करने से पहले कम-से-कम एक बार उसे ख़ुद करके देख लें। इससे हमें पता चल सकेगा कि प्रयोग सफल होगा या नहीं। इस प्रकार, हमें कक्षा के दौरान चीज़ों को समझने में ज़्यादा समय बर्बाद नहीं करना पड़ेगा। लेकिन इसके बाद भी कुछ विसंगतियाँ देखी जा सकती हैं, और शिक्षक को इन पर ध्यान देने की बजाय प्रक्रिया को और अधिक सजगता के साथ दोहराना चाहिए। इससे बच्चे भी समझ सकेंगे कि परिणाम मिलने में समय लग सकता है, और उन्हें प्रक्रिया को एक से अधिक बार करना पड़ सकता है।

विज्ञान को रोज़मर्रा की ज़िन्दगी से जोड़ना

1. वास्तविक दुनिया की प्रासंगिकता : बच्चों को उनके रोज़मर्रा के जीवन में वैज्ञानिक अवधारणाओं के व्यावहारिक अनुप्रयोग को समझने में मदद करें। चाहे वह साइकिल से सम्बन्धित भौतिकी को समझाना हो या खाना पकाने का विज्ञान, विज्ञान को उनकी दुनिया से जोड़ने से वह अधिक आकर्षक और प्रासंगिक बन जाता है।

उदाहरण के लिए, छठवीं कक्षा में 'अम्ल, क्षार और लवण' का पाठ पढ़ाया जा रहा था। इस विषय पर अधिकांश चर्चाओं के लिए विद्यार्थियों के साथ वास्तविक जीवन के अनुप्रयोगों को साझा किया गया था। नियमित रूप से ऐसा करने से वह उस दिशा में सोचना भी शुरू करने लगते हैं। जब उदासीनीकरण पर चर्चा हो रही थी तो एक विद्यार्थी ने हमें उदाहरण दिया कि जब मधुमक्खी डंक मारती है (वह पहले से ही जानते थे कि इसमें फ़ॉर्मिक एसिड होता है), वह आमतौर पर मधुमक्खी के डंक वाली जगह पर थोड़ा निरमा पाउडर (एक डिटर्जेंट और क्षार) लगाते हैं। उसने अपने घर में अकसर जो देखा था, उसे अपने

चित्र 5 : विज्ञान के प्रयोग करते छात्र-छात्राएँ

सीखने की प्रक्रिया से जोड़ा। यह एक बेहद महत्त्वपूर्ण कौशल है जिसे विद्यार्थियों में विकसित करना चाहिए।

2. बाहरी खोजबीन : प्रकृति वैज्ञानिक चमत्कारों का ख़ज़ाना है। इसलिए पौधों, जानवरों, मौसम के पैटर्न और प्राकृतिक घटनाओं का अवलोकन करने के लिए बाहर समय बिताएँ। जो कुछ भी विद्यार्थी देखते और अनुभव करते हैं, उसके बारे में प्रश्न पूछने के लिए उन्हें प्रोत्साहित करें।

छठवीं कक्षा को प्रकृति की सैर पर ले जाते समय हमने पत्तियों और फूलों में विभिन्न पैटर्नों का अवलोकन करने की योजना बनाई। इससे विद्यार्थियों को पत्तियों और जड़ों के बीच के सम्बन्ध को समझने में मदद मिली। जब उन्होंने फूलों को देखा तो वह फूलों को नर और मादा भागों में वर्गीकृत करने की कक्षा में सीखी गई अवधारणा को प्रत्यक्ष रूप से जोड़ पाए। इससे उन्हें अपनी समझ विकसित करने में मदद मिली, और यह जानकारी उनके लिए और भी पक्की हो गई।

रोल मॉडल और मेंटर (मार्गदर्शक)

बच्चों को उन वैज्ञानिकों, आविष्कारकों और खोजकर्ताओं से परिचित करवाएँ जिन्होंने दुनिया के बारे में हमारी समझ को सँवारा है। रोल मॉडल के जीवन और उपलब्धियों के बारे में

पढ़ने से बच्चों को प्रेरणा मिलती है, और उन्हें पता चलता है कि यह उनकी समझ को सँवारने में सार्थक योगदान दे सकता है।

विद्यार्थियों को हमेशा ऐसे उदाहरणों से परिचित करवाना चाहिए ताकि वह भी अपनी क्षमताओं से परे प्रयास करने के लिए प्रेरित हों। जब चंद्रयान लॉन्च किया गया था तो स्कूल के विद्यार्थियों को इसकी पूरी प्रक्रिया और इसके महत्त्व के बारे में संक्षेप में बताया गया था। इस पूरे लॉन्च का सीधा प्रसारण हम सभी ने एक साथ देखा, और भारतीय वैज्ञानिक जिस तरह से अपनी उपलब्धि का जश्न मना रहे थे, उसे सभी विद्यार्थियों ने अनुभव किया।

आठवीं कक्षा के लाइब्रेरी पीरियड में हमने ग्राहम बेल और थॉमस अल्वा एडिसन तथा उनके जीवन की यात्रा पर वीडियो देखे। इससे विद्यार्थियों को यह जानने में मदद मिली कि विभिन्न प्रक्रियाओं के माध्यम से आविष्कार कैसे हुए। उन्होंने महसूस किया कि उनके आस-पास की सामान्य समस्याओं के समाधान काफ़ी सरल होते हैं।

जिज्ञासा का जश्न मनाना

बच्चे की जिज्ञासा से प्रेरित उपलब्धियों को मान्यता दें और उनका जश्न मनाएँ। चाहे वह कोई सफल प्रयोग हो, कोई नया प्रश्न या कोई ऐसी अवधारणा जिसे उन्होंने समझ लिया हो; सकारात्मक सुदृढ़ीकरण विज्ञान में उनकी रुचि को मज़बूत करता है।

शिक्षक को चाहिए कि वह विद्यार्थियों द्वारा पूछे गए अच्छे प्रश्न या कुछ नया करने के प्रयास की हमेशा सराहना करें। इससे उन्हें प्रेरणा मिलती है। उन्हें महसूस होता है कि उन पर ध्यान दिया जा रहा है, और उनमें कुछ हटकर सोचने का साहस पैदा होता है। उदाहरण के लिए, जब कक्षा में पानी के माध्यम से विद्युत की चालकता को दिखाया गया तो एक विद्यार्थी ने अपने आस-पास की सामग्रियों के साथ ख़ुद ही प्रयोग करने की कोशिश की। हालाँकि पहली बार प्रयोग विफल हो गया, लेकिन शिक्षक द्वारा लगातार प्रोत्साहित करने पर उसे फिर से प्रयास करने की प्रेरणा मिली, और उसने आस-पास के संसाधनों के साथ प्रयोग को फिर से किया।

कोशिकाओं और ऊतकों के बारे में सीखते समय, विद्यार्थियों को प्याज़ की कोशिकाएँ दिखाई गईं। उन्हें दिखाया गया कि स्लाइड को कैसे सेट किया जाता है। विद्यार्थियों के एक समूह को प्याज़ के छिलके वाली एक बेकार स्लाइड मिली, और उन्होंने तुरन्त प्रयोग को फिर से करने की कोशिश की, ठीक वैसे ही जैसे शिक्षक ने उन्हें दिखाया था। वह इस बात को लेकर उत्सुक थे कि यह काम क्यों नहीं कर रहा, और इससे कई नए सवाल भी पैदा हुए।

अँग्रेज़ी से नलिनी रावल द्वारा अनुवादित।

अमृता मसीह मध्य प्रदेश के सीहोर ब्लॉक में अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन की रिसोर्स पर्सन हैं। उन्होंने 2000 में एक निजी स्कूल से अपना शिक्षण कॅरियर शुरू किया, और बाद में छत्तीसगढ़ के धमतरी में अज़ीम प्रेमजी स्कूल में भी पढ़ाया। उन्हें शिक्षकों और बच्चों के साथ काम करना बेहद पसन्द है।

सम्पर्क : amrita.masih@azimpremjifoundation.org

गणित के प्रति बहु-संवेदी दृष्टिकोण

सोनिया कुंडू

यह लेख फ़्री प्ले के दौरान खोज करने के महत्त्व को रेखांकित करता है। लेख दर्शाता है कि गणित की बुनियादी अवधारणाओं को पढ़ाने के लिए कहानी सुनाने और अन्तःक्रियात्मक खेलों को प्रभावी ढंग से समेकित कैसे किया जा सकता है। लकड़ी के ब्लॉक और तीलियों के बंडल बनाने जैसे ख़ुद करके देखने के अनुभवों के माध्यम से विद्यार्थी संख्या बोध, स्थानीय मान और समस्या-समाधान जैसे आवश्यक कौशल विकसित करते हैं, और साथ ही मज़े भी करते हैं।

पूर्व प्राथमिक कक्षा के दो विद्यार्थी एक दिन लकड़ी के ब्लॉक से खेल रहे थे। थोड़ी ही देर में मैंने देखा कि वह ब्लॉक से महल बना रहे हैं। उस महल को खड़ा करने के लिए उन्होंने दीवारों की समरूपता का काफ़ी सही ध्यान रखा था। उस खेल के दौरान उनकी बातचीत किन्हीं कुशल व्यक्तियों से कम नहीं थी।

एक बच्चा : "चल, अब दरवाज़ा बनाते हैं।"

दरवाज़ा बनाने के लिए एक विद्यार्थी ने दोनों तरफ़ कुल मिलाकर तीन ब्लॉक लम्बवत रखे। यह 2:1 के अनुपात में थे। यह देखकर, दूसरे बच्चे ने कहा, "यह तो अच्छा नहीं लग रहा। एक और ब्लॉक लगा इसमें।" इसलिए उन्होंने इसे बराबर करने के लिए एक और ब्लॉक जोड़ा। बाद में, उन्होंने उस पर छत बनाने का फ़ैसला किया और उन लम्बवत ब्लॉकों के ऊपर क्षैतिज रूप से एक और ब्लॉक रख दिया।

इस खेल से मुझे अपने विद्यार्थियों के *नम्बर बॉण्ड*[1] के साथ खेलने के बारे में जानकारी हुई, और तब मैंने गणित शिक्षण में लकड़ी के ब्लॉक का उपयोग करने का सोचा। मेरी कक्षा में 20 विद्यार्थी हैं, और इन सभी की उम्र 5 से 6 वर्ष के बीच है। इस उम्र में, विद्यार्थी बहुत-सी चीज़ें स्वयं करने के लिए स्वतंत्र होते हैं, और इसीलिए इस उम्र की सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह होती है कि बच्चे अपने आस-पास जो सामग्री देखते हैं, वह उससे जुड़ते हैं और अपने खेल में उसका उपयोग करते हैं। बुनियादी स्तर पर बच्चों का गणितीय अवधारणाओं के साथ खेलना ज़्यादा महत्त्वपूर्ण है, बनिस्बत इसके कि वह इनका 'अध्ययन' करें। सम्पूर्ण विषयवस्तु 'खेल-खेल में सीखना' वाली पद्धति पर आधारित हो, अन्यथा बच्चे उबाऊ शिक्षा के शिकार हो जाते हैं और कभी भी इससे मुक्त नहीं हो पाते।

जब विद्यार्थी ख़ुद ही खेलते हैं तो मुझे उनके अनुभवों को समेकित करने के कई मौक़े मिलते हैं क्योंकि ऐसे खेलों में वह अपनी गतिविधियों, खेल के साथियों, वस्तुओं और खेलने के तरीक़ों को ख़ुद से चुनने के लिए स्वतंत्र होते हैं। असल में, इससे बच्चे अपनी पसन्द और रुचि के आधार पर खेल चुनने, बनाने और व्यवस्थित करने में सक्षम हो पाते हैं।

चित्र 1 : संख्याएँ गिनते हुए एक विद्यार्थी

मैंने अकसर यह पाया है कि जब विद्यार्थियों को उनकी इच्छा के अनुसार खेलने दिया जाता है तब वह वस्तुओं को गिनते हैं, कुछ मानदण्डों के आधार पर उन्हें अलग करते हैं, समूह बनाते हैं, वस्तुओं से पैटर्न भी बनाते हैं, आदि। इसी प्रकार, खेलते समय वह विभिन्न वस्तुओं की मदद से गिनती की विभिन्न विधियों से भी परिचित होते हैं। इसलिए मैंने विद्यार्थियों के साथ निम्नलिखित खेल का उपयोग किया ताकि उन्हें 10 से आगे की संख्याओं की कल्पना करने, स्थानीय मान की समझ बनाने और समूहों में गिनने जैसी गतिविधियाँ करने में मदद मिल सके।

कहानियों और ठोस वस्तुओं को साथ लेकर काम

प्रयुक्त सामग्री : लकड़ी के ब्लॉक, बंडल गिनने की कहानी पर एक वीडियो और रबर बैंड।

उद्देश्य :

- स्थानीय मान को समझने की शुरुआत;
- संख्याओं की तुलना करना; और
- संख्याओं को ठोस और अमूर्त रूपों में प्रस्तुत करना।

मैंने कई स्तरों की अलग-अलग गतिविधियाँ करने की योजना बनाई ताकि विद्यार्थी विभिन्न अनुभवों से जुड़ सकें। हमारा उद्देश्य संख्या बोध और 10 अंकीय आधार प्रणाली में स्थानीय मान की अवधारणा को विकसित करना था। 10 से आगे की संख्याओं की समझ आगे आने वाली गणितीय अवधारणाओं और बुनियादी एल्गोरिदम को समझने के लिए महत्त्वपूर्ण है। और इसलिए यह ज़रूरी है कि हम विभिन्न तरीक़ों को काम में लें ताकि बच्चे 10 से आगे की संख्याओं की सहज और पुख़्ता समझ विकसित कर सकें।

शुरुआत में दिया गया उदाहरण फ़्री प्ले के दौरान मेरे विद्यार्थियों द्वारा गणित पर की गई बातचीत को दर्शाता है। इसी से मुझे 10 से आगे की गिनती सिखाने के लिए वैसे ही संसाधन का उपयोग करने का विचार मिला। मैंने उनके खेल में लकड़ी के ब्लॉक के साथ कुछ रबर बैंड देने का फ़ैसला किया। मेरी अपेक्षा के अनुसार बच्चों ने खेलना और मज़े करना शुरू कर दिया। उन्होंने अलग-अलग तरह के खेल खेले और लकड़ी के ब्लॉक का इस्तेमाल करके इमारतें, सड़कें, पुल, आदि बनाए। कुछ विद्यार्थियों ने रबर बैंड की मदद से बंडल भी बनाए। बच्चों को कोई निर्देश नहीं दिया गया था। इस फ़्री प्ले के बाद हम अपनी रोज़ की दिनचर्या में लौट आए, और मैंने उनसे कहा कि उन्होंने लकड़ी के ब्लॉकों से जो कुछ भी बनाया है, उसे ले आएँ। विद्यार्थी हमेशा अपना काम दिखाने के लिए उत्साहित रहते हैं, और इस उत्साह को ध्यान में रखते हुए ही मैंने आगे का काम निर्धारित किया।

> **जब विद्यार्थियों को उनकी इच्छा के अनुसार खेलने दिया जाता है तब वह वस्तुओं को गिनते हैं, कुछ मानदण्डों के आधार पर उन्हें अलग करते हैं, समूह बनाते हैं, वस्तुओं से पैटर्न आदि भी बनाते हैं।**

अगली गतिविधि थी– कहानी सुनाना। मैंने उन्हें 'जादुई रस्सी' नामक एक कहानी सुनाई। संक्षेप में, यह भोला नाम के एक लड़के की कहानी है जो गिनना तो जानता था, लेकिन गिने हुए सामानों की संख्या भूल जाता था। वह यह भी नहीं जानता था कि उन्हें कैसे लिखा जाता है। कहानी के अन्त में वह 10 के बंडल बनाकर गिनती करने का आसान तरीक़ा ढूँढ़ लेता

चित्र 2 : सक्रिय रूप से संख्याओं के बारे में अन्दाज़ा लगाते हुए विद्यार्थी

है जिससे उसका काम आसान हो जाता है। कहानी के दौरान विद्यार्थियों के साथ कुछ इस तरह के सवालों पर चर्चा हुई :

प्रश्न : अगर भोला भूल जाए तो उसे क्या करना चाहिए?

बच्चे : वह इसे लिख सकता है।

प्रश्न : आपको क्या लगता है कि उसने इसे क्यों नहीं लिखा?

बच्चे : शायद वह लिखना नहीं जानता है या उसके पास पेंसिल नहीं है; वह जंगल में रहता है और उसके पास लिखने के लिए कॉपी नहीं है; शायद उसके शिक्षक ने उसे 10 तक की संख्याएँ लिखना नहीं सिखाया।

कहानियाँ विद्यार्थियों की कल्पना को प्रेरित और प्रोत्साहित करती हैं। वह उन्हें विभिन्न विषयों से जुड़ने के लिए सक्षम बनाती हैं। भाषा में बच्चों के अनुभवों, उनके सन्दर्भों को स्थान देने से विद्यार्थी अर्थ और सन्दर्भ को अधिक आसानी से समझ सकते हैं क्योंकि वह उससे परिचित होते हैं। इसीलिए कहानी को सुनाने में चित्रों और रेखाचित्रों की मदद ली जाती है। इसके बाद, मैंने बच्चों से ब्लॉक का उपयोग करते हुए वैसे ही बंडल बनाने को कहा जैसे कि भोला ने बनाए थे। इस गतिविधि को करते हुए बच्चे गिनती कर रहे थे और समूह बना रहे थे। हर समूह बनाते हुए वह अपनी गिनती दोबारा जाँच रहे थे, और अगर कोई ग़लती होती तो वह धीरे-धीरे फिर से शुरू करते जब तक कि ब्लॉकों की सही व्यवस्था पर नहीं पहुँच जाते थे। ब्लॉकों को समूहीकृत करते समय उन्होंने उन्हें अलग-अलग पैटर्न में व्यवस्थित किया। जैसे– 5 + 5 (प्रत्येक पंक्ति में 5 ब्लॉक), 3 + 3 + 3 + 1, आदि। यह मेरी योजना बिल्कुल नहीं थी, लेकिन उनके समस्या-समाधान कौशल ने मेरे शिक्षण में

एक और आयाम जोड़ दिया। यह गिनती के लिए वस्तुओं की सबिटाइज़िंग से सम्बन्धित था। सबिटाइज़िंग से आशय वस्तुओं के छोटे समूह को देखते ही यह बता पाने की योग्यता से है कि उस समूह में कितनी वस्तुएँ होंगी। मसलन, जब हम खेल के दौरान पासा फेंकते हैं तो हमें हर बार बिन्दुओं को गिनने की आवश्यकता नहीं होती है। बिन्दुओं की विशेष व्यवस्था ने हमारे दिमाग़ में एक छाप छोड़ रखी होती है, और जब भी हम उस पैटर्न में व्यवस्थित वस्तुओं को देखते हैं, हम उस संख्या को तुरन्त समझ जाते हैं और गिन लेते हैं। यह बात कक्षा में दिखाई गई संख्या रेखा से जुड़ी थी जिस पर विद्यार्थियों ने वस्तुओं, प्रतीकों और विशेष व्यवस्था वाले पैटर्न के रूप में दर्शाई गई संख्याओं को देखा।

अब मैंने एक बच्ची को भोला बनकर कक्षा के फ़र्श से लकड़ी के ब्लॉक इकट्ठा करने को कहा। फिर उसे 10 का बंडल बनाकर आगे की गिनती करनी थी। यह बच्चों के लिए एक मज़ेदार गतिविधि थी क्योंकि हर कोई उस बच्ची को यह बताने के लिए उत्सुक था कि वह 10 तक पहुँचने वाली है, और उसे इसका बंडल बनाना चाहिए। इसके बाद, बच्चों के साथ जो गतिविधि की गई उसमें उन्हें समूह में 11, 13 और 14 खुली तीलियाँ देकर 10 के बंडल बनाने को कहा गया। बच्चों को यह खेल बहुत दिलचस्प लगा, और मेरे कहने से पहले ही उन्होंने एक दूसरे की तीलियों के बंडल और खुली तीलियों को गिनना शुरू कर दिया था।

इसके बाद, मैंने बंडलों के निरूपण के बारे में सोचा, क्योंकि शुरू में बच्चों से पहले बंडल बनाने और उसके बाद गिनने को कहा गया था। बाद में, मैंने उनसे कहा कि वह बंडल को अपनी बाईं ओर रखें और तीलियाँ दाईं ओर ताकि यह अमूर्त निरूपण, यानी संख्याओं के साथ मेल खाए। यह दहाई और इकाई की अवधारणा को प्रतीकों, अर्थात् अंकों में प्रस्तुत करने में होने वाली उलझन से बचने में भी मदद कर सकता है।

चित्र 3 : बच्चे ठोस रूप में बंडलों का उपयोग करके संख्याएँ लिख रहे हैं।

> **कहानियाँ विद्यार्थियों की कल्पना को प्रेरित और प्रोत्साहित करती हैं। वह उन्हें विभिन्न विषयों से जुड़ने के लिए सक्षम बनाती हैं।**

गिनती करने और बंडल बनाने की ऐसी गतिविधियाँ तब तक की गईं जब तक कि बच्चे वस्तुओं के समूह बनाकर गिनने में पारंगत और सक्षम नहीं हो गए। इसमें लगभग एक सप्ताह लगा। इसके बाद, मैंने उनसे पूछा, "क्या आप अपनी गिनी हुई तीलियों की संख्या लिख सकते हैं?" उन्होंने पूछा, "हम इसे कैसे लिख सकते हैं?" मैंने जवाब दिया, "चलो, हम उसका चित्र बनाने का प्रयास करें।" मैंने उन्हें मार्कर दिए और लिखने के लिए कहा। उन्होंने संख्याओं को चित्रात्मक रूप में दर्शाया (चित्र 4)। उनमें से कुछ पहले से ही संख्याएँ जानते थे, और उन्होंने भी उत्सुकता से संख्या को चित्रात्मक रूप में लिखा।

अपने पुराने अनुभवों को याद करते हुए, इस समय मैं यह सोच रही थी कि यदि विद्यार्थियों से बोर्ड पर 11 तीलियों को दर्शाने के लिए कहा जाए तो वह 101 लिखेंगे, लेकिन उनके द्वारा किया गया 11 का चित्रात्मक निरूपण काफ़ी स्पष्ट था। उन्होंने दस का एक बंडल दर्शाया व 1 खुली तीली भी। जो विद्यार्थी पहले से ही गिनती के पैटर्न को जानते थे और 50 तक की संख्याएँ आसानी से लिख सकते थे व कुछ अन्य जो 100 तक लिख सकते थे, उन्होंने संख्याएँ लिखने में दूसरे विद्यार्थियों की मदद की। लेकिन अब यह विद्यार्थी भी संख्याओं के निरूपण को समझ रहे थे। यहाँ मेरे लिए उन्हें यह बताना आसान हो गया कि बंडल के स्थान पर हम 1 लिखते हैं क्योंकि यह एक बंडल है। फिर हम खुली छड़ियों की संख्या लिखते हैं। इस तरह, मेरी कक्षा के 20 विद्यार्थियों को 10 से आगे गिनती करने का अनुभव मिला, और उनमें से 12 विद्यार्थी समूह बनाकर गिनती करने, चित्रात्मक और लिखित रूप में प्रस्तुत करने व अमूर्त रूप में संख्या पढ़ने में सक्षम हुए।

कहानियों, ठोस वस्तुओं, खेल, ड्राइंग और खेलों को समेकित कर शिक्षण करने से विद्यार्थी संख्याओं को बेहतर ढंग से समझ सकते हैं, और सीखने का आनन्द ले सकते हैं। यह बहु-संवेदी दृष्टिकोण विभिन्न शिक्षण शैलियों की ज़रूरतों का ध्यान रखता है, और गणित की अवधारणाओं को अधिक सुलभ व मज़ेदार बनाता है।

आगे का रास्ता : मेरे विद्यार्थियों ने बंडल और खुले की अवधारणा को कुछ हद तक समझ लिया है। इस अवधारणा के साथ आगे का रास्ता संख्या तुलना, जोड़ और घटाव की अवधारणा को विकसित करना है।

चुनौती : मेरी कक्षा के आठ विद्यार्थी अभी भी सीखने की प्रक्रिया में हैं क्योंकि वह प्रतीकात्मक निरूपण के स्तर तक नहीं पहुँचे

हैं। हालाँकि वह पैटर्न और व्यवस्था का पालन करके गिनती कर सकते हैं, और संख्याएँ बनाने के लिए बंडल बना सकते हैं। उनकी मदद करने के लिए मैं उन्हें संख्याओं के साथ नियमित रूप से तब तक खेलने दूँगी जब तक कि वह अवधारणा से परिचित न हो जाएँ, और उसे समझ न लें।

निष्कर्ष

8 वर्ष की आयु तक बच्चे के मस्तिष्क का लगभग 80 प्रतिशत भाग विकसित हो जाता है। इसे ध्यान में रखते हुए, मैं एक शिक्षिका के रूप में उन्हें नए विचारों, अवधारणाओं और अनुभवों से परिचित कराने का प्रयास करती हूँ जिससे उन्हें कारण-और-प्रभाव सम्बन्धों, समस्या-समाधान रणनीतियों, आदि के बारे में सीखने में मदद मिलती है। यह तरीक़ा विद्यार्थियों के लिए काफ़ी कारगर सिद्ध होता है, लेकिन उनकी उम्र में अवधारणाएँ बनाने के लिए ऐसे विचार प्रदान करते समय सावधानी बरतनी चाहिए क्योंकि यह उनके आगे के सीखने का आधार बनते हैं। साथ ही, कहानी, अभिनय और गतिविधियों (जैसे– बंडल बनाना) को अपने-आप शामिल करना; चित्रात्मक और साधारण निरूपण विद्यार्थियों को एक सम्पूर्ण अनुभव प्रदान करते हैं क्योंकि इस स्तर पर गणित को अमूर्त रूप में नहीं सीखा जा सकता है।

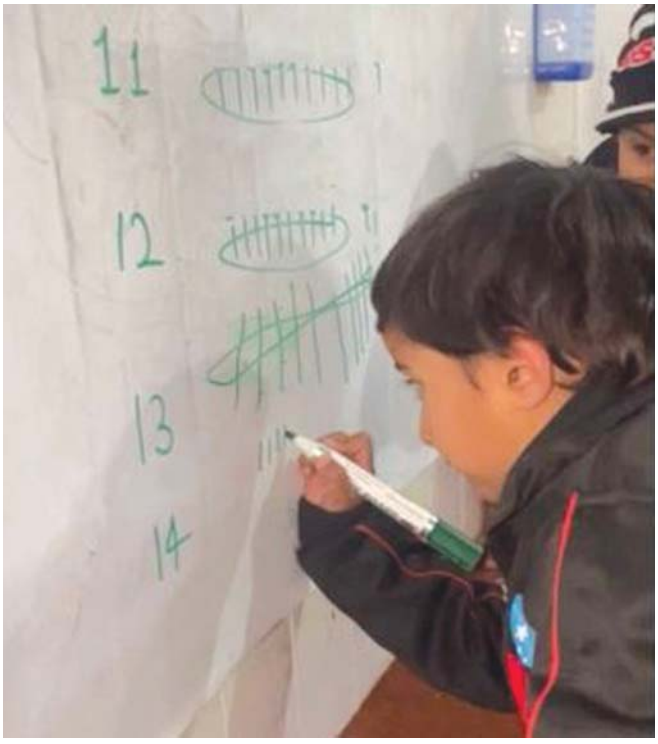

चित्र 4 : विद्यार्थी चित्रात्मक निरूपण का उपयोग करके अमूर्त संख्याएँ सीख रहे हैं

[1]नम्बर बॉण्ड्स का इस्तेमाल गणित में संख्या के सम्बन्धों को समझने के लिए किया जाता है। यह एक तरीक़ा है जिससे बच्चे यह जान सकते हैं कि दो संख्याओं को जोड़कर नई संख्या बनाई जा सकती है।

अँग्रेज़ी से नलिनी रावल द्वारा अनुवादित।

सोनिया कुंडू 2021 से उत्तरकाशी के मातली स्थित अज़ीम प्रेमजी स्कूल में शिक्षिका हैं। उनकी विशेषज्ञता पूर्व प्राथमिक और प्राथमिक कक्षाओं को पढ़ाने में है। आप छोटे बच्चों के सीखने की प्रक्रिया को प्रोत्साहित करने के लिए एक समृद्ध और प्रेरणादायक वातावरण प्रदान करने के लिए समर्पित हैं।

सम्पर्क : sonia.kundu@azimpremjifoundation.org

शुरुआती वर्षों में माता-पिता की भूमिका

अमृता मुरली

आँगनवाड़ी शिक्षक अकसर परिवारों के सम्पर्क में होते हैं, इसलिए वह माता-पिता की समझ और शुरुआती वर्षों में बच्चों की विकासात्मक आवश्यकताओं के बीच की खाई को पाटने में एक विशिष्ट स्थान रखते हैं। इस लेख में, लेखिका ने कुछ आसान-से, अनुसरण करने योग्य, सफल प्रयासों को साझा किया है जो माता-पिता को अपने बच्चों के लिए बेतहर वातावरण प्रदान करने में सहायता देते हैं।

चित्र 1: आँगनवाड़ी शिक्षकों को माता-पिता के साथ प्रभावशाली सत्रों का आयोजन करने सम्बन्धी सहायता दी जा रही है

माता-पिता बच्चे के जीवन के हर चरण में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, शुरुआती वर्षों के दौरान उनका प्रभाव सबसे गहरा होता है। जन्म से छह साल तक के इन शुरुआती वर्षों में बच्चे के संज्ञानात्मक, भावनात्मक और सामाजिक विकास की नींव रखी जाती है। बीस साल पहले तक बच्चे संयुक्त परिवारों में बड़े होते थे जहाँ उन्हें परिवार के कई सदस्यों की देखभाल और समृद्ध अन्तःक्रियाओं का फ़ायदा मिलता था। लेकिन अब तकनीक के आगमन और एकल परिवारों की अधिकता के चलते मानवीय सम्बन्धों में एक अन्तर पैदा हो गया है। इसका असर बच्चों के सीखने-समझने पर भी पड़ रहा है जिससे बच्चे कुछ कमज़ोर-सी स्थिति में आ गए हैं।

उदाहरण के लिए, आजकल के एक आम दृश्य को ही लीजिए– एक बच्चा रिमोट हाथ में लिए स्क्रीन पर ध्यान लगाए हुए है, जबकि उसकी देखभाल करने वाला व्यक्ति उसे यंत्रवत् खाना खिला रहा है। यह दृश्य हमें बताता है कि माता-पिता और बच्चे के बीच जो ख़ूबसूरत-सा अपनेपन का भाव था उसमें कुछ कमी-सी आने लगी है। ऐसा वंचित समुदायों में भी हो रहा है और समृद्ध परिवारों में भी।

मक्कळा जागृति[1] में, हम आँगनवाड़ियों द्वारा प्रदान की जाने वाली प्रारम्भिक बाल्यावस्था शिक्षा और देखभाल की गुणवत्ता को बढ़ाने के लिए काम करते हैं। इसके लिए हम एकीकृत बाल विकास सेवा (आईसीडीएस) के कार्यकर्ताओं, शिक्षकों, सहायकों और सबसे महत्त्वपूर्ण रूप से माता-पिता के साथ मिलकर बच्चों को समग्र रूप से सहायता देने का कार्य करते हैं। इसका एक उद्देश्य बच्चों और अभिभावकों के बीच के सम्बन्धों की कम होती गरमाहट को सहेजना भी है।

आँगनवाड़ी का सन्दर्भ

आँगनवाड़ी में आने वाले बच्चे अकसर उस सामाजिक और आर्थिक रूप से वंचित पृष्ठभूमि से आते हैं जहाँ माता-पिता आमतौर पर बहुत कम शिक्षित होते हैं, या फिर उन्हें कोई औपचारिक शिक्षा नहीं मिली होती है। उनका पूरा ध्यान अपने

परिवार के पालन-पोषण के लिए धन कमाना होता है, इसलिए बच्चों की देखभाल और विकास सम्बन्धी ज़रूरतें अकसर पीछे रह जाती हैं। कई माता-पिता इस बात से अनजान हैं कि बच्चे की सीखने की यात्रा को मज़बूत करने में शुरुआती वर्षों का कितना अधिक महत्त्व है। उन्हें अकसर यह ग़लतफ़हमी होती है कि सीखना तभी शुरू होता है जब बच्चा स्कूल जाने लगता है। इसके चलते वह शुरुआती अनुभवों की बुनियादी भूमिका को नज़रन्दाज़ कर देते हैं। इसलिए माता-पिता को यह एहसास कराना ज़रूरी है कि एक सुरक्षित, पोषक और संवेदनशील वातावरण प्रदान करने में उनकी भूमिका बहुत महत्त्वपूर्ण है, क्योंकि ऐसा वातावरण बच्चे के सम्पूर्ण विकास को काफ़ी ज़्यादा प्रभावित कर सकता है।

कुछ रणनीतियाँ

माता–पिता को शामिल करना

माता-पिता के साथ बैठकें आयोजित करने हेतु अपने ज्ञान, क्षमताओं और आत्मविश्वास को बेहतर बनाने के लिए आँगनवाड़ी शिक्षकों को मार्गदर्शन दिया जाता है, और प्रशिक्षण सत्र आयोजित किए जाते हैं।

हम उन्हें मस्तिष्क के विकास, खेल के महत्त्व और प्रारम्भिक बाल्यावस्था शिक्षा के क्षेत्रों जैसे विषयों पर चर्चा करने के लिए तैयार करते हैं। इन सत्रों को वास्तविक जीवन के उदाहरणों और व्यावहारिक रणनीतियों पर आधारित करके, शिक्षक अमूर्त अवधारणाओं को माता-पिता के लिए प्रासंगिक और कार्यान्वयन योग्य विचारों का रूप देते हैं।

खेल का महत्त्व : एक गतिविधि

माता-पिता की बैठकों के दौरान शुरुआती मस्तिष्क विकास में खेल और सकारात्मक अनुभवों के महत्त्व को दर्शाने के लिए एक सरल और संवादात्मक गतिविधि आयोजित की जाती है। माता-पिता को दो समूहों में विभाजित किया जाता है। इनमें से प्रत्येक को मस्तिष्क का एक रेखाचित्र दिया जाता है जिसमें इधर-उधर बिखरे हुए बिन्दु होते हैं। आँगनवाड़ी शिक्षक / समन्वयक दो विरोधी या विपरीत कहानियाँ सुनाते हैं और कुछ महत्त्वपूर्ण स्थानों पर रुकते हैं ताकि माता-पिता गतिविधि कर सकें।

समूह 1 : पोषक वातावरण

इसमें बच्चा इन बातों का अनुभव करता है :

- **उत्तरदायी देखभाल :** माता-पिता बच्चे के रोने पर उसे चुप कराते हैं। बच्चे की ज़रूरतों के अनुसार उसकी पर्याप्त देखभाल की जाती है।
- **खेलने के लिए गुणवत्तापूर्ण समय :** माता-पिता लुका-छिपी का खेल खेलते हैं, और कविता गायन करते हैं। बच्चे को खिलौनों व खेल सामग्री के साथ जुड़ने की आज़ादी होती है।
- **भाषा समृद्ध बातचीत** : माता-पिता और बच्चों की देखभाल करने वाले लोग, चाहे वह आँगनवाड़ी के साथी हों या परिवार के अन्य सदस्य, बच्चे से बात करते हैं, दैनिक गतिविधियों के बारे में बात करते हैं या सरल कहानियाँ पढ़कर सुनाते हैं।
- **सुरक्षित वातावरण :** बच्चे के पास स्वतंत्र रूप से खोजबीन करने के लिए एक स्वच्छ और सुरक्षित स्थान है।

हर बार जब किसी सकारात्मक अनुभव का वर्णन किया जाता है तो समूह दिए गए मस्तिष्क के रेखाचित्र के भीतर दो बिन्दुओं को जोड़ता है। कहानी के अन्त तक, उनके मस्तिष्क के रेखाचित्र में एक दूसरे से जुड़े हुए कई मार्ग होते हैं जो एक मज़बूत तंत्रिका नेटवर्क का निरूपण करते हैं।

समूह 2 : उपेक्षापूर्ण वातावरण

इसमें बच्चा इन बातों का सामना करता है :

- **आपसी बातचीत का अभाव :** माता-पिता बहुत व्यस्त होते हैं या उपस्थित नहीं होते हैं जिससे काफ़ी कम जुड़ाव होता है।
- **असंगत प्रतिक्रियाएँ :** माता-पिता अपने नियमों और अपेक्षाओं के अनुरूप आचरण नहीं करते हैं– कभी किसी बात पर सहमत होते हैं और कभी उसी को मना कर देते हैं।
- **खेल का अभाव :** बच्चे को प्रोत्साहित करने के लिए खिलौने या अन्तःक्रियात्मक गतिविधियाँ नहीं होती हैं।
- **तनावपूर्ण वातावरण :** घर में अव्यवस्था होती है, और बच्चे को डाँट-फटकार या उपेक्षा का अनुभव होता है। कई बार तो बच्चे को अपने छोटे भाई-बहनों की देखभाल भी करनी पड़ती है।
- **सीमित भाषाई सम्पर्क :** संवाद बेहद कम होता है जो अकसर निर्देशों या डाँट-फटकार तक सीमित होता है।

कई बार माता-पिता छोटे-छोटे निर्देश तो देते हैं, जैसे, 'पानी पी लो', 'खाना खा लो', 'काम क्यों नहीं किया', 'शैतानी क्यों की', आदि। लेकिन यह छोटे-छोटे निर्देश मिलकर कोई अर्थ नहीं बनाते। इसलिए बच्चे के हिस्से में ऐसे टूटे-फूटे संवाद ज़्यादा कुछ जोड़ नहीं पाते।

कहानियों के बाद सन्दर्भदाता दोनों मस्तिष्कों की तुलना करते हैं, और इस बात पर ज़ोर देते हैं कि सकारात्मक अनुभव एक मज़बूत और स्वस्थ मस्तिष्क के विकास में किस प्रकार से योगदान देते हैं।

गतिविधि के अन्त में, एक अच्छे पोषक वातावरण में बच्चे का निरूपण करने वाला मस्तिष्क दूसरे की तुलना में स्पष्ट रूप से अधिक जुड़ा हुआ दिखाई देता है, और जब मस्तिष्क के दोनों

चित्र 2 : मस्तिष्क रेखाचित्र वाली गतिविधि कराते माता-पिता

चित्र 3 : गतिविधि के साथ जुड़े हुए माता-पिता

चित्रों को एक साथ रखा जाता है तो विषमता दिखाई देती है। इसे देखकर अकसर माता-पिता यह सोचकर आश्चर्यचकित हो जाते हैं कि असन्तुलित वातावरण का बच्चे पर कितना बुरा प्रभाव पड़ सकता है। यह गतिविधि बहुत प्रभावशाली साबित हुई है। इस दौरान कई माता-पिता भावुक हो जाते हैं और खुलकर अपने व्यवहार को बदलने का संकल्प लेते हैं। इसके साथ ही, वह अपने बच्चे की विकास यात्रा के प्रति अधिक ध्यान देने और उनके प्रति सम्मानजनक होने का वादा करते हैं। इस प्रकार के शक्तिशाली निरूपण को देखने से माता-पिता को यह समझने में मदद मिलती है कि बच्चे के मस्तिष्क के विकास पर ज़िम्मेदार तरीक़े से की गई देखभाल और सकारात्मक अन्तःक्रिया का कितना गहरा प्रभाव पड़ता है। वे यह भी समझ पाते हैं कि एक सुरक्षित, समृद्ध और प्रेमपूर्ण वातावरण को बढ़ावा देकर अपने बच्चे के भविष्य को आकार देने में उनकी भूमिका अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है।

सीखने से सम्बन्धित धारणाओं में बदलाव लाना

'सीखना स्कूल से शुरू होता है', यह विचार आँगनवाड़ी शिक्षकों के सामने आने वाली मुख्य चुनौतियों में से एक है। इसके लिए उन्हें माता-पिता की सीखने से सम्बन्धित धारणा को बदलना होता है। इस ग़लत धारणा से निपटने के लिए हम शिक्षकों को प्रशिक्षित करते हैं जिसमें हम जन्म से छह साल की विकासात्मक अवधि के महत्त्व पर ज़ोर देते हैं। शिक्षकों को ऐसे साधन और सरल संसाधन प्रदान किए जाते हैं जिनसे वह यह प्रदर्शित कर सकें कि कैसे दैनिक अन्तःक्रियाएँ, ज़िम्मेदार देखभाल और खेल, बच्चे के सीखने और विकास की वृद्धि में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

माता-पिता के मन में अपने बच्चों की मदद करने की क्षमता के बारे में जो सन्देह होते हैं उन्हें दूर करने में शिक्षक उनकी मदद करते हैं। वह उन्हें आश्वस्त करते हैं कि सार्थक जुड़ाव के लिए अकादमिक ज्ञान की ज़रूरत नहीं है, बल्कि खेल और बातचीत के माध्यम से जुड़ने की इच्छा की आवश्यकता है। माता-पिता को सरल, रोज़मर्रा की ऐसी गतिविधियों के साथ जुड़ने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है जो उनके बच्चे के विकास को बढ़ावा देती हैं। उदाहरण के लिए, वह कविताओं का गायन कर सकते हैं, खाना बनाते या सफ़ाई करते समय दैनिक गतिविधियों के बारे में बता सकते हैं, या टहलते समय रंगों, आकृतियों और वस्तुओं की ओर इशारा कर सकते हैं। लुका-छिपी या आई स्पाई जैसे सरल खेल खेलने से अन्तःक्रिया को बढ़ावा मिलता है, और भाषा व सामाजिक कौशल का निर्माण होता है। कहानी सुनाना या साथ में चित्र पुस्तकें देखना कल्पना और शब्दावली को बढ़ाता है।

माता-पिता के साथ बातचीत के माध्यम से, शिक्षक कुछ ऐसे सरल, व्यावहारिक विचारों को साझा कर सकते हैं जो उनके बोझ को कम करते हैं, बच्चे के विकास को बढ़ावा देते हैं और माता-पिता व बच्चे के आपसी सम्बन्धों को मज़बूत करते हैं। उदाहरण के लिए, माता-पिता की बैठकों या घर के दौरे के दौरान, आँगनवाड़ी शिक्षक यह बता सकते हैं कि कैसे नियमित घरेलू गतिविधियाँ बच्चों को रचनात्मक रूप से व्यस्त रख सकती हैं। उदाहरण के लिए, जब वह बाज़ार से सब्ज़ियाँ लाते हैं तो वह बच्चों को सब्ज़ियों को अलग-अलग ढेर में रखने के लिए कह सकते हैं। यह गतिविधि सरल है, बच्चे को व्यस्त रखती है, और उनमें छाँटने एवं वर्गीकरण करने जैसे महत्त्वपूर्ण संज्ञानात्मक कौशल विकसित करने में मदद करती है।

बच्चों को खाने के लिए प्लेट निकालने या कपड़े तह करने जैसे छोटे-छोटे कामों में मदद करने के लिए प्रोत्साहित करने से उनका आत्मविश्वास बढ़ता है और उनमें सूक्ष्म मोटर कौशलों का निर्माण होता है। इन गतिविधियों को दैनिक दिनचर्या में शामिल करना आसान है, और इनसे माता-पिता को एक पोषक व प्रोत्साहक वातावरण बनाने में मदद मिलती है जो उनके बच्चे के विकास में सहायक है। यह गतिविधियाँ बच्चों को रचनात्मक रूप से व्यस्त रखती हैं, और इनमें माता-पिता को अलग से समय देने की ज़रूरत भी नहीं पड़ती। यही नहीं, इनसे माता-पिता और बच्चे के सम्बन्ध भी मज़बूत होते हैं।

सत्र के दौरान शिक्षक, माता-पिता को इसी तरह की गतिविधियाँ करने के लिए आमंत्रित कर सकते हैं, या अपने स्वयं के रचनात्मक विचार साझा कर सकते हैं। इससे आत्मविश्वास बढ़ता है, और माता-पिता को अपने बच्चे की शिक्षा में सक्रिय भागीदार के रूप में देखने की प्रेरणा मिलती है।

एक बच्चे (रोहन) की माँ राचम्मा ने बताया कि मासिक बैठकों में भाग लेने के बाद से वह घर पर अपने बेटे रोहन के साथ बेहतर रूप से जुड़ पा रही हैं। आँगनवाड़ी में खेल-आधारित गतिविधियों से प्रेरित होकर, रोहन अकसर अपनी जानकारी को घर ले आता है, विकासात्मक क्षेत्रों पर केन्द्रित खेल और गतिविधियाँ दिखाता है, और उन्हें भी इसमें शामिल होने के लिए आमंत्रित करता है। इन साझे क्षणों से न केवल उनके बन्धन मज़बूत हुए हैं, बल्कि रोहन के विकास में सहायता करने के लिए राचम्मा का आत्मविश्वास भी बढ़ा है।

माता-पिता की बैठकों से राचम्मा को कई जानकारियाँ प्राप्त हुईं। उन्हें कई ऐसे व्यावहारिक विचार मिले जिनका इस्तेमाल करके वह रोहन के साथ सरल, आनन्ददायक गतिविधियाँ कर सकती हैं। जैसे– कहानी सुनाना, गाने गाना या ऐसे खेल खेलना जो उसके मोटर कौशल और संज्ञानात्मक विकास को बढ़ावा देते हैं। इन गतिविधियों में वह ख़ुद भी सक्रिय रूप से शामिल होती हैं। इस वजह से उन्हें लगता है कि वह रोहन की सीखने की यात्रा में उसके साथ जुड़ पा रही हैं, और जब वह रोहन की प्रगति देखती हैं तो उन्हें बड़ा गर्व होता है। अब उन्हें इस बात की बेहतर समझ है कि इस व्यावहारिक भागीदारी के परिणामस्वरूप रोहन के विकास को निर्धारित करने में रोल प्ले और अन्तःक्रियाएँ कितनी महत्त्वपूर्ण हैं।

खिलौना संग्रहालय स्थापित करना

घर के दौरे के दौरान, अकसर यह देखा जाता है कि आँगनवाड़ी से लौटने के बाद, बच्चे स्क्रीन (टीवी या मोबाइल) पर काफ़ी ज़्यादा समय बिताते हैं। इस समस्या के समाधान के लिए खिलौना संग्रहालय शुरू किया जा सकता है, और आँगनवाड़ी शिक्षकों को इन संग्रहालयों को प्रभावी ढंग से स्थापित करने तथा प्रबन्धित करने के तरीक़ों व जानकारी से लैस किया जा सकता है। शिक्षक, स्थानीय समुदाय से मदद लेते हैं, दान किए गए खिलौने और संसाधन इकट्ठा करते हैं, और एक ऐसी प्रणाली बनाते हैं जिससे माता-पिता अपने बच्चों के घरेलू इस्तेमाल के लिए विकासात्मक रूप से उपयुक्त खेल सामग्री ले सकें।

माता-पिता खिलौना संग्रहालय में जाकर अपने बच्चों के लिए खिलौने ले सकते हैं। इन खिलौनों को वह एक सप्ताह के लिए घर पर इस्तेमाल कर सकते हैं। इस पहल से न केवल बच्चों को अलग-अलग तरह के खिलौने उपलब्ध होते हैं, बल्कि आँगनवाड़ी केन्द्रों में वह जो कुछ सीखते हैं उन बातों को भी मज़बूती मिलेगी और उनका विस्तार होगा। इससे घर पर भी उनका विकास जारी रहेगा। आँगनवाड़ी शिक्षक घर के लिए दिए गए खिलौनों का विस्तृत रिकॉर्ड रखते हैं, और यह सुनिश्चित करते हैं कि उनका अच्छी तरह से रखरखाव किया जाए व उन्हें समय पर लौटा दिया जाए। यह प्रणाली बच्चों में ज़िम्मेदारी की भावना पैदा करती है, और उन्हें साझा संसाधनों की देखभाल करने का महत्त्व सिखाती है।

माता-पिता की बैठकों के दौरान, आँगनवाड़ी शिक्षक उन्हें समझा सकते हैं कि खेल के माध्यम से बच्चे समस्या-समाधान करना सीखते हैं, रचनात्मकता विकसित करते हैं, और अपनी देखभाल करने वाले लोगों के साथ उनके सम्बन्ध मज़बूत होते हैं। उदाहरण के लिए, खिलौना संग्रहालय में पज़ल, ब्लॉक, पेग बोर्ड, मोती, स्टैकिंग कप, आदि रखे होते हैं। शिक्षक माता-पिता को बताते हैं कि ब्लॉक या पज़ल जैसे खिलौनों के साथ खेलने से बच्चों को समस्या-समाधान करने और स्वतंत्रता के कौशल हासिल करने में किस तरह से मदद मिलती है; और कैसे रंगों की छँटाई व गिनती जैसी गतिविधियों के लिए मोतियों का इस्तेमाल करने से सूक्ष्म मोटर कौशल और शुरुआती अंकगणितीय अवधारणाओं को विकसित करने में मदद मिलती है।

आँगनवाड़ी हब्बा (त्योहार)

आँगनवाड़ियों की भूमिका को फिर से परिभाषित करने के लिए हम निरन्तर प्रयासरत रहते हैं। हम यह मानते हैं कि शिक्षक आँगनवाड़ियों के बारे में माता-पिता की धारणा को विकसित करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। हमने जो प्रमुख पहलें शुरू की हैं, उनमें से एक है आँगनवाड़ी हब्बा (त्योहार)। यह आँगनवाड़ियों को मात्र देखभाल वाले स्थान से सक्रिय शिक्षण के केन्द्र में बदलने के लिए आयोजित किया गया उत्सव है। यह कार्यक्रम इन केन्द्रों में सीखने और विकास की सम्भावनाओं को प्रदर्शित करता है, और प्रारम्भिक बाल्यावस्था शिक्षा के महत्त्व पर बल देता है।

माता-पिता अपने बच्चे के विकास का समर्थन करने के लिए खेल-आधारित सीखने, सकारात्मक अनुशासन और कहानी सुनाने जैसी सरल दैनिक गतिविधियों के महत्त्व को समझते हैं। यह कार्यक्रम माता-पिता, शिक्षकों और समुदाय के बीच सहयोग को बढ़ावा देता है तथा परिवारों को अपने बच्चे की शिक्षा में सक्रिय रूप से योगदान करने और एक मज़बूत सहायता नेटवर्क बनाने के लिए सशक्त बनाता है।

शिक्षक विभिन्न विकासात्मक गतिविधियों, जैसे भाषा विकास अभ्यास, रचनात्मक कला, शारीरिक खेल और संज्ञानात्मक खेलों को प्रदर्शित करने के लिए स्थान मुहैया कराते हैं। माता-पिता इन गतिविधियों का प्रत्यक्ष अनुभव करते हैं, और आँगनवाड़ी परिवेश में सीखने की क्षमता के बारे में जागरूक होते हैं।

आगे का रास्ता

शुरुआती वर्षों में माता-पिता की भूमिका को कम करके नहीं आँका जा सकता। जागरूकता बढ़ाकर और व्यावहारिक जुड़ाव के विचार प्रदान करके, हम माता-पिता को अपने बच्चे के विकास में सक्रिय भागीदार बनने के लिए सशक्त बना सकते हैं। साथ मिलकर, हम ऐसे वातावरण का निर्माण कर सकते हैं जो बच्चों को उनकी पूरी क्षमता तक पहुँचने में सक्षम बनाता है।

[1]मक्कळा जागृति बेंगलूरु में स्थित एक ग़ैर-सरकारी संगठन है जो एक स्थाई और समतामूलक समाज के निर्माण के लिए बच्चों और विविध समूहों के समग्र विकास की दिशा में काम कर रहा है।

अमृता मुरली *मक्कळा जागृति* में प्रारम्भिक शिक्षा प्रयासों का नेतृत्व करती हैं। यहाँ वह आँगनवाड़ियों में बच्चों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने के लिए समर्पित हैं। वह टीच फ़ॉर इंडिया में फ़ेलो रही हैं, और उन्हें सरकारी स्कूलों में बच्चों और शिक्षकों के साथ काम करने का 10 साल से ज़्यादा का अनुभव है।

सम्पर्क : amrutha@makkalajagriti.org

सभी बच्चों को मिलें सीखने के समान अवसर

छोटे लाल तँवर

सीखने की असीम सम्भावना से लबरेज़ बच्चे जब स्कूल को पिटने और डरने वाली जगह के रूप में देखने लगते हैं, तब शिक्षक बच्चों के सीखने पर भरोसा करके, उनके प्रति स्नेह और विविधता के प्रति सम्मान जताकर, बच्चों में स्वामित्व और आत्मसम्मान का भाव जगाते हैं। यह काम चुनौती भरा है ज़रूर, लेकिन शिक्षकों की मानवीय-पेशेवर कोशिशें इसे सम्भव बनाती हैं।

चित्र 1 : गोल घेरे में बैठाकर शिक्षक हर विद्यार्थी के हाव-भाव को देखते हैं और सबको सीखने का अवसर देते हैं

जब हम विद्यालय की शुरुआत कर रहे थे तो यह स्पष्टता बनाने की कोशिश की जा रही थी कि दाख़िले में हम किन बच्चों को प्राथमिकता देंगे। आपसी विमर्श के बाद समझ बनी कि हम शुरू में उन वंचित बच्चों को नामांकित करेंगे जो या तो स्कूल नहीं जा रहे हैं, या अपेक्षित ढंग से सीख नहीं पा रहे हैं। इस सिलसिले में हम बमोर गाँव के उच्च प्राथमिक स्कूल में गए क्योंकि वहाँ शिक्षकों को गाँव के शाला त्यागी बच्चों की जानकारी थी। उन्होंने हमें शाला त्यागी बच्चों की लिस्ट दी और उन बच्चों के नाम भी बताए जो उनके स्कूल में नामांकित थे, लेकिन कक्षा 4 और 5 में आने के बाद भी पढ़ने-लिखने की सामान्य दक्षताएँ हासिल नहीं कर पाए थे।

हमने इन बच्चों का नामांकन कक्षा 1 से 5 में उनकी उम्र के आधार पर किया। कक्षा 5 में 14 बच्चे नामांकित किए गए। इन में 70-80 प्रतिशत बच्चे ऐसे थे जिनको वर्ण और मात्राओं की समझ नहीं थी, या अर्थपूर्ण शब्द नहीं बना पाते थे। इन बच्चों में एक छात्रा थी जो स्कूल के नाम तक से डरती थी। स्कूल के बारे में उसकी छवि पिटने और प्रताड़ित होने वाली जगह के रूप में बन गई थी क्योंकि उसने स्कूल में दूसरे बच्चों को पिटते हुए देख लिया था, और ख़ुद भी शिक्षक द्वारा दी गई सज़ा का शिकार हो चुकी थी। जब हम गाँव में इस छात्रा को मिलने की कोशिश करते, छात्रा स्कूल वालों का नाम सुनकर ही भाग जाती थी। उसके अभिभावक कहते, "क्या करें? हम तो ख़ूब कहते हैं, यह स्कूल जाती ही नहीं है।" कई दिनों तक वह छात्रा हमसे मिलने की हिम्मत तक नहीं जुटा पाई। उसको स्कूल से डर लगता था।

इस प्रकार स्कूल की शुरुआत ऐसे 85 बच्चों से की गई जिनमें अलग-अलग उम्र के शाला त्यागी, विभिन्न अकादमिक स्तर के और अलग-अलग आर्थिक, सामाजिक पृष्ठभूमियों के बच्चे नामांकित थे। हमारे सामने चुनौती सिर्फ़ पठन-पाठन की न होकर इन सभी पृष्ठभूमि के बच्चों को समावेशित कर 'हम' की भावना जाग्रत करने और सँजोने की भी थी। अकसर स्कूल नामांकन में ही विभिन्न पृष्ठभूमियों के बच्चों को दाख़िला दिलाने

को ही समावेशन मान लेते हैं, लेकिन केवल नामांकन भर से समावेशन नहीं हो जाता। उसके लिए कक्षा-कक्षीय और विद्यालयी प्रक्रियाएँ ज़्यादा महत्त्वपूर्ण होती हैं।

विद्यालय में समावेशी माहौल बन पाए, इसके लिए हमने कुछ प्रभावी प्रयास किए। प्रवेश प्रक्रिया के दौरान ही हमने बच्चों के साथ खेल गतिविधियाँ कीं। इन गतिविधियों से उनके साथ जान-पहचान और परस्पर सहजता का माहौल बनने लगा। बच्चे हमारे साथ घुलने-मिलने लग गए थे। परिणाम यह हुआ कि विद्यालय में न केवल नामांकन बढ़ा, बल्कि वह छात्रा भी स्कूल आने को तैयार हो गई जो विद्यालय के नाम तक से डरती थी। इसी तरह के स्कूली डर से भरे दूसरे बच्चे भी विद्यालय आने लगे।

हमने इन बच्चों के साथ काम की शुरुआत इसी विश्वास से की कि हर बच्चा सीखने की असीम सम्भावनाएँ लेकर आता है, और ये सभी बच्चे सीख सकते हैं। हमारे मन में इस बात की स्पष्टता थी कि बच्चे बेहतर ढंग से तब सीखते हैं जब वह सुरक्षित महसूस करें, उन्हें महत्त्व दिया जाए, उनसे प्यार से पेश आया जाए, और वे ख़ुद पर भरोसा करें। इसी समझ के साथ इन बच्चों के साथ काम की शुरुआत की गई। समावेशन के बहुत सारे आयाम हैं जिन पर सोचने और काम करने की निहायत ज़रूरत होती है। मसलन, बच्चे किस सामाजिक, भाषाई और आर्थिक परिवेश से आ रहे हैं, स्कूल इन बच्चों को किस तरह से देखता है, आदि। हमारी कल्पना के उलट, बच्चों की अवलोकन, एहसास करने, और माहौल भाँपने की क्षमता बहुत तेज़ होती है। वह बड़ों के हाव-भाव से बेहद जल्दी अन्दाज़ा लगा लेते हैं कि बड़े उनके बारे में किस तरह की राय रखते हैं।

> **हर बच्चा अपने-आप में विशेष है, और जब उसे उसके सन्दर्भों की चीज़ों से जोड़कर सिखाया जाता है तो उसका सीखना प्रभावी हो जाता है**

शिक्षक समूह में यह स्पष्टता थी कि सभी बच्चों को बराबरी का एहसास मिले, और उनके मन में किसी भी तरह की ऊँच-नीच की आशंका न रहे। हमने यह क़वायद भी की कि स्कूल की प्रक्रियाओं में सब बच्चों को कैसे शामिल किया जाए, क्योंकि आमतौर पर बच्चों को हर जगह सिर्फ़ निर्देश ही दिए जाते हैं। बड़ों को लगता ही नहीं है कि 8-10 साल का कोई बच्चा अपने विवेक से कुछ कर सकता है। दूसरा पहलू यह है कि स्कूल की व्यवस्था में बच्चे की परिवेशीय समझ को पूरी तरह नज़रन्दाज़ किया जाता है। 6 साल का बच्चा जो भाषा और परिवेश की समझ लेकर आया है, यदि उसी के अनुरूप उसके सीखने की योजना बनाई जाए तो नतीजे अलग आते हैं। बच्चों के साथ जुड़ाव बनाने में हमने इन बच्चों की स्थानीय भाषा, उनके लोकगीत और लोककथाओं का समावेश करने की कोशिश की। बच्चों को कुछ ऐसे बालगीतों का अनुभव दिया गया जिनका सम्बन्ध किसी-न-किसी रूप में उनके परिवेशीय अनुभवों से जुड़ता था। जैसे– "आरे बादल कारे बादल आओ ज़रा झूम के, अपने संग ठण्डी हवा लाओ ज़रा झूम के", "बंजारा नमक लाया ऊँट गाड़ी में", आदि। यह ऐसे बालगीत हैं जो उन बच्चों के जीवन से गहराई से जुड़े हैं, और उनका जीवन कहीं-न-कहीं इन गीतों में आए पदबन्धों से प्रभावित होता दिखता है।

इसका नतीजा यह हुआ कि वह सभी बच्चे, जिनके मन में यह बात पैठ चुकी थी कि वह पढ़ना-लिखना नहीं सीख सकते, धीरे-धीरे सुनी हुई कहानियों और कविताओं में आनन्द लेने लगे। शुरू में यह बच्चे समूह में कविता सुनाते थे। जब बच्चों का यह डर दूर हो गया कि हमारी प्रस्तुति पर कोई हँसेगा नहीं, और हमें उत्साहित ही किया जाएगा तो उनका हौसला बढ़ने लगा। फिर यह बच्चे छोटी-छोटी कहानियाँ व कविताएँ सुबह की सभा में अकेले भी प्रस्तुत करने लगे। इससे उम्र में बड़े और छोटे, पढ़ाई में अगड़े और पिछड़े, सभी सहज महसूस करने लगे।

नामांकन के बाद समावेशन केवल शिक्षण प्रक्रियाओं को समावेशी और सहज बनाने भर से ही नहीं होता, बल्कि दूसरी विद्यालयी प्रक्रियाओं को भी समावेशी होना ज़रूरी है। स्कूल टीम को भी ख़ुद की समझ और धारणाओं पर काम करने की लगातार ज़रूरत महसूस होती रही। विद्यालयी प्रक्रियाओं को समावेशी बनाने लिए विद्यालय प्रबन्धन में बच्चों की भागीदारी सुनिश्चित करने के लिए अलग-अलग समितियाँ बनाई गईं। इनमें से कुछ समितियाँ इस प्रकार थीं– मिड डे मील समिति, सुरक्षा समिति, खेल समिति, पुस्तकालय समिति, मॉर्निंग असेंबली समिति, आदि। इनमें सभी बच्चों को प्रतिभाग करने के अवसर थे और हर कक्षा, उम्र और पृष्ठभूमि के बच्चों का समावेश था। बच्चों के साथ शिक्षकों को भी सभी समितियों से जुड़ना ज़रूरी था। जब बच्चों को ज़िम्मेदारी निभाने के साथ-साथ ख़ुद की अहमियत का भी भान होने लगा तो उनके मन में चीज़ों और प्रक्रियाओं के प्रति स्वामित्व का भाव आने लगा। वह ज़्यादा आत्मविश्वास से अपनी भूमिका निभाने लगे। उनका यह आत्मविश्वास कक्षा में भी प्रतिबिम्बित होने लगा। इस तरह के समावेशन ने बच्चों के बीच एक 'हम' की भावना जाग्रत की, और चीज़ों को कैसे क़रीने से किया जाता है, इसका भान भी दिया।

इस सबके साथ हमने ये समझने की कोशिश भी की कि बच्चों की रुचि के और कौन-कौन से ऐसे क्षेत्र हैं जिनके माध्यम से वे ख़ुद को ज़्यादा सृजनात्मक ढंग से व्यक्त कर पाते हैं। कुछ बच्चे बोलकर अपनी बात कहना चाहते हैं, और कुछ चित्रों के माध्यम से अपनी बात व्यक्त करना चाहते हैं। इनमें बालगीत गुनगुनाना, हाव-भाव के साथ इन्हें प्रस्तुत करना, और चित्रात्मक ढंग से अभिव्यक्ति देना प्रमुख हैं। चित्रों के माध्यम से ख़ुद को व्यक्त करने के अनुभव कला शिक्षक द्वारा दिए गए। इनमें बच्चों ने सुनी या पढ़ी हुई कविता-कहानियों को चित्रात्मक दृश्यों के माध्यम से बताने का प्रयास किया। यह तरीक़ा बच्चों को काफ़ी आकर्षक लगा। इस विधा के साथ हर बच्चा जुड़ना चाहता है, यदि उन्हें अपनी दुनिया के अनुभवों को अभिव्यक्त करने की आज़ादी मिले। यह तभी सम्भव है जब शिक्षक विषयों के अपने दायरों से बाहर आकर सीखने के सभी विषय क्षेत्रों के बीच सम्बन्ध देख पाता है। ऐसा करते

चित्र 2 : रंगों से चित्रकारी की तैयारी करते विद्यार्थी

हुए, शिक्षक बच्चों के सीखने की सम्भावनाओं के रास्ते खोलता जाता है जिससे सीखने की प्रक्रिया आसान व जीवन्त बन जाती है। इस प्रकार की शिक्षण गतिविधियाँ सभी बच्चों को प्रतिभाग करने के अवसर देने के साथ-साथ उनकी वैयक्तिक प्रतिभाओं को पहचानने और निखारने के अवसर देती हैं। उदाहरण के लिए, बच्चे ने दिवाली में अपने आस-पास के दृश्यों को उकेरते हुए उनका वैसा ही वर्णन किया है जैसा उसने देखा व अनुभव किया। जब शिक्षक बच्चों को अनुभव साझा करने के लिए उनकी रुचि के अनुसार माध्यम को चुनने की आज़ादी देते हैं तो चित्र बनाना, बनाए चित्रों पर बात करना और उस बात को भाषाई प्रतीकों के माध्यम से व्यक्त करना, उसी तरह आनन्द के स्रोत बन जाते हैं।

इन उदाहरणों ने इस बात को ताक़त दी कि हर बच्चा अपने-आप में विशेष है, और जब उसे उसके सन्दर्भों की चीज़ों से जोड़कर सिखाया जाता है तो सीखना प्रभावी हो जाता है। शिक्षक को प्रत्येक बच्चे की पृष्ठभूमि समझने का मौक़ा मिलता है। इस पूरी प्रक्रिया का एक मूल मंत्र यह है कि किसी एक बच्चे की दूसरे बच्चे से तुलना नहीं की जानी चाहिए। हर बच्चे के सीखने का तरीक़ा दूसरों से अलग होता है, फिर क्यों हम हर दिन बच्चों को तुलना की चक्की में बेरहमी से पीसते हैं, और ऐसा करते हुए उनमें अयोग्यता का भाव भरते हैं! ऐसा करने से उनका सीखने से भरोसा ही उठ जाता है, और जो बच्चे पढ़ाई के जिन क्षेत्रों में कमज़ोर होते हैं वह उससे दूर होने लगते हैं। साथ ही, जिन बच्चों के अनुभवों को कक्षा में स्थान नहीं मिलता है वह भी बहिष्कृत जैसा महसूस करने लगते हैं।

सीखने-सिखाने की यह यात्रा बच्चों और शिक्षकों के लिए मज़ेदार व उत्साहित करने वाली थी। बच्चे स्कूल में ख़ुशी-ख़ुशी आ रहे थे, और उनका सीखना हो रहा था। क़रीब 4-5 महीने के मिले-जुले प्रयासों से स्कूल से डरने वाले और स्कूल की अपेक्षाओं की तुलना में बहुत कम सीखने वाले 8-10 बच्चे कहानी-कविताएँ पढ़ने लगे, पढ़े हुए टेक्स्ट पर बात करने लगे, और अलग-अलग माध्यम से अपने विचारों को व्यक्त करने लगे थे। अब इन बच्चों को भाषा की सभी दक्षताओं पर समान रूप में काम करने का मौक़ा मिल पा रहा था। अलग-अलग उम्र के बीच उनमें कोई अलगाव नहीं दिख रहा था, और सीखने के क्रम में जो बच्चे विभिन्न स्तरों पर थे उनमें भी अलगाव न होकर सहजता का भाव था। इससे माहौल ज़्यादा सहज हो गया, और अब बच्चों में कम-से-कम विद्यालय की चहारदीवारी में अगड़े-पिछड़े और ऊँच-नीच के भाव प्रदर्शित होते हुए नहीं दिखते थे। बच्चों के लिए यह एक बड़ी उपलब्धि का एहसास था, और हमारे लिए जोश भरने वाली अनुभूति कि बच्चे माक़ूल माहौल और प्रक्रिया मिलने पर अच्छी तरह पढ़ना-लिखना सीख सकते हैं, और बेहतर मानवीय मूल्यों की ओर अग्रसर हो सकते हैं।

ऊपर बताई गई कुछ प्रक्रियाओं से हमने सीखा कि बच्चों के सीखने में उनकी भाषाई, सांस्कृतिक, सामाजिक व आर्थिक पृष्ठभूमि को समावेशित करने से कक्षा संसाधन युक्त हो सकती है। उसे एक बड़े अवसर में तब्दील किया जा सकता है। यह इस बात पर निर्भर करता है कि परिवेश विशेष से आने वाले बच्चों के साथ काम करने वाले शिक्षक समूह का इन पक्षों के प्रति नज़रिया कैसा है। शिक्षक समूह का बच्चों की विविधता के प्रति दृष्टिकोण, अपने व्यवहार और कक्षा प्रक्रिया में ज़रूरी बदलाव कर पाना यह तय करता है कि वह इसे संसाधन के तौर पर देख रहे हैं या बाधा की तरह। यदि इस विविधता को बाधा की तरह न देखा जाए तो वह संसाधन बन जाती है, और बच्चों का स्कूल द्वारा अपेक्षित उद्देश्यों को प्राप्त करना सम्भव हो पाता है। यह ज़रूर है कि अगर शिक्षकों के पास यह नज़र होती है तो वह समाधान भी खोज ही लेते हैं, और अगर दृष्टि नहीं होती है तो संसाधन भी बाधा लग सकते हैं।

छोटे लाल तँवर ने राजस्थान की लोक जुम्बिश परियोजना में 3 साल काम किया। आपने बोध शिक्षा समिति में 12 साल शिक्षकों के साथ अकादमिक समर्थन का कार्य किया। वर्तमान में, आप अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन जयपुर ज़िले के चाकसू ब्लॉक में, ब्लॉक समन्वयक की भूमिका में कार्य कर रहे हैं।

सम्पर्क : chhote.lal@azimpremjifoundation.org

सरिता अब सीख रही है

जय शेखर

मैं, जनपद बलरामपुर, उत्तर प्रदेश के ग्रामीण क्षेत्र के विद्यालय में अध्यापन कर रहा हूँ। मेरी रुचि लाइब्रेरी और इससे जुड़ी शैक्षिक गतिविधियों में अधिक रही है। स्कूल लाइब्रेरी को हमेशा सक्रिय और जीवन्त बनाने के प्रयास किए हैं। संवाद के ज़रिए, मैं बच्चों को स्वतंत्र और मौलिक लेखन के लिए प्रोत्साहित करता रहता हूँ जिससे हमने बच्चों के लेखन से ओतप्रोत ढेर सारी दीवार पत्रिकाएँ बनाई हैं। बच्चों की लिखी कहानियाँ, *प्लूटो, चकमक* और *साइकिल* जैसी बाल पत्रिकाओं में भी प्रकाशित हुई हैं।

इसी बीच, मुझे एहसास हुआ कि छोटे बच्चों के लिए कविताएँ बेहद ज़रूरी हैं। मैंने धीरे-धीरे कक्षा में बहुत-से गीत और कविताएँ सिखाईं। इनमें केरल के केले, जुगनू भाई, टेसू राजा बीच बाज़ार, टके थे 10, नाव चली, हल्लम हल्लम, रेल चली छुक छुक, आदि प्रमुख थीं। कक्षा को बच्चों की रचनाओं से प्रिंट समृद्ध और भाषा समृद्ध बनाते हुए कविता-कहानियों के बहुत-से पोस्टर तैयार किए, और उन्हें बच्चों की पहुँच के अनुरूप दीवार पर लगा दिया। इस पठन सामग्री से जुड़ी गतिविधियों से बच्चों को पढ़ना सीखने में काफ़ी मदद मिली।

मैंने बच्चों को सुनाई कहानियों पर रोल प्ले शुरू किए। प्रभात की कहानी *अच्छा मौसी अलविदा* में तीन पात्र थे– चिड़िया, बिल्ली और भैंस। कहानी के मज़ेदार रीड अलाउड के बाद, उसी अन्दाज़ में बच्चों ने अपनी भाषा में संवाद बोलकर पूरी कहानी को प्रस्तुत किया। सरिता ने भी अपना रोल पूरे हाव-भाव से निभाया। एक दिन श्वेता नांबियार की कहानी 'पहली बार' सुनाई। इसमें शिक्षक का रोल महत्त्वपूर्ण था, और बोले जाने वाले संवाद बहुत लम्बे थे। सरिता ने यह चुनौती स्वीकार की। थोड़ी-सी मदद से उसने बेहतर तरीक़े से अपना रोल निभाया।

सरिता को गाँव के बहुत-से खेल आते थे। यह खेल कक्षा के बाक़ी बच्चों के लिए नए व रोचक थे। मैं भी इन खेलों में शामिल होता। सरिता ही नियम बताती और सबको साथ में खेलने के लिए जोड़े रखती थी। इसी तरह, कहानी पर चित्र बनाने की गतिविधि होती थी। सभी बच्चे कोशिश करते, पर सरिता उसे बहुत लगन से करती।

बच्चों ने पेड़ों से गिरने वाली पत्तियों को एकत्र किया। उनके आकार और रंगों में विविधता थी। बच्चों ने भूरी पीली, हरी और लाल पत्तियों के संयोजन से गोल, चौकोर, तिकोने आकार में सुन्दर संयोजन बनाए। इनमें उन्हें अपनी रचनाशीलता को प्रस्तुत करने के मौक़े मिले।

लाइब्रेरी की किताबों व भाषा समृद्ध कक्षा में इन सारे प्रयासों का प्रभाव यह हुआ कि सरिता, जो सहमी, संकोची और बात-बात पर झगड़ने वाली लड़की थी, अब कक्षा की लीडर है।

एक दिन मध्याह्न भोजन के दौरान सरिता ने टिफ़िन में दोबारा भोजन लिया, और चुपके से अपने बैग में रख लिया। मुझे काफ़ी आश्चर्य हुआ। सोचा, कहीं ऐसा तो नहीं इसकी चाची इसे भरपेट भोजन नहीं देती हो, और यह रोज़ भूखी रहती हो।

फिर मैं पुस्तकालय से प्रभात की किताब *कैसा कैसा खाना* ढूँढ़कर लाया। इंटरवल के बाद इस कहानी का रीड अलाउड किया। मैं किताब को पढ़ते हुए, चित्र दिखाकर बच्चों से खाने के बारे में बातें कर रहा था। तभी सरिता ने बताया कि उसने आज टिफ़िन में खाना रख लिया है। सरिता ने बताया कि आज उसके चाची-चाचा गाँव गए हैं और उसे भी ले जाने की ज़िद कर रहे थे, पर उसने यह कहकर गाँव जाने से मना कर दिया कि उसकी पढ़ाई छूट जाएगी। उसने आँखों में आँसू भरकर बताया कि वह विद्यालय छोड़कर माता-पिता के पास गाँव नहीं जाना चाहती।

जय शेखर, अध्यापक, कम्पोजिट विद्यालय धुसाह, बलरामपुर, उत्तर प्रदेश में अध्यापक हैं।

वंचित समुदाय के बच्चों का विद्यालय से जुड़ना

मीनाक्षी गौड़

कोविड काल के बाद सरकारी स्कूलों में नामांकन घटने लगा था। हमारे स्कूल में भी नामांकन की समस्या होने लगी थी। मैंने स्कूल के चारों तरफ़ नज़रें घुमाईं ताकि उन बच्चों को ढूँढ़ सकूँ जो स्कूल से नहीं जुड़ पाए हैं।

स्कूल से 1 किलोमीटर दूर कुछ कालबेलिया परिवार झुग्गी-झोपड़ी बनाकर रह रहे थे। उनके बच्चे स्कूल नहीं आते थे। सारा दिन कचरा बीनना, इधर-उधर घूमना और पतंग उड़ाने में वह व्यस्त रहते थे। मैं उनके पास पहुँची, और परिवार वालों को कई प्रकार से समझाया-बुझाया कि वह अपने बच्चों को स्कूल भेजें। स्कूल जाने लायक़ बच्चों का दाख़िला भी विद्यालय में किया। दाख़िले के लिए ज़रूरी दस्तावेज़, आधार कार्ड, आदि बनवाने में उनकी मदद की। हालाँकि बच्चे विद्यालय से जुड़ गए थे, लेकिन उनका मन अभी विद्यालय से नहीं लगा था। वह एक दिन आते और फिर हफ़्ते भर ग़ायब रहते। हमेशा सोचती, सम्भव है हमारे प्रयासों से एक दिन सभी बच्चे नियमित रूप से स्कूल आएँ। जब मैं उनको स्कूल के लिए लेने जाती, उनके परिवारजन मुझसे दुर्व्यवहार करते, और कभी-कभी गालियाँ भी मिलतीं। उनको लगता था कि मैं उनके काम में हाथ बँटाने वालों की संख्या कम कर रही हूँ। मैं समझाती कि पढ़ने-लिखने के बाद वह अच्छे आदमी, अच्छे नागरिक बनेंगे, और अच्छी नौकरी कर सकेंगे। पढ़-लिखकर वह अपना और पूरे परिवार का बेहतर तरीक़े से ध्यान रख सकते हैं। इसीलिए तो सरकार और बहुत सारे लोग भी सबको शिक्षित करने में लगे हैं। अच्छा होगा, आप अपने बच्चों को स्कूल भेजें।

समुदाय के पुरुषों में पढ़ने-लिखने को लेकर कोई सजगता नहीं थी। मैं गालियों से क्षुब्ध होने की बजाय सोचती, "गालियों से मेरा क्या बिगड़ जाएगा! यदि दो-चार बच्चे भी शिक्षा से जुड़ते हैं, यह गालियाँ उसके एवज में बहुत कम हैं।" बच्चों को विद्यालय से मिलने वाली सुविधाएँ दी जातीं, हम लोग उनकी हर सम्भव सहायता करते। बच्चों का स्कूल आना माताओं को पसन्द था, लेकिन पिता नहीं चाहते थे कि वह स्कूल जाएँ। वह सोचते थे, पढ़-लिखकर करेंगे क्या! माताएँ भी मज़दूरी करने जाती थीं, इसलिए वह बच्चों को समय पर स्कूल नहीं भेज पाती थीं। बच्चों की अनियमितता से, मैं और मेरे शिक्षक साथी काफ़ी चिन्तित होते। हमने बारी-बारी से उनके घर जाना सुनिश्चित किया और उन्हें स्कूल लाने के काफ़ी प्रयत्न किए, लेकिन प्रयास नाकाफ़ी रहे।

बच्चों की अनियमितता के विषय में मैंने दस्तक समूह में चर्चा की। समूह में मुझे सार्थक सुझाव मिले। बताती चलूँ कि दस्तक समूह हम शिक्षक साथियों का एक ऑनलाइन समूह है जिसमें हम रोज़ शिक्षा, साहित्य और समकालीन विचारों से जुड़ी ज्ञानवर्धक सामग्री पढ़ते हैं। दस्तक समूह ने सुझाया कि जितने बच्चे स्कूल आ रहे हैं उनके साथ बेहतर शिक्षण कार्य करें, उन्हें स्नेह दें, और लगातार समुदाय के सम्पर्क में रहें। बच्चों के माता-पिता को समय-समय पर विद्यालय आमंत्रित करें ताकि वह विद्यालय और अपने बच्चे को कुछ बेहतर करते हुए देख सकें। हमने बिल्कुल वैसा ही किया।

समूह के सुझाव पर, विद्यालय को पर्यावरण मित्र कैम्पस के रूप में विकसित किया गया। कक्षा की दीवारों को 'प्रिंट रिच' बनाने की कोशिश की गई। मेरी बेटी ने भी इसमें काफ़ी मदद की। दीवारों पर पशु-पक्षियों व वन्य-जीवों के चित्र बनाए। कविता, चित्र और चित्र कहानियों के पोस्टर बनाकर लगाए। बाल साहित्य के इस्तेमाल से बच्चों की स्कूल में दिलचस्पी जाग रही थी।

लेकिन सार्थक परिणाम तब मिले जब हमने 10 साल की एक लड़की निर्मला को विद्यालय से जोड़ा। वह घर पर ही रहती थी, और दो महीने स्कूल नहीं आई। इसका कारण जाना, तब समझ आया कि वह दो छोटे भाइयों की देखरेख के लिए घर पर रहती है। निर्मला के मन में यह बात बैठा दी गई थी कि पढ़ना-लिखना उन लोगों का काम नहीं है। यह बात उसके दिमाग़ से निकालने में काफ़ी मेहनत करनी पड़ी। हम उसके घर वालों से लगातार बातचीत करते रहे, उन्हें प्रेरित करते रहे, पढ़ने के फ़ायदे बताए, तब कहीं जाकर निर्मला का स्कूल आना सम्भव हुआ। कुछ दिनों बाद मैंने निर्मला से कहा, "तुम अपने छोटे भाइयों को भी विद्यालय लेकर आया करो।" वह दोनों छोटे भाइयों, और साथ ही बस्ती के कुछ दूसरे बच्चों को भी विद्यालय लाने लगी। अब पढ़ाई के प्रति उसकी लगन देखकर सुखद एहसास हुआ कि हम कुछ तो सार्थक कर रहे हैं। वह ख़ुद भी सीख रही है और दूसरे बच्चों को भी प्रेरित कर रही है। गणित के व्यावहारिक सवालों को भी जल्दी से हल कर पाती है क्योंकि बाज़ार से सामान लाने का काम वह ख़ुद ही करती है। अँग्रेज़ी पढ़ने में भी उसकी रुचि है। अब वह अपनी पढ़ाई को तो गम्भीरता से लेती ही है, साथ के दूसरे बच्चों की पढ़ाई को भी अपनी ज़िम्मेदारी मानती है।

जहाँ बच्चे पहले मैले-कुचैले कपड़ों में ही स्कूल आते थे, अब कुछ साफ़-सुथरे होकर आने लगे हैं। नहाने-धोने से उनके त्वचा सम्बन्धी रोग कम हुए हैं। उनकी अपने शरीर के स्वास्थ्य व स्वच्छता के प्रति जागरूकता बढ़ी है। इनमें ज़्यादातर बच्चे तम्बाकू या गुटखे का सेवन करते थे। इस पर लगातार बातचीत कर उन्हें ख़ूब समझाइश दी गई। तरह-तरह के चित्र दिखाकर इसके दुष्प्रभावों और फैलने

वाले असाध्य रोगों के बारे में बताया। जगह-जगह फेंके गए प्लास्टिक के पाउच की गन्दगी और उनके पर्यावरण पर पड़ने वाले दुष्प्रभावों से अवगत कराया। इससे बात कुछ बनती हुई लगी। अब दुष्प्रभाव से अवगत होकर बच्चे इन व्यसनों से दूरी बनाने लगे हैं। हालाँकि यह सुखद परिणाम अभी भी अपर्याप्त हैं, लेकिन असफलता से कुछ अधिक तो निश्चित हैं। शिक्षकों व समूह के साथियों के समर्थन से सफलता मिलने की उम्मीद बनी हुई है।

मीनाक्षी गौड़, राजकीय प्राथमिक विद्यालय, आडवाणी की ढाणी, सांगानेर ग्रामीण, जयपुर, राजस्थान

प्रोत्साहन से बच्चों में बढ़ता है ख़ुद पर भरोसा

नंदिनी कुमारी

मैं सरकारी विद्यालय में शिक्षिका हूँ। दस वर्षों के अनुभव में मैंने जितना बच्चों को सिखाया है, उससे कुछ अधिक ही उनसे सीखा है। आमतौर पर देखा गया है कि हमारे सरकारी विद्यालय में आने वाले ज़्यादातर बच्चे पहली पीढ़ी के शिक्षार्थी होते हैं। इनमें अधिकांश आर्थिक व शैक्षिक दृष्टि से कमज़ोर पृष्ठभूमि के होते हैं। ऐसे में, सभी बच्चों को एकरूपता से पढ़ाना मुश्किल होता है। किसी को किताब पढ़ना नहीं आता, वहीं किसी को लिखना नहीं आता, और किसी को बोलने में ही झिझक होती है। कुछ प्रतिभा के लिहाज़ से काफ़ी सम्पन्न होते हैं, लेकिन परिस्थितियों के चलते व सही दिशा के अभाव में भटक-से जाते हैं। हर किसी में अपनी अलग-अलग ख़ूबियाँ होती हैं, अलग-अलग कौशल होते हैं। कोई गाने में, तो कोई कुछ बनाने में, वहीं कोई किसी खेल में क़ाबिलियत रखता है।

मैंने अपनी एक विद्यार्थी की ऐसी ही ख़ूबियों को अपने तरीक़े से सिर्फ़ तराशने की कोशिश की, और हासिल यह कि कला के क्षेत्र में उसे एक पहचान भी मिली। अभी दो सत्र पहले की बात है। आठवीं कक्षा में एक विद्यार्थी थी, सुगंधा। उसकी बहन भी साथ ही पढ़ती थी। उसका नाम सुनंदा था। पढ़ने में दोनों ठीक थीं। सुगंधा बहुत अच्छा गाती थी। उसकी आवाज़ बहुत मधुर थी, लेकिन उसमें झिझक काफ़ी ज़्यादा थी। झिझक, एक तो ग्रामीण परिवेश के चलते थी जहाँ नृत्य, गायन, वादन जैसी चीज़ों को बहुत अच्छा नहीं माना जाता और दूसरे, जब अच्छा नहीं माना जाता तो इन कलाओं के लिए कोई सार्थक मंच अथवा प्रस्तुति या प्रदर्शन के लिए अवसर नहीं मिल पाते। ऐसे में, सुगंधा को उसकी इस प्रतिभा को निखारने के लिए राज़ी करना एक टेढ़ी खीर थी। पहली बाधा उसका संकोची और अत्यधिक शर्मीला स्वभाव, और फिर यहाँ की सामाजिक परिस्थितियाँ जिनमें बालिकाओं का नृत्य, गायन, वादन, यहाँ तक कि खेलों में भी भाग लेना कमोबेश शर्म का विषय माना जाता है। इसे जेंडर को लेकर दुराग्रही समाज कह सकते हैं। इन परिस्थितियों के बीच मुझे सुगंधा के साथ काम करना था। पर कैसे? यह एक समस्या थी। उसके घर जाकर उसके माता-पिता से बात की। शुरू में वह भी झिझक रहे थे कि गाँव-जवार में सब लोग क्या कहेंगे कि फलाँ की बेटी मंचों से गाती है! फिर मैंने उनको कुछ महिला गायकों का उदाहरण दिया। चूँकि हमारा क्षेत्र भोजपुरी भाषा-भाषी है, इसलिए मैंने शारदा सिन्हाजी के बारे में बताया कि वह प्रोफ़ेसर भी थीं और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर की गायिका भी। एक और उदाहरण मालिनी अवस्थी का दिया जो लोक गायन में देश की लब्धप्रतिष्ठित गायिका हैं। ख़ैर, दो-चार मुलाक़ातों की जद्दोजहद व समझाइश के बाद मैंने उन्हें राज़ी किया। उन्होंने मेरी बातों पर भरोसा किया, और इसमें मेरे शिक्षक होने की भी बड़ी भूमिका थी। उनका मानना था कि शिक्षक हैं तो उनकी बेटी के लिए सही ही सोच रही होंगी।

फिर सुगंधा। पहले उसकी झिझक दूर करना ज़रूरी था। मैंने ख़ुद उसके साथ कुछ-कुछ गाना शुरू किया, अकेले में। फिर धीरे-धीरे उसे साथ लेकर कक्षा में बच्चों के साथ गाने लगी। बाक़ी बच्चों को भी प्रोत्साहित करती, गीत, कविता वग़ैरह गाने को। जब भी मौक़ा मिलता, उससे कुछ-न-कुछ गाने को कहती। वह शर्म और झिझक के चलते कक्षा में खड़े होकर गा नहीं पाती थी। उसके पैर काँपते थे, अकसर पसीने से भीग जाती। उसके साथ लम्बे समय तक काम करना पड़ा। फिर उसको बैठे-बैठे ही गाने को कहा। मुश्किल से दो-चार पंक्तियाँ गा पाती थी। फिर चुप। कक्षा में कुछ गीत, कविताएँ उससे गवाती। बाक़ी बच्चे भी गाते। फिर विद्यालय में होने वाले कार्यक्रमों, 15 अगस्त, 26 जनवरी और अन्य आयोजन जिनमें सांस्कृतिक गतिविधियाँ हो रही हों, में उसे भाग लेने को प्रोत्साहित करती। उसके साथ मिलकर तैयारी करती। मैं भी सराहती और साथी शिक्षक भी, क्योंकि उसकी प्रतिभा थी ही सराहे जाने योग्य। साथी शिक्षक समुदाय का यह सहयोग महत्त्वपूर्ण था कि उन्होंने विद्यालय में एक सांस्कृतिक माहौल बनाने में बड़ी भूमिका निभाई। जब भी अवसर मिलता वह सुगंधा को ही नहीं, अपितु साहित्य, संगीत या खेल के क्षेत्र में दूसरे बच्चों को भी मौक़े देते और उन्हें सराहते।

ख़ैर, एक-दो बार तो ऐसा हुआ कि हमने किसी दिन सुगंधा का कार्यक्रम रखा तो डर और झिझक के चलते वह विद्यालय ही नहीं आई। लेकिन मैं प्रयास करती रही, और कुछ समय बीतने पर उसने स्टेज फ़ेस करना सीख लिया। फिर एक दिन कुछ मीडियाकर्मी स्कूल में आए। उन्होंने सुगंधा को मेरी फ़ेसबुक प्रोफ़ाइल पर गाते हुए सुना था। उन्होंने एक अच्छी-सी स्टोरी बनाकर प्रकाशित की।

बाद में, सुगंधा को ज़िला मुख्यालय में स्टेज शो का मौक़ा मिला। अब उसका अपना एक एल्बम भी जारी हो आया है, और अभी उसके सामने सपनों का आसमान है जिसमें वह अपनी उड़ान तय कर सकती है।

यहाँ से उसे जो आत्मविश्वास मिला, उससे वह पढ़ने में भी और बेहतर करने लगी। कुछ बच्चे मोटिवेशन के बिना पिछड़े हुए रहते हैं। वह प्रोत्साहन से सीख सकते हैं, और अपनी पसन्द के क्षेत्र में अच्छा कर सकते हैं। बस ज़रूरत है उनके साथ धैर्य बनाकर जुटे रहने की।

सुगंधा की सफलताओं ने विद्यालय को प्रसिद्धि दी और गरिमा भी। विद्यालय में जो सांस्कृतिक-साहित्यिक माहौल था, वह और बेहतर हुआ। इस तरह की गतिविधियों को गम्भीरता से लिया जाने लगा। इसके बाद, बहुत-से बच्चों को घर से भी प्रोत्साहन मिला। विद्यालय की सांस्कृतिक गतिविधियों के प्रति अभिभावकों का भी सकारात्मक रुझान बनने लगा। इन्हें पढ़ने-लिखने की संस्कृति में शामिल गतिविधि की तरह देखा जाने लगा।

नंदिनी कुमारी, राजकीय माध्यमिक विद्यालय, भेड़िया सुअरा, विकासखण्ड देहरी, रोहतास, बिहार

बच्चों ने अँग्रेज़ी में बनाईं ख़ुद की कविताएँ

उपमा रानी

एक दिन जब मैं दूसरी कक्षा की एनसीईआरटी की नई अँग्रेज़ी पुस्तक *Mridang* के पन्ने पलट रही थी तब मैं उसके चमकीले रंगों की ओर आकर्षित हुई। मैं पहली बार इस पुस्तक से पढ़ा रही थी, और जब मैंने इसके पन्नों पर सरसरी नज़र डाली तो मुझे एक कविता मिली जिसका शीर्षक था– 'Everybody stop, everybody stand'। कविता पढ़ने के बाद, मन में एक विचार आया कि मैं इसके साथ कुछ नया और रचनात्मक कर सकती हूँ। इस शीर्षक ने मुझे यह सोचने के लिए प्रोत्साहित किया कि शिक्षक अकसर कक्षा में "सभी खड़े हो जाएँ" या "सभी बैठ जाएँ" जैसे निर्देश देते हैं, इसलिए मैंने सोचा कि हम इन परिचित आदेशों का उपयोग एक नई कविता लिखने की एक प्रेरणा के रूप में कर सकते हैं।

मैंने अपने पाँचवीं कक्षा के विद्यार्थियों के साथ इस गतिविधि को करने का फ़ैसला किया। एक दिन मैंने कक्षा में बच्चों से कहा कि हम एक साथ एक कविता लिखेंगे। यह सुनते ही विद्यार्थियों को लगा कि उन्हें अपनी पाठ्यपुस्तक से किसी कविता की नक़ल करनी है। लेकिन जब मैंने उन्हें बताया कि वे अँग्रेज़ी में अपनी ख़ुद की कविताएँ लिखेंगे, उनके चेहरे पर अनिश्चितता के भाव दिखाई दिए। मैंने उन्हें आश्वस्त किया कि यह गतिविधि मज़ेदार होगी, और उन्हें कोशिश करने के लिए प्रोत्साहित किया। शुरुआत में, मैंने गतिविधि की मॉडलिंग की। मैंने ब्लैकबोर्ड पर एक छोटी कविता लिखी और उसे दो-तीन बार ज़ोर से पढ़ा :

Everybody stop

Everybody stand

Everybody sit

And raise your hand

विद्यार्थियों ने मेरे साथ इसका अनुसरण किया। मैंने उन्हें समझाया कि हम शुरुआत में कविता में आए क्रिया शब्दों (verbs) को बदलेंगे, और तीन सरल नियम साझा किए :

1. वह केवल तीन क्रिया शब्दों का उपयोग कर सकते हैं।

2. क्रिया शब्द एक दूसरे से सम्बन्धित होने चाहिए।

3. तीसरी पंक्ति में उन्हें क्रिया शब्दों से सम्बन्धित एक प्रश्न पूछना था। उदाहरण के लिए, यदि शब्द 'खाओ, पियो, खेलो' हों, तो प्रश्न हो सकता है : तुम क्यों खाते-पीते हो?

4. चौथी पंक्ति में प्रश्न का उत्तर देना होगा : स्वस्थ रहने के लिए।

विद्यार्थियों ने 'Drink', 'Jump' और 'Hop' जैसे अलग-अलग क्रिया शब्दों पर विचार करना शुरू कर दिया। मैंने कक्षा में चक्कर काटते हुए उनके काम को देखा, और सुनिश्चित किया कि वह नियमों का पालन करें। कुछ लड़कियों को अँग्रेज़ी क्रिया शब्दों के बारे में

सोचने में परेशानी हुई, लेकिन वह हिन्दी में अधिक सहज थीं और उन्हें चित्र बनाने में मज़ा आया। मैंने उनसे पूछा, "आप चित्र क्यों बनाती हैं, और इनमें रंग क्यों भरती हैं?" उन्होंने जवाब दिया, "क्योंकि हमें यह अच्छा लगता है!" मैंने सुझाव दिया कि वह 'ओह वाटर फ़न' कविता का उदाहरण देते हुए इसे अपनी कविता में शामिल कर सकती हैं।

एक विद्यार्थी ने 'Hop', 'Jump' और 'Go' लिखा, और मैंने उससे 'Go' का तुकान्त शब्द खोजने को कहा। उसने कहा, "Bow, Bow", और मैंने उसका जवाब स्वीकार कर लिया क्योंकि मुझे लगा कि विद्यार्थियों के लिए सही होने की अपेक्षा प्रयास करना, खोज करना और रचनात्मक होना ज़्यादा महत्त्वपूर्ण है। सभी विद्यार्थियों को गतिविधि का आनन्द लेते हुए देखना एक सुखद अनुभव था।

एक शिक्षक के रूप में मेरी भूमिका यह थी कि मैं उन्हें मार्गदर्शन और उनकी रचनात्मकता का पता लगाने के अवसर दूँ। मैंने सुनिश्चित किया कि उन्हें बहुत ज़्यादा न सुधारूँ, क्योंकि मैं न तो उन्हें हतोत्साहित करना चाहती थी न ही यह चाहती थी कि वह हार मान लें। समय के साथ हमने छोटी कविताओं का एक अद्‌भुत संग्रह तैयार कर लिया। अन्त में, मैंने प्रत्येक विद्यार्थी को एक चार्ट पेपर दिया, और उनसे अपनी कविताओं को साफ़-सुथरे ढंग से लिखने व सजाने को कहा। इन कविताओं को कक्षा की दीवार पर प्रदर्शित किया गया। उनमें से एक कविता इस प्रकार थी :

Everybody come

Everybody go

Everybody walk

On your tip–toe

जब विद्यार्थियों ने अपने काम को प्रदर्शित होते देखा तो उनके चेहरे पर गर्व और ख़ुशी के जो भाव आए, वह अनमोल थे। और यह जानकर, कि उन्होंने कुछ नया और सार्थक बनाया है, मुझे ख़ुशी और सन्तुष्टि की अनुभूति हुई।

अँग्रेज़ी से नलिनी रावल द्वारा अनुवादित।

उपमा रानी, शिक्षिका, राजकीय प्राथमिक विद्यालय, माजरी ग्रांट 1, डोईवाला, देहरादून, उत्तराखण्ड

"ज़रूरी है शिक्षक का रचनात्मक होना" : विश्वनाथ गुंडीगेरे

राघवेंद्र हेर्ले

विश्वनाथ गुंडीगेरे अपने स्कूल में, कक्षा में किए जाने वाले नवाचारों के लिए जाने जाते हैं। उन्होंने अलग-अलग भाषा व संस्कृति से आने वाले बच्चों को कक्षा में सम्मानपूर्ण जगह दी, आत्मविश्वास दिया ताकि वह बेझिझक अपनी घर की भाषा का उपयोग भी करें और कन्नड़ भाषा, जो उनके लिए नई है, को भी सीख सकें। इसके लिए उन्होंने पुस्तकालय का बेहतर इस्तेमाल किया।

विश्वनाथ गुंडीगेरे उच्च प्राथमिक विद्यालय नागरथपेट, सिंधी, बेंगलूरु में प्रधानाध्यापक के पद पर कार्यरत हैं। उन्होंने चार पुस्तकें भी लिखी हैं। इनमें कविता के दो संस्करण, *चौकाबारा* और *एदेया दनिगे किविया गोणा*; लघुकथाओं का एक संग्रह, *मुखवाडागळू मत्तू इतरा कथेगळु;* और *सामान्य ज्ञान* की एक पुस्तक, जिसका शीर्षक सामान्य ज्ञान है, शामिल हैं। उन्होंने दो पुस्तकों, *जनपद अइसिरी* और *सम्प्रीति* का सम्पादन किया है। बेंगलूरु साउथ डिस्ट्रिक्ट 2014 के लिए सर्वश्रेष्ठ शिक्षक पुरस्कार और 2016 में कर्नाटक राज्य कर्मचारी संघ द्वारा साहित्य रत्न पुरस्कार प्राप्तकर्ता, विश्वनाथ गुंडीगेरे ने कन्नड़ साहित्य परिषद की बेंगलूरु इकाई के मानद सचिव के रूप में भी काम किया है।

कक्षा प्रक्रियाओं में उनके द्वारा किए गए नवाचारों के बारे में राघवेंद्र हेर्ले ने *पाठशाला* के स्तम्भ 'इनसे मिलिए' के लिए उनसे बातचीत की। प्रस्तुत हैं, इस बातचीत के कुछ अंश :

चित्र 1 : विश्वनाथ गुंडीगेरे के साथ बातचीत करते राघवेंद्र हेर्ले

> **शिक्षक में रचनात्मक विचार प्रक्रिया होना ज़रूरी है जो शिक्षण-अधिगम की एकरसता को तोड़ने के लिए आवश्यक है।**

राघवेंद्र हेर्ले : एक शिक्षक के रूप में आपने अपनी कक्षा में कौन-सी नवीन पहल की हैं?

विश्वनाथ गुंडीगेरे : कक्षा को हर दिन जितना सम्भव हो सके उतना जीवन्त और सजीव बनाए रखने का प्रयास करता हूँ। ऐसी गतिविधियों की योजना बनाता हूँ जो विद्यार्थियों के लिए रुचिकर हों। उदाहरण के लिए, पाठ की प्रकृति के अनुसार सुर सम्बन्धी उतार-चढ़ाव लाने के लिए विविध गीतों का उपयोग करना, और विद्यार्थियों से 'पंजरशाले' (पिंजरे में बन्द स्कूल) और 'बिल्लहब्बा' (धनुष का त्योहार) जैसे नाटकों का अभिनय करवाना। इन सबके लिए शिक्षक में रचनात्मक विचार प्रक्रिया होनी चाहिए जो शिक्षण-अधिगम की एकरसता को तोड़ने के लिए आवश्यक है। 'हच्चेवु कन्नडादा दीपा' (हम कन्नड़ का दीप जलाएँगे), 'हुट्टरी हाडु' (फ़सल का गीत) जैसी कविताएँ पढ़ाते समय कविता सुनाने और गाने के अलग-अलग तरीक़ों का उपयोग करता हूँ। फिर बच्चों को विभिन्न तरीक़ों से कविता पाठ करने और गाने के लिए प्रेरित करता हूँ। चाहे गद्य हो या पद्य, अभिनय की तकनीक का उपयोग ज़्यादा करने का प्रयास रहता है क्योंकि यह बच्चों से अधिक जुड़ाव बनाती है। यह एकल अभिनय हो सकता है, या कई बच्चे पाठ का अभिनय कर सकते हैं। पाठ की आवश्यकताओं के अनुसार सामान्य ज्ञान के प्रश्न, बोध के प्रश्न, सन्दर्भगत और विस्तारात्मक प्रश्न या अनुप्रयोग के प्रश्नों का प्रयोग होता है। मुख्य रूप से, हमारा ध्यान इस बात पर होता है कि शिक्षक को कविता या पाठ पढ़ाने में आनन्द आए और बच्चों को पढ़ने में। जब शिक्षक को आनन्द नहीं आता तब बच्चों को भी आनन्द नहीं आता है। व्याकरण पढ़ाते समय हम यह ध्यान रखते हैं कि विद्यार्थियों पर व्याकरण सम्बन्धी कई अवधारणाएँ एक साथ न थोप दी जाएँ, बल्कि उन्हें हर अवधारणा के लिए

पर्याप्त समय मिले ताकि वह अवधारणाओं को व्यवस्थित रूप से सीख सकें। उन्हें व्याकरण के बारे में अपने विचार देने की बजाय व्यावहारिक उदाहरण खोजने में सक्षम बनाता हूँ। नाटक पढ़ाते समय, मैं अन्तर्दृष्टि (अभिनेता द्वारा चरित्र के दिल और दिमाग़ में उतरना), बलाघात और स्वर के उतार-चढ़ाव पर ज़ोर देता हूँ।

राघवेंद्र हेर्ले : बच्चों की सीखने की क्षमता को बेहतर बनाने के लिए भाषा और साहित्य के शिक्षण के माध्यम से कौन-सी विधियाँ और तकनीक अपनाई जा सकती हैं?

विश्वनाथ गुंडीगेरे : जब शिक्षण की कोई भी प्रक्रिया सरल से कठिन की ओर बढ़ने वाली होती है तब बच्चों की सीखने के प्रति दिलचस्पी बढ़ती जाती है। इस सम्बन्ध में भाषा और साहित्य बहुत महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। स्कूल के पुस्तकालय का इस सन्दर्भ में अच्छा उपयोग किया जा सकता है। हमारे स्कूल के पुस्तकालय में 5000 से अधिक पुस्तकें हैं। लेकिन बात पुस्तकों की संख्या या व्यवस्थित पुस्तकालय होने से थोड़ा और आगे की है कि इन पुस्तकों का उपयोग कितना हो पा रहा है, और पुस्तकालयों को बच्चों के लिए सीखने के संसाधन के रूप में कितना उपयोग में लाया जा रहा है। मेरा प्रयास होता है कि पुस्तकालय की पुस्तकें बच्चों को अपनी दोस्त लगें, और वह उन्हें पढ़ने के प्रति ललक से भरे हों। मैं अपनी कक्षा में पूरक अधिगम के लिए पढ़ाई के कोने रीडिंग कॉर्नर का ध्यानपूर्वक उपयोग करता हूँ। इसके लिए विद्यार्थियों को उनकी पसन्द की पुस्तकें पढ़ने के लिए, पढ़ी गई कविता, कहानी या निबन्ध के बारे में बोलने के लिए प्रोत्साहित करता हूँ, और उन्हें अपनी भावनाओं व अनुभवों को लिखने के लिए प्रेरित करता हूँ। मैं उन्हें लेखकों और उनके लेखन के बारे में विवरण और कहावतें एकत्र करने, और फिर उनसे इन संग्रहों की हाथ से बनाई गई एक फ़ाइल या पुस्तक बनाने के लिए कहता हूँ। उनमें सामग्री और जानकारी एकत्र करने के कौशल को विकसित करने के महत्त्व पर ज़ोर देता हूँ। स्कूल में, मैं बच्चों को स्वतंत्रता दिवस, बाल दिवस, शिक्षक दिवस, खेल दिवस और दूसरे सांस्कृतिक कार्यक्रम मनाने की ज़िम्मेदारी सौंपता हूँ, और यह सुनिश्चित करता हूँ कि वह इन कार्यक्रमों का प्रबन्धन सफलतापूर्वक करें। साथ ही, वार्षिक और मध्यावधि छुट्टियों के दौरान, विद्यार्थियों को डायरी लिखने के लिए प्रोत्साहित करता हूँ।

राघवेंद्र हेर्ले : आप कक्षा के अन्दर और बाहर विद्यार्थियों की साहित्यिक रुचियों को विकसित करने के लिए कौन-से तरीक़े और साधन अपनाते हैं? क्या आपको लगता है कि ऐसी साहित्यिक रुचियाँ उन्हें पूर्ण रूप से सीखने और स्कूल की गतिविधियों के प्रबन्धन में मददगार होंगी?

विश्वनाथ गुंडीगेरे : मैंने कक्षा के लिए डिज़ाइन की गई गतिविधियों का पहले ही उल्लेख किया है। बाहरी गतिविधियों के लिए, मैं अपने बच्चों को 'संगोली रायण्णा' नाटक के मंचन के लिए फ़्रीडम पार्क ले गया हूँ। हर साल मैं उनसे स्कूल के वार्षिक दिवस समारोह के लिए अपने निर्देशन में नाटक करवाता हूँ। 'प्रतिभा करंजी' (प्रतिभा प्रतियोगिता) की गीत प्रतियोगिताओं में भाग लेने के लिए भी मैं उनका मार्गदर्शन करता हूँ।

मैंने बच्चों के लिए 'पुटाणी पिकनिक' (बच्चों की पिकनिक) नामक एक नाटक लिखा है, और इस साल वार्षिक स्कूल दिवस पर उनसे इसका मंचन करवा रहा हूँ। मेरा मानना है कि इस तरह के प्रयोग और गतिविधियाँ विद्यार्थियों की साहित्यिक रुचियों को सकारात्मक रूप से प्रभावित करती हैं। मैं इस सन्दर्भ में अपने गुरु, कन्नड़ शिक्षक महालिंगैया, को याद करता हूँ जिन्होंने मेरे हाई स्कूल के दिनों में मुझे काफ़ी प्रभावित किया। मैंने अपने विद्यार्थियों को ऐसी गतिविधियों से लाभान्वित होते देखा है।

राघवेंद्र हेर्ले : जब हम सरकारी स्कूल के बच्चों की स्थिति को ध्यान में रखते हैं, ख़ासकर बहुभाषी परिवेश में, तो हम उनकी भाषा सीखने की समस्याओं और अवरोधों को कैसे हल कर सकते हैं?

विश्वनाथ गुंडीगेरे : हमारे स्कूल में, हर कक्षा में, हमें ऐसे बच्चे मिलते हैं जिनके माता-पिता बिहार, नेपाल और अन्य हिन्दीभाषी क्षेत्रों के रहने वाले हैं। इन बच्चों को भाषा सीखने में कठिनाई होती है क्योंकि उन्हें कन्नड़ भाषा सीखनी होती है। शुरुआत में, मैं इन बच्चों को उन साथियों के साथ बातचीत करने के लिए प्रोत्साहित करता हूँ जो मूल कन्नड़भाषी हैं। दूसरी महत्त्वपूर्ण बात यह है कि वह चाहे जिस भाषा में संवाद करना चाहें, हमें उनकी मौखिक अभिव्यक्तियों को जगह देनी चाहिए। इनमें शारीरिक भाषा और हाव-भाव का उपयोग करना भी आ जाता है। इसके बाद, जब वह कन्नड़ में बोलने का प्रयास करते हैं तो उनके उच्चारण पर ध्यान देता हूँ। उन्हें कन्नड़ भाषा सीखने में सहयोग करने के लिए बेहतर भाषाई वातावरण बनाने का प्रयास करता हूँ ताकि वह सहज और सरल ढंग से इस भाषा को अपना सकें। मुझे याद है कि एक बार नेपाल के विशाल कुमार नाम के लड़के ने मेरी कक्षा में बहुत अच्छी कन्नड़ सीखी थी। वह अभी भी मुझे फ़ोन करता है, और मुझसे कन्नड़ में बात करता है। वह इंजीनियरिंग में डिप्लोमा कर रहा है। हमारे प्रयासों से भी अधिक महत्त्वपूर्ण बात यह है कि अन्य भाषाई पृष्ठभूमि से आए ऐसे विद्यार्थी भी हमें सहभागी सहयोग प्रदान करें। विविध भाषाई पृष्ठभूमियों के विद्यार्थियों की सहयोगात्मक भागीदारी एक बड़ी आश्वस्ति है। हम यह सुनिश्चित करते हैं कि हमारे

कन्नड़ भाषा-भाषी विद्यार्थी अलग-अलग भाषाई पृष्ठभूमि से आए अपने साथियों के साथ सम्मान और विनम्रता से पेश आएँ ताकि एक दोस्ताना माहौल बने।

राघवेंद्र हेर्ले : इन दिनों प्राथमिक स्तर पर भाषा शिक्षकों के सामने कौन-सी चुनौतियाँ हैं? वह ऐसी चुनौतियों पर कैसे विजय पा सकते हैं?

विश्वनाथ गुंडीगेरे : प्राथमिक स्तर पर सबसे बड़ी चुनौती बहुभाषी वातावरण है। पढ़ाते समय शिक्षकों को इस तथ्य को स्वीकार करना ही होता है। साथ ही, यह सुनिश्चित करना होता है कि बहुभाषिकता उनके शिक्षण में बाधा न बने, बल्कि कक्षा में एक संसाधन के तौर पर उपयोगी हो सके। किसी भाषा पर पकड़ बनाने के लिए उसे व्यापक रूप से पढ़ना आवश्यक है। शिक्षकों का व्यक्तिगत और पेशेवर, दोनों तरह से रचनात्मक अन्वेषण में संलग्न होना ज़रूरी है। उन्हें पारम्परिक सोच से मुक्त होने और स्थापित मॉडलों से परे नवाचार करने की ओर बढ़ने की ज़्यादा ज़रूरत है। इसके अतिरिक्त, ज्ञान के संवर्धन और पुनर्निर्माण के माध्यम से पाठों की सराहना करना आवश्यक है।

राघवेंद्र हेर्ले : हमारे नीति दस्तावेज़ कहते हैं कि प्राथमिक स्तर पर शिक्षण का माध्यम मातृभाषा या घर की भाषा होनी चाहिए, आप क्या सोचते हैं? बुनियादी स्तर पर विभिन्न प्रकार के शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों, कार्यशालाओं और व्यावसायिक विकास कार्यक्रमों को आप कैसे देखते हैं? इनके कार्यान्वयन और जवाबदेही की व्यावहारिक क्षमता और प्रभावशीलता के बारे में आपका क्या कहना है?

विश्वनाथ गुंडीगेरे : प्राथमिक स्तर पर घर की भाषा ही शिक्षण की भाषा / माध्यम होनी चाहिए क्योंकि इस भाषा से बच्चों का आत्मीय जुड़ाव होता है। हम चाहे किसी भी भाषा में बात करें, हमारी समझ मूलतः हमारी मातृभाषा से ही प्रभावित होती है। इससे परिचय हमारी शब्दावली के विकास को बढ़ावा देता है, और हमारे भाषा कौशल को बढ़ाता है। यह एक ऐसे प्राथमिक संसाधन के रूप में कार्य करता है जिसके माध्यम से हम अपने दैनिक क्रियाकलापों को संचालित करते हैं।

जहाँ तक शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों की बात है, यह आवश्यक है कि नए कार्यक्रम मौजूदा कार्यक्रमों की सफलता का मूल्यांकन करने के बाद ही शुरू किए जाएँ। इन कार्यक्रमों के प्रभाव और कमियों को भी ध्यान में रखकर नए कार्यक्रमों में सुधार लाया जाए। जब कई कार्यक्रम एक साथ शुरू किए जाते हैं तो इससे शिक्षकों में भ्रम की स्थिति पैदा होती है। प्रशिक्षण कार्यक्रम कक्षा की वास्तविक आवश्यकताओं के अनुरूप हों तब बेहतर होता है। वह केवल सैद्धान्तिक न होकर व्यावहारिक होंगे तो उनकी प्रभावशीलता बढ़ेगी। इन कार्यक्रमों में शिक्षण सहायक सामग्री तैयार करना, और शिक्षकों के कक्षा अनुभवों को साझा करना भी अगर शामिल होता है तब शिक्षक ज़्यादा जुड़ाव महसूस कर पाते हैं। ज्ञान की उच्चतर खोज की अपेक्षा ज़मीनी स्तर की अनुक्रियाओं पर ज़ोर दिया जाना चाहिए। ऐसी प्रणाली विकसित करने की आवश्यकता है जिससे प्रशिक्षण कार्यक्रम में शिक्षक द्वारा सीखी गई बातों की कक्षा स्तर पर जाँच की जा सके।

राघवेंद्र हेर्ले : स्कूल का प्रबन्धन बच्चों की सीखने की प्रक्रिया में किस तरह योगदान देता है? इस सम्बन्ध में आपने क्या क़दम उठाए हैं जो सामान्य से अलग हैं?

विश्वनाथ गुंडीगेरे : प्रधानाध्यापक के रूप में अपने कार्यकाल के दौरान, मैंने विद्यार्थियों के लिए पाठ्यक्रम और पाठ्यचर्या, दोनों पहलुओं से शैक्षिक अनुभव को बढ़ाने के लिए कई सन्दर्भ व्यक्तियों को आमंत्रित किया। मैं यह मानता हूँ कि स्कूल का दैनिक संचालन वार्षिक शैक्षिक योजना जितना ही महत्त्वपूर्ण है, और मैंने दोनों को समान महत्त्व दिया है। प्रभावी दैनिक गतिविधियाँ वार्षिक योजना की गुणवत्ता में योगदान करती हैं। हमने स्कूल के लिए कम्प्यूटर और दूसरे बुनियादी ढाँचे की सामग्री ख़रीदने के लिए दानदाताओं की मदद भी ली है।

कन्नड़ से गणेश यू एच द्वारा अनुवादित।
अँग्रेज़ी से नलिनी रावल द्वारा अनुवादित।

राघवेंद्र हेर्ले वर्तमान में अज़ीम प्रेमजी यूनिवर्सिटी, बेंगलूरु में कन्नड़ अनुवाद टीम के सदस्य हैं। इसके साथ ही, आप कन्नड़ इनिशिएटिव टीम और *पाठशाला* की सम्पादकीय टीम के सदस्य भी हैं।

सम्पर्क : Raghavendra.herle@azimpremjifoundation.org

गाँव का बच्चा

समीक्षा : अनीता ध्यानी

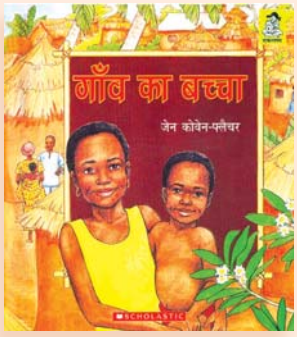

लेखक : जेन कोवेन-फ्लैचर

अनुवाद : अरुंधती देवस्थले

बुक डिज़ाइन : एड्रीएन साइफ्रेट

आयु वर्ग : 4 - 6

पृष्ठ संख्या : 34

भाषा : अँग्रेज़ी (हिन्दी में भी उपलब्ध)

प्रकाशक : एकलव्य के लिए स्कॉलास्टिक द्वारा प्रकाशित

गाँव का बच्चा शीर्षक पढ़ते ही लगता है कि यह कहानी गाँव के बच्चों के भोलेपन, वहाँ के मेहनतकश व कठिनाइयों से जूझते हुए लोगों के जीवनयापन को ध्यान में रखकर लिखी गई होगी। कहानी कुछ ऐसे शुरू होती है, "सूरज धीरे-धीरे ऊपर आकाश में चढ़ने लगा था, लेकिन गाँव के लोग कब के जाग चुके थे", यह पढ़कर लगा, अनुमान सही था। कहानी गाँव के कठिन जीवन की ओर ही बढ़ रही है। यहाँ के लोगों को कितनी सुबह जाग जाना पड़ता है। कहानी में न जाने किन-किन कठिन परिस्थितियों में गाँव के बच्चे को दिखाया गया होगा।

"येमी", माँ ने कहा, "आज तुम बाज़ार में अपने छोटे भाई का ध्यान रखना। मैं तो आम बेचने में बहुत व्यस्त रहूँगी।" तब अनुमान पुख़्ता भी हो गया। कहानी गाँव के कठिन जीवन की ओर ही जाती दिखाई देती है। येमी ने कहा, "आओ कोकू, आज तुम्हारा ध्यान मैं रखूँगी, अकेली मैं!" "तुम अकेली?" माँ ने येमी की तरफ़ देखकर मुस्कुराते हुए कहा। माँ सब जानती थी।

"माँ सब जानती थी।" यह वाक्य अचानक मन में कई सवालों और जिज्ञासाओं को जन्म देता है। माँ क्या जानती थी; माँ, येमी की बात पर क्यों मुस्कुराई होगी; ऐसी कौन-सी बात से येमी अनभिज्ञ है जिसे केवल माँ जानती है?

कहानी की हर पंक्ति रहस्य लिए हुए है। माँ के साथ घर से निकलते हुए येमी को बहुत बड़ी हो जाने का एहसास हो रहा था।

कहानी में गाँव के आपसी भाईचारे और सौहार्द्र की झलक दिखाई गई है। "वे भी झुण्ड में शामिल हो गए।" यह वाक्य गाँव के लोगों की समूह में एक दूसरे के साथ मिल-जुलकर कार्य करने की भावना को दिखाता है। *गाँव का बच्चा,* गाँव के प्रेम, भाईचारे और अपनत्व की अनुपम कहानी है।

फल बेचने वाली औरतों में से एक ने माँ से कहा, "येमी अब बड़ी हो गई है। कितनी मदद करती है तुम्हारी!" "हाँ," माँ ने कहा, "आज यह कोकू का ध्यान रखेगी।" "अकेली मैं!" येमी ने जोड़ा। इस पर फल बेचने वाली औरत मुस्कुराती है क्योंकि वह भी जानती है कि गाँव के बच्चे 10-12 साल की उम्र में ही बड़े हो जाते हैं। वह परिवार के प्रति ज़िम्मेदारियों को बख़ूबी समझने लगते हैं। अभी येमी को गाँव के लोगों के व्यवहार के बारे में पूरा पता नहीं है, तभी तो उसे लगता है कि वह कोकू की देखभाल अकेली करेगी। उसके बार-बार "अकेली मैं!" कहने से उसे सौंपी गई ज़िम्मेदारी के प्रति उसकी सजगता और ख़ुशी को दर्शाने में लेखक को सफलता मिली है।

इससे आगे की कहानी में शब्दों से अधिक चित्र बोलते हैं। कहानी के पात्रों में चित्रकार ने ऐसे भाव भरे हैं कि पात्र सजीव हो उठे हैं।

येमी, कोकू को पीठ पर बैठाए बाज़ार घुमाने ले जाती है। कुछ ही देर में कोकू कुनमुनाने लगता है। येमी को लगता है, उसको भूख लगी है। वह कोकू को नीचे उतारकर मूँगफली ख़रीदने लगती है। इतने में कोकू ग़ायब हो जाता है। येमी परेशान हो उसे इधर-उधर ढूँढ़ने लगती है। और यहाँ से खुलता है "अकेली मैं!" का रहस्य।

येमी को फ़िक्र होने लगती है कि कोकू भूखा होगा। लेकिन वह भूखा नहीं था। उसे तो एक महिला अपनी गोद में बिठाकर खाना खिला रही है। येमी को लगता है कि कोकू को प्यास लगी होगी। लेकिन उसे तो एक महिला ख़ुशी से पानी पिला रही है। उसे लगता है कि कोकू डर रहा होगा। लेकिन वह तो मज़े से किसी के पास बैठा हुआ है। येमी, कोकू को दुकानों पर, टोकरों में, मटकों में, पलंग के नीचे, सब जगह ढूँढ़ती है। वह इधर-उधर भटकती है। उसे लगता है कि कोकू को गर्मी लग रही होगी। लेकिन उसे तो गाँव की एक महिला पानी में छपछपाक से नहला रही है।

येमी, कोकू को मुर्ग़ियों, भेड़-बकरियों के बीच ढूँढ़ती है। जब येमी को कोकू नहीं मिलता तो वह ज़ोर से चिल्लाती है, "कोकू खो गया।" लेकिन चित्र कहते हैं, कोकू खोया भी नहीं था। वह तो जहाँ पर येमी थी, उस रास्ते के उस पार सोकर उठ रहा था। चटाईवाले ने

पूछा, "क्या ये है तुम्हारा कोकू?" कोकू को प्यार से उठाते हुए येमी चिल्लाई, "जी हाँ!"

येमी उन सबको धन्यवाद देती है जिन्होंने कोकू का ध्यान रखा था।

इस कहानी को पढ़ते हुए अपना बचपन, गाँव के रिश्ते, काका-काकी, दादा-दादी, ताऊ-ताई, भाई-बहन सभी याद आते हैं। यह रिश्ते कितने सहज और अपनापन लिए होते थे!

यह सच है कि गाँव के बच्चे के पालन-पोषण में पूरा गाँव लगता है। पालन-पोषण ही नहीं, शादी-ब्याह की तैयारी में भी पूरे गाँव का सहयोग होता है। बेटा या बेटी गाँव का है, तब न्योते की धनराशि देकर गाँव का हर परिवार सहयोग करता है। बेटी के ब्याह में पूरे गाँव द्वारा उपहार और गृहस्थी चलाने की वस्तुएँ भेंट की जाती हैं।

कहानी, सीमित शब्दों में असीमित भावों से भरी हुई है। लेखक ने शब्दों में व चित्रकार ने चित्रों में, कहानी की कल्पना के गाँव का पूरा परिदृश्य उकेर दिया है। मानवीय सरोकारों में गुँथी एक बेहतरीन कहानी जो भाईचारे, देखभाल और अपनेपन के मूल्य बोध में पगे ग्रामीण जीवन की आत्मा से रू-ब-रू कराती है।

यह कहानी उन सभी पाठकों को भी ख़ुद के जीवन से जुड़ी हुई महसूस होती है जिन्होंने गाँव का जीवन जिया है, और अब शहरी जीवन में इन्हीं मूल्यों की ख़ुशबू को बिखेरने में जुटे हैं।

अनीता ध्यानी राजकीय इंटर कॉलेज लखवाड़, ब्लाक कालसी, ज़िला देहरादून, उत्तराखण्ड में सहायक अध्यापिका हैं। वे ढाई दशक से शिक्षा में काम कर रही हैं। उनकी कहानी, कविताएँ एवं लेख लिखने और हिन्दी भाषा शिक्षण में विशेष दिलचस्पी है।

कला से सीखना

समीक्षा : विजय रविकुमार

कला से सीखना ऐसी गतिविधियों का संग्रह है जिसका उपयोग प्राथमिक विद्यालय के शिक्षक अपनी कक्षाओं में कला के प्रयोग के लिए कर सकते हैं। यह गतिविधियाँ ख़ूबसूरती से डिज़ाइन की गई हैं, और इनमें आसानी से उपलब्ध संसाधनों का उपयोग किया गया है। जैसे– पौधे और लकड़ियों जैसी प्राकृतिक सामग्रियाँ, पुराने समाचार पत्र जैसी बेकार सामग्री, आदि। इसके अलावा, शिक्षकों के लिए इन गतिविधियों को संचालित करना आसान है और यह बेहद मनोरंजक गतिविधियाँ हैं।

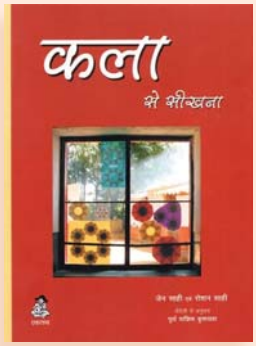

लेखिका : जेन साही
चित्रकार : रोशन साही
भाषा : अँग्रेज़ी और हिन्दी
प्रकाशक : एकलव्य प्रकाशन
पृष्ठ संख्या : 172

पुस्तक में कला की व्यापक परिभाषा दी गई है जिसमें ड्राइंग, पेंटिंग और मूर्तिकला के अलावा खेल, कहानियाँ और अवलोकन से जुड़े अभ्यास भी शामिल हैं। पूरी पुस्तक में दुनिया के बारे में बच्चों के संवेदी अनुभवों पर ज़ोर दिया गया है, और कला मूलतः इसी अनुभव की खोज और अभिव्यक्ति है। वास्तव में, हमारा तात्कालिक संवेदी अनुभव हमारी ख़ुद की और हमारे आस-पास की दुनिया, यानी हमारे परिवार, पड़ोस और समाज के बीच का एक पुल है, और अपने अवलोकन कौशल को विकसित करके हम इसे समझ सकते हैं। उदाहरण के लिए, गतिविधियों की प्रारम्भिक श्रृंखला में हमारे जीवन में पानी की भूमिका को समझने पर ध्यान दिया गया है।

पहली गतिविधि में, बच्चों को अपने बारिश सम्बन्धी अनुभवों का वर्णन करना होता है, और फिर बारिश के सम्बन्ध में वह जो कुछ भी सोच सकते हैं उसका चित्र बनाना होता है। दूसरी गतिविधि में, उन्हें कहानी सुनाने और चित्र बनाने के माध्यम से अपने जीवन में पानी के स्रोतों और उपयोगों के साथ-साथ इसका संग्रह कैसे किया जाता है, इस पर चर्चा करनी होती है।

तीसरी गतिविधि में, कला निर्माण के लिए पानी को एक सामग्री के रूप में प्रस्तुत किया जाता है। उदाहरण के लिए, इसे पेंट के साथ मिलाना, वैक्स क्रेयॉन रबिंग पर बहने देना, आदि। चौथी और अन्तिम गतिविधि में यह पता लगाया जाता है कि पत्थर और पत्ते जैसी सामग्री एक छोटे-से जलाशय में गिरने पर कैसे व्यवहार करती है। इसके बाद, लकड़ी या काग़ज़ से एक नाव बनाने की चुनौती होती है जो एक छोटे-से पत्थर को उस जलाशय के पार ले जा सके।

पुस्तक की दूसरी इकाइयाँ हवा, अन्तरिक्ष, प्रकाश, भोजन और आश्रय जैसी अवधारणाओं का पता लगाती हैं। साथ ही, यह अत्यधिक रचनात्मक तरीक़ों से अनेक भौतिक सामग्रियों की खोज भी करती हैं।

आख़िरी दो अध्यायों में उन गतिविधियों पर ध्यान दिया गया है जो गणितीय और भाषा कौशल से सीधे सम्बन्धित हैं। दूसरी गतिविधियों की तरह ही, यह गतिविधियाँ भी कला को किसी लक्ष्य को प्राप्त करने के साधन के रूप में नहीं, बल्कि इसे बच्चे के आन्तरिक जीवन और बाहरी दुनिया के बीच एक महत्त्वपूर्ण कड़ी के रूप में देखती हैं। मसलन, गणितीय गतिविधियों वाला अध्याय समरूपता और पैटर्न की भावना को बढ़ावा देने के लिए बहुत बढ़िया है, क्योंकि इसमें ऐसे अभ्यास शामिल हैं जो लकड़ी, पत्थर और पत्तियों का उपयोग करने, अपने आस-पास के वातावरण में पैटर्न का पता लगाने और प्रतिक्रिया में अपने ख़ुद के पैटर्न बनाने पर ज़ोर देते हैं।

भाषा पर जो अध्याय है, वह कहानी सुनाने पर केन्द्रित है। इसमें दी गईं गतिविधियों का उद्देश्य विद्यार्थियों को अपने घर के अनुभवों से शुरू करके अपनी ख़ुद की कहानियाँ लिखने में मदद करना है। इसके अलावा, दूसरे लोगों की कहानियों पर प्रतिक्रिया देने (और उनके साथ सहानुभूति रखने) से सम्बन्धित गतिविधियाँ भी इसमें हैं– चाहे वे सहपाठी हों या दूर रहने वाले लोग। अन्त में, कठपुतली और मुखौटों का उपयोग करके कहानियों को अभिनीत करने की गतिविधियाँ भी दी गई हैं।

यद्यपि पुस्तक के अधिकांश भाग में विद्यार्थियों के लिए गतिविधियों का विस्तृत संग्रह है, लेकिन इसके आख़िरी अध्याय में शिक्षकों के लिए चर्चा-आधारित गतिविधियों के बारे में बताया गया है। इस अध्याय में कुछ सवाल पूछे गए हैं। मसलन, शिक्षा में कला का उद्देश्य क्या है; क्या सभी बच्चे कला में अच्छे होते हैं; आदि। हालाँकि इन सवालों के कोई सरल जवाब नहीं हैं, लेकिन यह गतिविधियाँ हमें, शिक्षकों के रूप में, अपनी ख़ुद की धारणाओं पर सवाल उठाने, और कक्षा में क्या सम्भव है, इस बारे में हमारी कल्पनाओं को प्रेरित करने में मदद करती हैं।

पुस्तक के आरम्भ में, लेखिका ने छोटे बच्चों की एकाग्रता के असाधारण स्तर पर चर्चा की है, जब वह अपनी इन्द्रियों से दुनिया के बारे में जानने-समझने की कोशिश करते हैं, फिर चाहे वह गत्ते के बक्से से खेलना हो, चित्र पुस्तक पढ़ना हो, या ख़ुद का चित्र बनाना। *कला से सीखना* में दी गईं गतिविधियाँ एकाग्रता की इस शक्ति का उपयोग करने और इसे ऐसी गतिविधियों में इस्तेमाल में लाने में बहुत फ़ायदेमन्द हैं जो छोटे बच्चों में आत्मविश्वास और (शायद) ज्ञान का भी विकास कर सकती हैं। यह पुस्तक बच्चों के साथ काम करने वाले किसी भी व्यक्ति के लिए एक बहुमूल्य संसाधन होगी।

विजय रविकुमार अज़ीम प्रेमजी यूनिवर्सिटी में गणित विषय के संकाय सदस्य हैं। उन्होंने एक स्वतंत्र चित्रकार और थिएटर कलाकार के रूप में काम किया है। कोरोना महामारी से पहले वह चेन्नई के एक मछली पकड़ने वाले गाँव उरुर ओल्कोट कुप्पम में बच्चों के लिए कला कक्षाएँ संचालित करते थे।

आइए, करके देखें

पहेली बूझना

यह खेल गतिविधि कक्षा 4 से 6 तक के बच्चों के साथ की जा सकती है। कक्षा में इसे करवाने के लिए 4 या 5 समूह बनाए जा सकते हैं। एक समूह में 3 से 5 बच्चे हो सकते हैं।

चित्र : शिवेन्द्र पांडिया

स्तर 1 : बच्चे पहले अपने-अपने समूहों में बैठकर एक दूसरे से पहेलियाँ साझा करेंगे। हर समूह को कम-से-कम पाँच पहेलियाँ सोचनी हैं। वह आपस में यह भी तय करते हैं कि उनके समूह से कब और कौन, दूसरे समूह से पहेली बूझने को कहेगा। इसके बाद, समूह 1 का एक बच्चा, समूह 2 के बच्चों को पहेली बूझने को देगा। समूह 2 का बच्चा समूह 3 के बच्चों से, समूह 3 का बच्चा समूह 4 के बच्चों, और समूह 4 का बच्चा समूह 1 के बच्चों से पहेलियाँ बूझने को कहेगा। जिस समूह से पहेली बूझने को कहा गया है उस समूह का कोई भी बच्चा पहेली बूझकर उत्तर दे सकता है। पहेली का सही उत्तर बताने के लिए 1 से 2 मिनट तक का समय पहले ही निर्धारित कर लिया जाएगा। सही उत्तर बूझने पर उस समूह के लिए सभी समूहों के बच्चे ज़ोर से लय-ताल के साथ तीन बार स्काउट तालियाँ बजाएँगे... एक-दो, एक-दो-तीन।

जब समूह का कोई भी बच्चा पहेली का सही उत्तर नहीं बूझ पाता है तब पहेली पूछने वाले समूह का कोई बच्चा उनको कुछ हिंट भी दे सकता है।

स्तर 2 : घर व घर के आस-पास के बच्चों और बड़ों से बात करके उनसे नई पहेलियाँ जानना और उन्हें इकट्ठा करना, ख़ुद नई पहेलियाँ बनाना और इन्हें अगली बार के खेल में बूझने के लिए इस्तेमाल करना।

इस गतिविधि को राजकीय प्राथमिक विद्यालय हल्दीपचपेड़ा, खटीमा, ज़िला ऊधम सिंह नगर, उत्तराखण्ड में प्रधानाध्यापक के रूप में कार्यरत धर्मपाल गंगवार ने साझा किया है। आप अपने स्कूल में प्रयोग करते रहे हैं, और सीखने-सिखाने का सक्रिय माहौल भी बना पाए हैं।

चलो, कुछ पकाकर देखें!

चित्र : शिवेन्द्र पांडिया

विद्यार्थियों को एक साधारण व्यंजन पकाए जाने का वीडियो दिखाकर शुरुआत करें। इसके बाद, विद्यार्थियों के साथ इस बारे में चर्चा करें :

सामग्री और प्रक्रिया – काटना, गूँथना, पकाना, मसाले डालना, आदि। अगर सही प्रक्रिया का पालन नहीं किया जाता है तो क्या हो सकता है, इस बारे में बताएँ।

अब बच्चों के 4-5 समूह बनाएँ, और प्रत्येक समूह से अपना पसन्दीदा व्यंजन चुनने को कहें। प्रत्येक समूह को अपना पसन्दीदा व्यंजन पकाने की प्रक्रिया लिखनी होगी। इसके बाद, प्रत्येक समूह को निम्नलिखित बिन्दुओं पर जानकारी के साथ एक रेसिपी कार्ड बनाना होगा :

- रेसिपी का शीर्षक;
- सामग्री और उनके माप (कप या चम्मच से); और
- सरल वाक्यों में पकवान बनाने की एक चरणबद्ध विधि।

प्रत्येक समूह को अपना रेसिपी कार्ड बनाने के लिए A4 आकार का चार्ट पेपर दें, और इसे रंगीन लेखन, चित्र, तस्वीरों, आदि से सजाएँ। सभी रेसिपी कार्ड को कक्षा में सभी को देखने के लिए प्रदर्शित करें। यह गतिविधि कक्षा 4 और 5 के विद्यार्थियों के साथ की जा सकती है।

यह गतिविधि बच्चों को प्रक्रियाओं को सही क्रम में देखने, रिकॉर्ड करने, प्रस्तुत करने, और छोटी-छोटी बातों पर ध्यान देने में मदद करती है। यह टीम के सदस्यों के साथ सहयोग और सहकारिता को प्रोत्साहित करती है।

इस गतिविधि को अज़ीम प्रेमजी यूनिवर्सिटी, बेंगलूरु में संचार और प्रकाशन टीम की सदस्या चंद्रिका मुरलीधर ने साझा किया है। वह यूनिवर्सिटी में विज्ञान शिक्षा में रुचि रखने वाली एक फ़ैकल्टी भी हैं।

बीनो और छाँटो

यह खेल गतिविधि कक्षा के सभी बच्चे एक साथ कर सकते हैं। बच्चों के छोटे-छोटे समूह बनाकर भी इसे खेला जा सकता है।

सभी बच्चों को कहें कि वह कक्षा के बाहर जाकर 10 से 15 चीज़ें बीनकर लाएँ। उन्हें यह स्पष्ट करें कि तोड़कर या कहीं से निकालकर कोई उपयोगी वस्तु नहीं लाना है।

चित्र : शिवेन्द्र पांडिया

पहला चरण : जब बच्चे वस्तुएँ लेकर आएँ तो उन्हें उन वस्तुओं को छाँटने के लिए कहें। पहले चरण में, आप उन्हें वस्तुओं को मूल पदार्थ के आधार पर अलग-अलग समूहों में रखने के लिए कहें। उदाहरण के लिए, प्लास्टिक, मेटल, लकड़ी या मिट्टी से बनी वस्तुओं के अलग-अलग समूह बनाएँ। कभी आप आकार के आधार पर समूहन के लिए कह सकते हैं। जैसे– लम्बी, गोल, चौकोर या चपटी चीज़ों के अलग-अलग समूह बनाएँ। कभी रंग के आधार पर या हल्की-वज़नी चीज़ों को अलग-अलग समूह में रखने को भी कह सकते हैं। यह सब ख़ाली फ़र्श पर या बाहर मैदान पर भी हो सकता है।

दूसरा चरण : पहला चरण हो जाने के बाद, आप सभी वस्तुओं को एक बार मिला दें। अब बच्चों के अलग-अलग चार-पाँच समूह बनाएँ, और उन समूहों को एक-एक गुण दे दें। उदाहरण के लिए, एक समूह को पानी में गल जाने वाली चीज़ों का समूह बनाने को कहें। दूसरे समूह को आग में सरलता से जल जाने वाली चीज़ों का समूह बनाने को कहें। तीसरे को पेड़ पर उगने वाली चीज़ों का समूह, और चौथे को फिर से इस्तेमाल में लाई जा सकने वाली चीज़ों का समूह बनाने को कहा जा सकता है।

जब बच्चे विभिन्न गुणधर्मों वाली वस्तुओं के समूह बनाने का प्रयास कर रहे होंगे तब उनमें उन वस्तुओं को लेकर दुविधा भी होगी जो एक से ज़्यादा समूहों में शामिल होने का गुण रखती हैं। ऐसे में, बच्चों को तर्क करने दें, और शिक्षक उन्हें सुलझाने में मदद करें।

यह गतिविधि भोपाल के अनिल सिंह ने सुझाई है। वह पराग के लाइब्रेरी एजुकेटर कोर्स में बतौर फ़ैकल्टी जुड़े हुए हैं। 15 सालों से प्राथमिक शिक्षा ही उनका प्रमुख कार्यक्षेत्र है।

सम्पादक के नाम

लड़कियों में माहवारी : ज़रूरी है शिक्षकों, स्कूल और समाज का संवेदनशील होना

इस अंक में रुबीना ख़ान का आलेख 'लड़कियों में माहवारी और उसका सीखने से सम्बन्ध' पढ़ने से समझ आया कि समावेशन को हम अत्यन्त विशेष परिस्थितियों वाले बच्चों के सन्दर्भ में ही देखते रह जाते हैं, जबकि एक बड़ा सामान्य समझा जाने वाला समूह भी कुछ अलग तरह की चुनौतियों से जूझ रहा होता है। लड़कियों के साथ रुबीना की बातचीत में उनकी दुविधा और इस समस्या के प्रति शिक्षकों व स्कूल प्रबन्धन का रवैया साफ़ बताता है कि इसका समुचित समाधान किए बग़ैर समावेशन की बात अधूरी रहेगी।

अनिल सिंह, फ़ैकल्टी, पराग लाइब्रेरी एजुकेटर कोर्स, ज़िला भोपाल, मध्य प्रदेश

बेजोड़ प्रयासों से बना सबका स्कूल

'शिक्षकों की डायरी से' स्तम्भ में कुसुम लता शर्मा के लेख 'स्कूल तो सबका है' में विभिन्न सामाजिक पृष्ठभूमि के बच्चों को एक साथ लाने के लिए किए गए प्रयास बेहद बेजोड़ हैं। लेखिका द्वारा बच्चों के बीच बैठकर भोजन करना, और बच्चों को बिना कोई मौखिक सन्देश दिए एकजुट करने का प्रयास सराहनीय है। *पाठशाला* में 'शिक्षकों की डायरी से' नाम से शुरू किया गया यह नया स्तम्भ अध्यापक-अध्यापिकाओं के कक्षा एवं विद्यालय के शैक्षणिक और ग़ैर-शैक्षणिक अनुभवों के बारे में जानकारी देगा। यह एक नायाब प्रयास है।

छाया, सहायक अध्यापिका, प्राथमिक विद्यालय औरंगपुर, मीरपुर लखावटी, ज़िला बुलंदशहर, उत्तर प्रदेश

'किताबों से दोस्ती' और 'शिक्षकों की डायरी से' स्तम्भ पसन्द आए

पाठशाला का समावेशी शिक्षा विशेषांक *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* के आलोक में पढ़ने योग्य बन पड़ा है। आवरण का चित्र ठहरने पर बाध्य करता है। मधु कुशवाहा का लेख 'केवल नामांकन के स्तर पर समावेशन पर्याप्त नहीं है' हर शिक्षक के साथ अभिभावकों और स्कूल प्रबन्धकों के पढ़ने के लिए है। इस अंक में, 'किताबों से दोस्ती' और 'शिक्षकों की डायरी से' स्तम्भ पसन्द आए। रुबीना ख़ान का 'लड़कियों में माहवारी और उसका सीखने से सम्बन्ध' भी एक महत्त्वपूर्ण विषय पर ज़रूरी आलेख है। सेवारत प्रशिक्षणों में माहवारी विषयक पूरा मॉड्यूल रखे जाने की आवश्यकता प्रतीत होती है।

मनोहर चमोली 'मनु', राजकीय इंटर कॉलेज कालेश्वर, पौड़ी, ज़िला पौड़ी गढ़वाल, उत्तराखण्ड

लड़कियों में माहवारी पर समावेशी विचार की दरकार

इस अंक में रुबीना ख़ान के लेख 'लड़कियों में माहवारी और उसका सीखने से सम्बन्ध' आज की शिक्षण प्रणाली के लिए बेहद महत्त्वपूर्ण लगा। लेखिका ने जिन प्रयासों से अपने अनुभवों को हम सबके साथ साझा किया है, उससे पता चलता है कि ख़राब माहवारी स्वास्थ्य सुविधाओं, उत्पादों, सूचना (शिक्षा) और समर्थन की कमी के कारण बालिकाओं की स्कूल में उपस्थिति, प्रदर्शन और स्कूल में बने रहने की प्रक्रिया पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। ध्यान देने पर समझ आता है कि एक बच्चे को और उसकी शिक्षा को प्रभावित करने वाले कई कारक ऐसे भी होते हैं जो ज़ाहिर तो नहीं होते, पर उन पर समावेशी रूप से विचार करने की ज़रूरत होती है।

निधि चौधरी, सहायक अध्यापिका, प्राथमिक विद्यालय बंगला पूठरी, ज़िला बुलंदशहर, उत्तर प्रदेश

मैं गा नहीं सकती, मैं नृत्य नहीं कर सकती, मैं एक्टिंग नहीं कर सकती

समावेशी शिक्षा विशेषांक ने मुझे वास्तव में सही मायने में यह समझने में मदद की कि समावेशन किसे कहते हैं। इसके लेखों ने समावेशन की संकुचित परिभाषा, जिसे हम अभी तक सिर्फ़ विशेष आवश्यकता वाले बच्चों से जोड़कर ही देखते थे, बदलने में मदद की है। दीपिका झाला और ममता सिंह के आलेखों से लगा कि शिक्षक का प्यार भरा बर्ताव अपेक्षित बदलाव लाने में मददगार होता है। वहीं दीपिका शर्मा के आलेख 'कलाओं को समावेशी बनाने में शिक्षक की भूमिका' को पढ़कर लगा कि यह हमारे अनुभवों से जुड़ने वाला लेख है।

पाऊल बत्रा दुग्गल, अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन, ज़िला भोपाल, मध्य प्रदेश

`आइए, करके देखें' : एक ज़रूरी पहल

नए कलेवर में पत्रिका शानदार बन पड़ी है, और यह विशेषांक कई मायनों में बेहद रोचक और उपयोगी लगा। शिक्षा में समावेशन को हम इतने व्यापक और बारीक़ सन्दर्भ में नहीं देख पा रहे थे। अनुभव और उदाहरणों के साथ प्रस्तुत सारे आलेख पठनीय हैं, ख़ासकर जयना जगानी एवं रीमा कौर, विष्णु गोपाल, ममता सिंह और रुबीना ख़ान के आलेख बेहद अच्छे लगे। 'उम्मीद जगाते शिक्षक', 'किताबों से दोस्ती', 'शिक्षकों की डायरी से' जैसे शुरू किए गए नए स्तम्भ भी काफ़ी सार्थक लगे। उन्हें पढ़कर अच्छा लगा। शिक्षा की बेहतरी को लेकर उम्मीदें यक़ीन में बदलती लगीं। 'आइए, करके देखें' एक ज़रूरी पहल लगी जो कक्षा में सीधे सहयोग कर रही है।

निकेता तिवारी, राजकीय सीनियर सेकेंडरी स्कूल किरण पथ, मानसरोवर, ज़िला जयपुर, राजस्थान

समावेशी संगीत कुर्सियाँ गतिविधि कराके देखी

पाठशाला के 22वें अंक में मधुमालती द्वारा लिखे आलेख 'सीखना वैसे, बच्चे सीखना चाहें जैसे' को मैं अपने अनुभवों से बहुत ज़्यादा जोड़ पाई। इसमें मैंने पढ़ा कि लाइब्रेरी में हमें यह समझ आना चाहिए कि बच्चों को किस तरह की किताबों की ज़रूरत है और हम उन्हें बच्चों को उपलब्ध करवा दें। हमारे स्कूल की लाइब्रेरी में बहुत तरह की किताबें हैं जिन्हें बच्चे अपनी रुचि के अनुसार पढ़ सकते हैं। मेरे स्कूल में बच्चे अपनी पसन्द की किताबें चुनने और पढ़ने के लिए स्वतंत्र हैं। कुछ बच्चे कहानी वाली किताब चुनते हैं और कुछ ज़्यादा चित्रों वाली। मैंने देखा है कि कुछ बच्चे जो चित्र उन्हें पसन्द आए, वे अपनी कॉपी में बनाते हैं। इसी अंक में दी गई गतिविधि 'समावेशी संगीत कुर्सियाँ' मैंने विद्यार्थियों के साथ कराई और उन्हें इसमें काफ़ी मज़ा आया।

सुचंद्रा रुद्र, सहायक शिक्षिका, राजकीय कृत मध्यविद्यालय, चडरी, प्रखण्ड कांके, रांची, झारखंड

नया अंक : आकर्षक साज सज्जा

पाठशाला का 22वाँ अंक शानदार लगा। समावेशन पर समग्रता में सोचने और समझने को प्रेरित करता अंक। 'केवल नामांकन के स्तर पर समावेशन पर्याप्त नहीं', और 'सीखने पर हक़ तो सबका बराबर है', यह दोनों आलेख सारगर्भित लगे। हालाँकि इसके स्थाई स्तम्भ और दूसरे आलेख भी बहुत अच्छे हैं, और साज सज्जा काफ़ी आकर्षक है।

रानी कुमारी, मध्य विद्यालय जगसो जमालपुर, ज़िला दरभंगा, बिहार

बच्चे की जाति, पहनावा, नम्बर, क़द-काठी असमानता का कारण न बनें

अंक 22 में ममता सिंह के आलेख 'प्यार और समानता से बच्चों का सीखना सुगम होता है' में मैंने उत्तर प्रदेश के एक ऐसे स्कूल की कहानी को पढ़ा जो मुझे अपने राज्य छत्तीसगढ़ से भी बिल्कुल अलग नहीं लगी। इस आलेख में एक बालिका की बात की गई है कि वह जनजाति समाज से आई है, अत: उसके लिए स्कूल में दूसरे बच्चों के साथ बैठना, खाना बिल्कुल भी सहज प्रक्रिया नहीं है। मैं अपनी कक्षा में इस बात का ध्यान रखूँगी कि किसी भी बच्चे के साथ उसकी जाति ही नहीं, बल्कि उसका पहनावा, उसके नम्बर, क़द-काठी, आदि असमानता का कारण न बनने पाएँ। लेकिन बात सिर्फ़ इतनी-सी नहीं है। इस अंक ने मेरी पूर्व समझ को विस्तार दिया है।

अर्चना चंद्राकर, शासकीय प्राथमिक शाला चगोराभाटा, धरसींवाँ (रायपुर शहरी), ज़िला रायपुर, छत्तीसगढ़

ज़रूरी विषय पर समग्र अंक

पाठशाला भीतर और बाहर का समावेशी शिक्षा विशेषांक एक बेहद ज़रूरी विषय पर समग्र अंक है। मधु कुशवाहा का आलेख अच्छा लगा। सुजाता रावी और दसन्ना मरेड्डी का आलेख भी बेहद संवेदनशील और व्यावहारिक है। रुबीना ख़ान ने अपने आलेख में अकसर अलक्षित रह जाने वाली आम समस्या 'लड़कियों में माहवारी' को बेहद संवेदनशीलता के साथ कहने-सिखाने की प्रक्रियाओं से जोड़ा है। यह इसे समझने का एक नया नज़रिया प्रदान करता है। 'शिक्षकों की डायरी से' और 'किताबों से दोस्ती' रोचक स्तम्भ लगे।

अरुण शंकर राय, ज़िला वाराणसी, उत्तर प्रदेश

समावेशन पर अधिक जानने की उत्सुकता बढ़ी

पाठशाला भीतर और बाहर पत्रिका का समावेशी शिक्षा विशेषांक पढ़ा। इसे पढ़ने के बाद मेरी समझ में काफ़ी इज़ाफ़ा हुआ है। इसको पढ़ने के बाद कई नई बातें जानीं। इस तरह के विषयों पर इतनी आसान भाषा में ज़्यादा बात नहीं होती है। आर लालमाछुआनी के लेख को पढ़कर इस विषय पर और अधिक जानने की उत्सुकता बढ़ी।

चेतना गोला, कार्यक्रम निर्माता, राष्ट्रीय दृष्टि दिव्यांगजन सशक्तिकरण संस्थान, ज़िला देहरादून, उत्तराखण्ड

कला के बारे में अपनी समझ को फिर से समझने की ज़रूरत महसूस हुई

मुझे *पाठशाला* के दिसम्बर 2024 अंक में दीपिका शर्मा का लेख 'कलाओं को समावेशी बनाने में शिक्षक की भूमिका' पढ़कर कला के प्रति अपनी समझ की फिर से पड़ताल करने की ज़रूरत महसूस हुई। मैंने पाया कि हमारी कक्षाओं में कला केवल चित्र बनाने या कुछ चित्रों में रंग भरने मात्र तक ही सीमित है। इस लेख में कला के समावेशी रूप और बच्चों को कला के सामूहिक क्रियाकलापों में शामिल करने के तरीक़ों और बारीक़ियों के बारे में विस्तार से बताया गया है। इससे यह लेख बेहद उपयोगी हो गया है।

लकी सिंह, सहायक अध्यापक, कम्पोजिट स्कूल जद्दापुर, ज़िला बलरामपुर, उत्तर प्रदेश

शिक्षक बच्चों की समस्याएँ समझें और उनकी मदद करें

पाठशाला के अंक 22 में जयना जगानी और रीमा कौर के आलेख 'समावेशी पद्धतियों की दिशा में कुछ छोटे-छोटे क़दम' में हर्षिता और मयूर की कहानियों को पढ़कर लगा कि शिक्षिका श्रीमती अनीता और बबीता ने दोनों बच्चों की ज़रूरतों को समझा और सीखने में शामिल होने में उनकी मदद की। सीखने का यह पहलू मेरे लिए इस सन्दर्भ में बहुत उपयोगी है क्योंकि मेरी कक्षा में भी 2 ऐसे बच्चे हैं जो लिखने-पढ़ने में बिल्कुल शामिल नहीं होते, और कक्षा में सुस्त बैठे रहते हैं। मैं उन दोनों बच्चों को लेकर परेशान होती रहती हूँ। यह आलेख पढ़कर समझ में आया कि ऐसे बच्चों को कक्षा में सीखने के लिए शामिल करने का यह पहलू महत्त्वपूर्ण है कि शिक्षक बच्चों की समस्याओं को बारे में समझें और ज़रूरत के मुताबिक़ उनकी मदद करें। समावेशन सिर्फ़ किसी मानसिक या शारीरिक रूप से अक्षम बच्चे का नहीं होता। कक्षा में बहुत सारी ऐसी प्रक्रियाओं पर ग़ौर करने की ज़रूरत होती है जो किसी भी बच्चे के कक्षा में शामिल होने में रुकावट बनती हैं।

समसुननिशा, शासकीय प्राथमिक शाला तिलक नगर गुड़ियारी, धरसींवाँ (रायपुर शहरी), ज़िला रायपुर, छत्तीसगढ़

समावेशन : भावनात्मक स्तर पर समझने की कोशिश

पाठशाला भीतर और बाहर का समावेशी शिक्षा विशेषांक मिला। सॉफ्ट कॉपी पढ़ने में थोड़ी दिक़्क़त तो हुई, लेकिन यह इतने ज़रूरी विषय पर और इतने बेहतर तरीक़े से संयोजित था कि पढ़ते जाने के अलावा कोई विकल्प नहीं था। ममता सिंह, दीपिका झाला, जयना जगानी एवं रीमा कौर के आलेख अच्छे लगे जिनमें समावेशन को भावनात्मक स्तर पर समझने की कोशिश की गई है, वरना हम अकसर भौतिक स्तर पर ही इसे निपटा देते हैं। 'उम्मीद जगाते शिक्षक', 'शिक्षकों की डायरी से' और गतिविधियों वाला 'आइए, करके देखें' स्तम्भ सार्थक कोशिश के रूप में इस पत्रिका को एक ख़ास पहचान दे रहे हैं।

शशांक शेखर, आदर्श उच्च विद्यालय बढ़ूपर, ज़िला कैमूर, बिहार

लेखकों के लिए

1. लेख वर्ड फ़ाइल में ही भेजें जिसमें कोई डिज़ाइन, बॉर्डर, बॉक्स, आदि न हों। लेख पीडीएफ़ में न भेजें।
2. लेख से सम्बन्धित तस्वीरें या कोई अन्य विज़ुअल अच्छी क्वालिटी का हो, और उसे वर्ड फ़ाइल में लगाकर भेजने की बजाय अलग से अटैच करके भेजें। तस्वीर को image 1, image 2 के नाम से सेव करके भेजें, और लेख में लिख दें कि कहाँ पर आपको लगता है कौन-सी तस्वीर लगनी चाहिए। हालाँकि, इस बारे में अन्तिम निर्णय सम्पादकीय टीम का होगा।
3. तस्वीर का सोर्स ज़रूर बताएँ। कॉपीराइट का ध्यान रखें कि तस्वीर या तो कॉपीराइट फ़्री हो, या जहाँ से ली गई है वहाँ से अनुमति ली गई हो, या आभार व्यक्त किया गया हो। अगर तस्वीर आपने ख़ुद ली है तो वह भी बताएँ, और तस्वीर लेते समय, स्कूल या क्लासरूम से इजाज़त ज़रूर लें।
4. बच्चों की तस्वीरें बिल्कुल न लें, ख़ासकर ऐसी तस्वीरें जिनमें उनका चेहरा स्पष्ट हो।
5. लेख में जब भी किसी किताब का अंश, लेख का अंश, किसी लेखक के उद्धरण (quote) इस्तेमाल में लाएँ, कृपया उनका उल्लेख ज़रूर करें, और क्रेडिट दें।
6. अपने लेख के साथ अपना संक्षिप्त परिचय, एक फ़ोटो जिसमें आपका चेहरा सामने से स्पष्ट और क्लोज़ हो, मोबाइल नम्बर, पूरा पता, और ईमेल आईडी भी दें।
7. जो भी लेख आप *पाठशाला* के लिए भेज रहे हैं, यह बहुत ज़रूरी है कि उसे न तो कहीं और भेजा गया हो न ही सोशल मीडिया पर साझा किया गया हो।
8. लेख मिलने पर आपको लेख के मिलने की सूचना तुरन्त दी जाएगी, और 30 दिन के अन्दर लेख की स्वीकृति या अस्वीकृति, या उसमें सुधार के सम्बन्ध में सूचना प्रेषित की जाएगी।
9. पत्रिका में लेखों की तीन श्रेणियाँ हैं। पहली श्रेणी में लेख 2000 शब्दों का, दूसरी में 1500 शब्दों, और तीसरी श्रेणी में यह 700 से 1000 शब्दों का होगा।
10. सम्पादकीय टीम को लेख में सम्पादन का अधिकार होगा। ज़रूरी सम्पादन के बाद आपको लेख भेजा जाएगा।
11. *पाठशाला* अब हिन्दी के अतिरिक्त अँग्रेज़ी और कन्नड़ में भी प्रकाशित होगी। माने, आप तीनों में से किसी भी भाषा में लेख भेज सकते हैं। लेख भेजने का आईडी है : pathshala@apu.edu.in
12. आपने जिस भी मौलिक भाषा में लेख भेजा है, अनुवाद होकर तीनों भाषाओं में प्रकाशित होगा। इसका अधिकार सम्पादकीय टीम को होगा।

किसी भी तरह की अन्य जानकारी के लिए आप सम्पर्क कर सकते हैं–
प्रतिभा (हिन्दी) : pratibha.katiyar@azimpremjifoundation.org
शेफ़ाली (अँग्रेज़ी) : shefali.mehta@apu.edu.in
राघवेंद्र हेर्ले (कन्नड़) : Raghavendra.herle@azimpremjifoundation.org

अज़ीम प्रेमजी यूनिवर्सिटी की ओर से रजिस्ट्रार शरद सुरे द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित। सर्वे नम्बर 66, बुरुगुंटे गाँव, बिक्कनाहल्ली मेन रोड, सरजापुरा, बेंगलूरु, कर्नाटक-562125। लक्ष्मी मुद्रणालय, क्रमांक 117, 5वीं मुख्य सड़क, चामराजपेट, बेंगलूरु, कर्नाटक-560018 द्वारा मुद्रित।

मुख्य सम्पादक : प्रतिभा कटियार

फॉर्म 4

1. **प्रकाशन का नाम** : पाठशाला भीतर और बाहर

2. **प्रकाशन का स्थान** : अज़ीम प्रेमजी यूनिवर्सिटी, सर्वे नम्बर 66, बुरुगुंटे गाँव, बिकनाहल्ली मेन रोड, सरजापुरा, बेंगलूरु, कर्नाटक-562125

3. **प्रकाशन की नियत अवधि** : तिमाही

4. **मुद्रक एवं प्रकाशक का नाम** : शरद सुरे (रजिस्ट्रार, अज़ीम प्रेमजी यूनिवर्सिटी, बेंगलूरु)
   राष्ट्रीयता : भारतीय
   पता : अज़ीम प्रेमजी यूनिवर्सिटी, सर्वे नम्बर 66, बुरुगुंटे गाँव, बिकनाहल्ली मेन रोड, सरजापुरा, बेंगलूरु, कर्नाटक-562125

5. **मुख्य सम्पादक का नाम** : प्रतिभा कटियार
   राष्ट्रीयता : भारतीय
   पता : अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन, आमवाला तरला, सहस्रधारा रोड, देहरादून, उत्तराखण्ड-248001

6. **स्वामित्व** : अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन
   पता : #134, डूड्डाकन्नेल्ली, विप्रो कॉर्पोरेट ऑफ़िस के पास, सरजापुर रोड, बेंगलूरु, कर्नाटक-560035

मैं शरद सुरे घोषणा करता हूँ कि मेरी अधिकतम जानकारी और विश्वास के अनुसार ऊपर दिए गए विवरण सत्य हैं।

तारीख : 3 मार्च, 2025

प्रकाशक के हस्ताक्षर
(नाम : शरद सुरे)

Azim Premji University

Anuvada Sampada

अनुवाद सम्पदा

अज़ीम प्रेमजी यूनिवर्सिटी की अनुवाद रिपॉजेटरी

विद्यार्थियों और शिक्षकों के लिए भारतीय भाषाओं में उच्च गुणवत्ता वाले शैक्षणिक संसाधनों का भण्डार।

नि:शुल्क, ओपन-एक्सेस पोर्टल

- पुस्तकें और पुस्तकों के अंश
- अज़ीम प्रेमजी यूनिवर्सिटी प्रकाशनों के लेख
- विभिन्न स्रोतों से चयनित लेख

अनुवाद सम्पदा पर आएँ
https://anuvadasampada.azimpremjiuniversity.edu.in/

यहाँ स्कैन करे

Azim Premji University

अज़ीम प्रेमजी यूनिवर्सिटी की पत्रिकाएँ

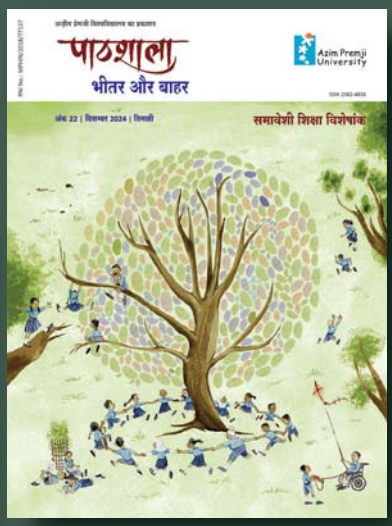

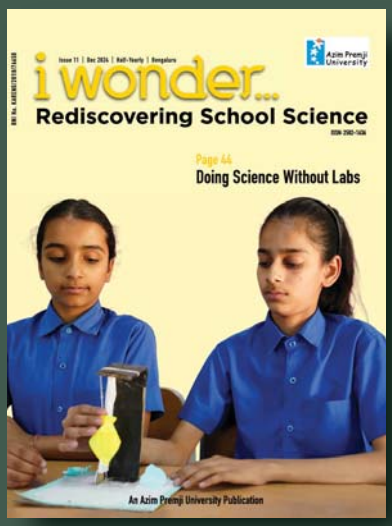

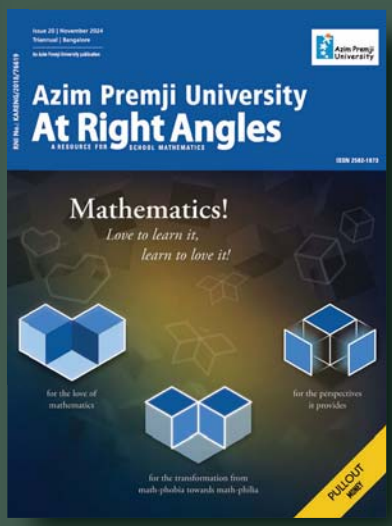

पाठशाला की निःशुल्क सदस्यता के लिए क्यूआर कोड स्कैन करें

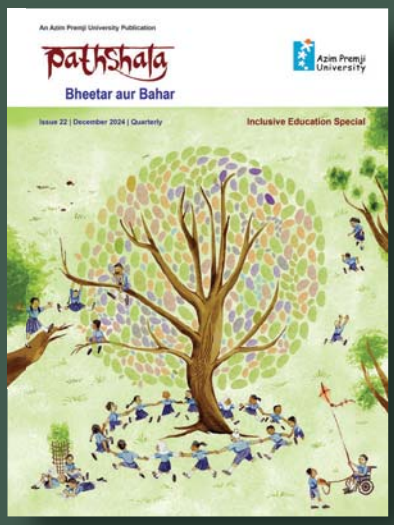

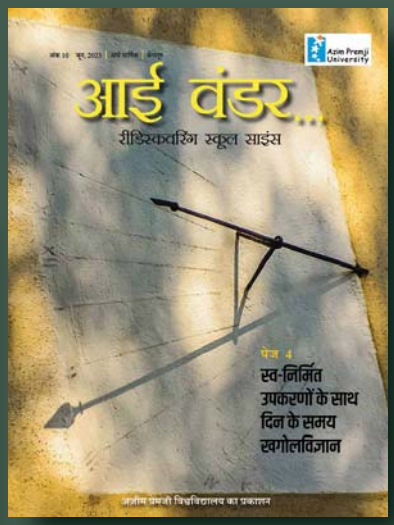

अन्य प्रकाशनों के बारे में अधिक जानने के लिए हमें लिखें - publications@apu.edu.in